



अहम्

मुनिश्री मोहनलालजी जैन ग्रन्थमाला नं. ९

श्री सोमसूरीश्वरत्रिरचित

पर्यन्त आराधना

तथा

नवपद आराधना विधि.

सशोधक,

जैनशिल्पज्योतिषविद्यामहोदयि श्रीमान्

जैनाचार्यश्रीजयसुरीश्वरजी के

शिष्य

प्रतापमुनि

प्रकाशक — श्री पचमसिद्ध घोहरा

मन्त्री मुनिश्री मोहनलालजी जैनग्रन्थमाला

इशर सिटी ( मालवा )

वीर स २४५६

मूल्य आठ आना

---

---

प्रकाशक — श्री पचमसिंह योहरा  
मन्त्री मुनिश्री मोहनलालजा जैनप्रबन्धभाग  
मु हदोर सिटी ( माया )

मुद्रक — लक्ष्मण भाऊराय कोकाटे, हनुमान प्रेस  
३०० सदाशिव पेठ, पुना सिटी

---

---



विश्वत्रय परमपूज्य प्रातः स्मरणीय  
मुनिमहाराज—श्री मोहनलालजी महाराज

मालायान प्रेस, पुणे



## अहम् प्रस्तावना.

आ प्रथमा मुन्य वे निमाग रा खवामा आया छे, तेमा प्रथमविभागमे सोमसूगिविचिंत पर्यन्त आगधना ( अन्त समयनी आराधना ) बीना भागमा नमपद मण्डल पूजनविधि ( नमपद ओलिनी विधि ) तेमा प्रथम प्रथ मूल प्राकृत भागमा टत्वामहित नी एक हस्त लेखित प्रत न १ जैनशिल्पचोतिप्रियामहोदयि श्रीमान् जैनाचार्य श्री जैनमूर्तिश्वरनी महाराज आ ना पामे जोनामा आवी, अने ते लोकोपयोगी होना थी गुजरानी भागमा शुद्ध सशोभन करी छपामा आगी, तेना दशद्वार तथा वारीश अत्रक्ष्य वनिश अनत काय प्राकृत भागमा ज छे तेनु यथार्थ सशोभन करामा आयु छे, ते वाचको समक्ष रजुकवामा आवे छे

ससार सागररूपी महान् भयकर आग्नीमा अथडाता प्राणिओने आ ग्रन्थ पोताना जिदगिना छेडा मुधि शाति पमाडे तेना लदेशवी लखि जैन प्राकृत साहित्यमा मोगे प्रचार कर्यो छे वाचको ! जरूर ग्रन्थनु अध्ययन कर्यो पछे पोते पोतानी जिदगिमा करेळ पापने हवे पछी पाप नहीं करवानी प्रतिना अभिग्रह करे छे ग्रन्थना अध्ययन पछे वाचकोने अत्रक्ष्य ध्यानमा आशे हू कोण ! मारु शु कर्तव्य ! मारो धर्म क्यो ! मारे शु करवानु शु करू छू इत्यादिक विचारो जरूर तेना आमामा स्फुरि आशे जेथा मव्यामा ओपोताना समस्त जीवननो सुधारो करी शके तेना हेतुथी सूर्गश्वरे लखेळ छे

ध्यानमा राखबु पर्यन्त आराधना—अन्ति आराधना समाधि मरण कोनु धै शके तथा पोतानु समाधि मरण केम—वाय तेना माटे केवोकेवे प्रयन करवो ते आ प्रथमाथी जे शाखवानु मली आवे छे

अठार पापस्थानरुनो त्याग, अग्निहतादिश् चार शरणु नु शरण, आठ श्रुतिचारनी अठोचना, चिन प्रणिमापूजन विधिमा आशातना, पंचेडिय जीवेनो नाग, देवता मनुष्य त्रियचाटि साथे भोगविग्राम, नवविश पति ग्रहना उपरे ममत्व भाव, रात्रि मोहन, बह्य अम्यत्त तप, वाग्वा, समस्तानाशेनी साथे वैष्णव ध्येय होप ते, चात्रिश अतिगय युक्त त्रिपरनी आगतना, आठ मदनी मद्रता, विगेरेमा लगत पापनी आगे चना, आममाथी-गुरुमाक्षी ए छेना प्रपत्तार भग मण करे छे तथा अन्तिमममयमा अग्निहतादिश् पचपरमेष्टि तत्र चार शरणु शरण कर ता पोने पोताना पापवृत्ति थी पाटा हटवा प्रयत्न करे छे - आर्गा रीने आ गन्धमा अनेक त्रिययो भा समावेश करामा आवा छे - अन्तमम ना पोताना समस्त जीवनेने अराधक बने आ पयत्त आगपना मात्र अन्त समयेन आरागमानु छे तेम नहा परतु रीन आनु स्मरण करामा पोताना मरिष्य समयेने मुर्गी शके छे तथा रीन पापनो पधात्ताप धवाधी ते पोताना कर्मानो नाश करे छे माटे भव्याना ओ निरत्तर आनु आगपन करामी पोने शुभ गी ने प्रान्त थाय छे

था प्रथमा बीजो विभाग नवपद जोयनी विधि ने ल्यागी सम्पूर्ण क्रिया बतायेग छे जोके नवपद ओगनी विधिना पुस्तको घणी सम्था जो तरफदा प्रकाशित थयेग छे परतु आ प्रथमा राम विशेषता नचे पडगे नवपदनु प्यानकठनार विधिपूर्वक चो क्रिया करे तो ते पण श्रावाठ महागचना माफक महान् भयकर गगोनी नाश कराने छेष्ट गपवृद्धि उभी विद्धि पण प्राप्तकर्ग शके छे आजकाए पण उट्टप विधिपूर्वक गुरुममुप क्रिया करना वाञ्छित सुखने प्राप्तकरेठ दृष्टिगोवर थाय छे आज काठ नवपदनु आरागन करतु गवाने सहए व गयु छे कारण गात्रनारो ए करेए विधि प्रमाणे विधि अनुक्रममा थली नगी तेनी फल प्राप्ति मार्गमा बरोवर देखत तो नया प्रथम विधिपूर्वक आरागनो ए

आयविउ केम करु ? कारणे आभिउमा घणान प्रकाय येउया टग्याय उ आनरुठ आभिउमा लोको फक्त मिग्यादिको त्याग तया हउरु लोवेग, हिंग मरुचु न तयाय परतु गाम्भिरु आम नदी कारणे आ विउमा तो नयद आरायक भव्यामा ओ पोताना कयने अन्त पोचाउया नयदने जे ते उर्थ रग होय ते प्रमाणे ते निरस्त फक्त धाननु आभिउ करु उचिा टे परतु आभिउनी ओडी आ प्रमाणे न थानी होतया लोकोने यकार्य लाभ जे प्रमाणे मउयो चोट तेने मउतो नथी तया आ तपनी सम्पूर्ण जिया गुण समुग्र जाती नथा माटे न लाभ सम्पूर्ण मउयी शरुतो नथी

वीममा तार्थकरु मुनिमुत्र नयान ना समयमा धरेउा मुनि मुत्र सुगधरनाण थाराठ मगाजने नयमा पूर्वमाया उधार करुठ मिद्वरुठ नयद यत्तना आरायन विधि बयारा अने ते यन्त्रनी समुग्र गारा मगाजनाण जिया कग तेजा तेमना मनोरामना पुर्णर तथा साये मा- देशविदेशमा विचयने प्राण कर्या —

मात्र नयदना जागशकोण आ मिद्वरुठ यन्त्रने समुग्र रागी त्रिया करी जेजा अयय तेमनी अभिउया उर्थयामे तथा यन्त्रनी पुनारिधि आगहन, रिसजन, पूजन विधि ममस्तानो समायेग आम कय्याम जावेउ टे मोगनामाया विरुत्तियो नाग करनार आजगाठ मिद्वरुठ नयद यन्त्रनी योगर कोइ वस्तु नया माटे हमेशा आ यन्त्रनु आरायन कय्या पोपोताना सुग्रमय जीवन निराहमा विन नथी उपस्थित थाय माटे कय्याजोओ जे नयदनु ध्यान निरन्तर कय्या हेवु इति ।

वीर २४५६ }  
जेष्ट शु० ५ }  
जुनेर }

प्रतापमुनि.

१ आ मिद्वरुठ नयद यन्त्र आ मस्था तरपधी थागत दिग्गमां तात रगीवी भरपूर घने वयार पन्धे माटे योग करतारा ओण लाभ लवा सुकनु नहि





अहंम  
श्रीमज्जैनाचार्य धीजपसूरिगुरुभ्योनम

श्रीसोमसूरिप्रित्त

पर्यन्त-आराधना



नमिउण भणइ एव भयन समभोचिभ समाससु ।

ततो वागरइ गुरु पज्जना-राहणा एव ॥ १ ॥

अण लोकना अधिपति परमात्मने नमस्कार करीजे सम्पत्तिवु  
तत् फाट; पयत्त आराधना गुरुमहासजे जे प्रमाण कहउ छ न  
प्रमाणे कहु छे ॥ १ ॥

आला इअ सुइयाये वायाइचारि सुदम सुजायेसु ।

वेसिभिमु भाधि अप्पा अटारसपावगणाइ ॥ २ ॥

लिधेला मनोमा लागेल पापनी आलोचना-इयं गग सुम  
जीयने हणवाथी तथा अटार पापस्थानसो प्राणातिपन, मृगवाद,  
अदादान, मैथुन, परिग्रह, शोध, मान, माया, छेन, गग, इय,  
कलह, अभ्यायान, पेशूय, रति, भरति, मायाकवद व सुवगा  
लागेल पापने वेसिराउछे ॥ २ ॥

चउसरण बुद्धउगरहर्ण चसुफडाणुमा कर्ण कृणु ।

सुहभाउण अणसण पयनमुकारस्वरण इ ॥ ३ ॥

चार सरणा, अरिहत्त सरण, सिद्धसणे, सुधुमण, केवल  
भगवाने कहेलधर्म सरण, मा लागेल पापनी निह दद, तथा सुव  
सार कामनी अनुमोदन करु, शुभमणन इस्मण, तथा प  
परमणिने नमस्कार पूर्वक सरणु छेउ छ ॥ ३ ॥

नाणमि अद्वयणमिम अरणादि धर्मि नहय विरुद्धि  
पचविहे आयाये अइयाये लायण कृणु ॥ ३ ॥



ज्ञानाचार, दशनाचार, चारित्र्याचार, तपाचार वियाचार, आ पा  
प्रकारना आचारने विशेषे जे कोइ पाप लाग्यु होय तेनी हु आलोचन  
कर हु मिच्छामि दुकड द्यु छु ॥ ४ ॥

काले विनयाइ अठपयाय आयागविरहित नाण ॥  
ज मिचि मय पढिअ मिच्छामि दुकड तस्स ॥ ॥

कालविनयादिक आठ प्रकार जेम का समयमा ज्ञान भण्य  
गण्यो तथा तेनी परावर्तना करी नहीं, तथा काल समयने छोडी  
अकाल समयमा भण्यो, विनयथी रहित, बहुमानवी रहित, याग  
पधानथी रहित, तथा जेनी पास भण्यो होय ते गुरुनु नाम लेर्पी  
धीजा गुरुनु नाम कह्यु, देवचन्दन, गुरुचन्दन, पतिप्रमण, त  
स्वाध्याय करता, भणता, गणता कुट अक्षर कानो मात्र आग  
पाउल ओछा घघारे कह्यो भण्यो-तथा गण्यो, सूत्र अथ ते  
कुटा कथा त सर्वधि तथा आचारथी रहित गान-मति ज्ञान थु  
ज्ञान भयावे ज्ञान, मनपर्यवज्ञान रेचलज्ञान ण पाच प्रकारना ज्ञान  
मे ज काइ क्यु हाय निदामरि हाय ता हु मिच्छामि दुक  
दु छु ॥ ५ ॥

नार्णण ज नदिश सदसामथ मिवथ अमणाइ ।  
जाविहि आय जग्ना मिच्छामि दुकड तस्स ॥ ६ ॥

छनी शक्तिर ज्ञानी पुरुषोने बख अन्न आदि नदीधा तथा न  
आगतना अवश-करी होय ता हु मिच्छामि दुकड द्यु छु ॥ ६ ॥

ज पचभेव नाणस्स निदण ज इमस्स उवहान्ता ।  
जोयको जग्नाड मिच्छामि दुकड तस्स ॥ ७ ॥

मतिज्ञान, धृतज्ञान, अत्रधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान अने रेचलज्ञान,  
पाच प्रकारना ज्ञाननी निदा करी होय तथा तेनी हासी कीधि हा  
तना नाशान्या होय तो हु मिच्छामि दुकड द्यु छु ॥ ७ ॥

नाणो पगरण भूयाण कालियाफल्य पुथपाईण ।  
आत्मत्यण कयाज मिच्छामि दुकड तस्स ॥ ८ ॥

ज्ञानतो पगरण सुगधी कवरी मारी जेरी कवरी

स्नायदा, सायडी दफतर, यही, कागलिया आकणी, पुस्तर आदि नी  
ज काइ भाशातना करी होय त मिच्छामि दुकड दनु छु ॥ ८ ॥

ज सम्मत निस्सक्रियाइ अग्रविह गुणसमाउत्त ।

धरिय मण न सम्म मिच्छामिदुकड तस्म ॥ ९ ॥

ज जाठ प्रफारना सम्यक्चने निशकपणे नथाया हाय ते हु मिच्छामि  
दुकड दनु छु ॥ ९ ॥

ज न जाणिआ निणाण निणपडिमाण च भावपूजा ।

ज च असत्तिइ विहिया मिच्छामि दुकड तस्म ॥ १० ॥

जिनेश्वर भगवाननी तथा जिनप्रतिमानी भावपूजा न करी हाय,  
तथा तमा अशक्ति धरि होय, तो हु मिच्छामि दुकड दनु छु ॥ १० ॥

ज विग्घो विणासो चद अद-यस्स ज विणासतो ।

असो उरगियअसो मिच्छामि दुकड तस्म ॥ ११ ॥

चय द्रव्यना-तया तनी पूजानो विनाश विधो हाय, तथा तेमा  
उपेना युक्ति धारण करी होय ते हु मिच्छामि दुकड दनु छु ॥ ११ ॥

आसायण कृण ता ज कहवि विणिद मदिगइसु ।

सत्तिण न निस्सिद्धो मिच्छामि दुकड तस्म ॥ १२ ॥

ज फोइ पण जिनेश्वर भगवानना मणिनी भाशातनान करना  
हाय तथा तने आपणी छति शक्तिर नियेच न कार्यो हाय तो हु  
मिच्छामि दुकड दनु छु ॥ १२ ॥

ज पचहि ममी षडि तिहि गुतिहि मगय सयय ।

पणि पात्थि न चरण मिच्छामि दुकड तस्म ॥ १३ ॥

ज पाचसमिती-र्या समिति भावत्समिति धयणात्समिति आत्ता  
नभडमानिउपणात्समिति, उचारपासप्रगयेत्तत्समिच्छाणापारिष्टा  
पानिका समिति, तथा प्रणगुत्ति, मनागुत्ति, वचनगुत्ति, कायगुत्ति,  
महेत निरतर चारित्र धरायण पाल्यु नहाय ते हु मिच्छामि  
दुकड दनु छु ॥ १४ ॥

परिगिन्याण ज महवि पुढवि उत्तरवण मारु अतरुण ।

निद्याण चहोपिहे जो मिच्छामि दुकड तस्म ॥ १५ ॥

ज फोह एकद्रियादिक जीव, पृथ्वी काय भू काय, तेवु काय, वायुकाय घनस्पर्श कायनो घघ-नाश कर्यो होय ते हु मिच्छामि दुकड वसु छु

विमिसजसुत्तिपूभर जलो अ गडोलयाल सम्पमुहा ।

अ इन्द्रियाइ ह्याज मिच्छामि दुकड तस्स ॥ १५ ॥

कीडा, सब, छीप, पुग, जलो, गडोला अलसिया प्रमुख, ये इन्द्रिय जीवोने जेहण्या होय-चाप्या होय ते हु मिच्छामि दुकड वसु छु ॥ १६ ॥

गदह पुथु जुभा मकुण मकोडकीडिया इया ।

ते इन्द्रियाइ ह्याज मिच्छामि दुकड तस्स ॥ १६ ॥

गदैया पुथुभा, माकड, मकोडा, कीडाआदि तेंद्रिय जीवोने हण्या होय ते हु मिच्छामि दुकड वसु छु ॥ १७ ॥

कोलि धकुत्ति अरिच्छु मछिआ नसलह छप्य प्पमुहा ।

अ उरिन्द्रियाइ ह्याज मिच्छामि दुकड तस्स ॥ १७ ॥

करोलिया, कुत्ति, कम्बारी, चिट्टु, माखी, तीड, भमरा, प्रमुख चारोन्द्रिय जीवोने जेहण्या होय ते हु मिच्छामि दुकड वसु छु ॥ १७ ॥

जलयर थलयर खयरा आउट्टिपमायदप्पक्कप्पसु ।

अ उरिन्द्रियाइ ह्याज मिच्छामि दुकड तस्स ॥ १८ ॥

जलयर, थलयर, खेचर, जीवोने, प्रमादधी दर्पथी पबेंद्रिय जीवोने हण्याहोय ते हु मिच्छामि दुकड वसु छु ॥ १८ ॥

अ फोहलोह भयहास परवनेण मए विमूहेण ।

भासि अमसच्चवयण त निदे तच्च गरिहामि ॥ १९ ॥

अ मोघ, लोभ, भय, हास्य, थी तथा अज्ञानतायी, असत्य चचन बो-या होयते हु निदुद्धु गर्हु छु ॥ १९ ॥

अ कथड घावडेण मए परच विउणओघम्पि ।

गहि अधण अदिघ्न त निदे तच्च गरिहामि ॥ २० ॥

अ कपाट्यापरधी, मे थोहपण लिधनु धन नदिधु होयते हु निदुद्धु गर्हु छु ॥ २० ॥

दिव्य वा माणुम्स वा निरिज्जया सपगद्वियणं ।

ज मेहुण मापणिय त निदे तच्च गरिहामि ॥ २१ ॥

देवता मनुष्य तिर्यचनो रागयी भोग कर्यो होय मैथुनसेषु होय  
तेने हु निंदु छु तथा गहु छु ॥ २१ ॥

ज घण्ण घन्न सुवण्ण प्पमुद्धमि परिगाहेयि नच विरहेवि ।

विहिया सम्मत भानो त निदे तच्च गरिहामि ॥ २२ ॥

जे घनघाय सोनु, रुनु प्रमुग्य नरणिउ परिग्रह, न निरा  
ममवमान किधो होपते हु मिच्छामि दुक्कड वधु छु ॥ २२ ॥

ज राहमोमण विरणमारि नियमेसु विरिह रुवेसु ।

एमि ममहसं जाय तं निदे तच्च गरिहामि ॥ २३ ॥

जे रात्री भोजन विरमण वत, नियनेविये विधिध-अनेक प्रकारना  
जे काइ दोष लाग्या होय ते हु निंदाकरु छु तथागर्हाकरुछु

वदिरमत्तितग्य तत्र दुयालस विह जिणुदिठ्ठ ।

जं सत्तिउ न कथे त निदे तच्च गरिहामि ॥ २४ ॥

छ पाहा, छ अभ्यतर, तप धारभेदे जे जित्नेश्वर भगवाने कहल छे  
ते छति शक्तिण न कर्यु-ना तेनी हु निंदा करु छु तथा गर्ह हु ॥ २४ ॥

जोगेसु मुअ पहसागहेसु जं धीरियं नय पउत्त

मणनाया कायहि त निदे तच्च गरिहामि ॥ २५ ॥

मोक्षमार्ग साधवाना मटे पोतानी छति शक्तिण मन वचन फाया  
थी उपयोग न कर्या होय तो तेनी हु निंदाकरु छु गर्ह छु ॥

प्रथम द्वार समाप्त

### अथ बीजु द्वार

पाणार वाइ विरमण पमुदात्तु मंदुवाउ सववाई ।

सम्मं परि भायवतो भणम जहा गहिम भगारि ॥ २६ ॥

प्राणातिपात विरमण वत, स्थूलथी स्थुलमृपापाद, स्थूल भद  
त्तादान, स्थुल मैथुन, स्थुल परिग्रह, दिगवत, भोगोपभोग वत,  
अनथ दण्डवत, सामायकवत, देशायगामिकवत, पोषधवन,

अतिथि सत्रिभागघ्नत प्रमुप धारघ्नतनी सम्यक् प्रशारे भावना  
भायता म जे ऋद्धत भाग्या ह्यते संघर्षी हु मिच्छामि दुस्सुद्ध  
दुष्टुं

वीनु द्वार समाप्त

अथ तीनु द्वार

खामे सु सत्सत्त एमेसुतानितुम विगय वीरो ।

पगिह्वरि ऋषुश्वरो सत्रमिच्छित्ति चित्तसु ॥ २७ ॥

ममस्त प्राणियोनी साथे मैत्रि भावने करता-विचारतो समस्त  
जीवो ने खमाबुद्ध तथा धैरभावनी त्याग करी कापरहित खमूँई,

विजु द्वार समाप्त ॥

अथ चोषु द्वार

पाणाद्वायमलिय चोरिक मेदुण दविणमुच्छ ।

कोह माण माया लद्ध पिच्च तहा रोमै ॥ २८ ॥

कलह अमलाण्ह पमुक्ष रड अग्द समाउत्त

पग्पगिधाय माया मोस्त मिच्छत्त सल्लय ॥ २९ ॥

धोसिरित्तु इमाह मुग्गमग्ग मग्गम विग्घभू आह ।

दुग्गाह निवघणाह आठारस पावट्टाणाह ॥ ३० ॥

प्राणातिपात शृयात्राद, आदत्तादान, मेधुन, परिग्रह तथा तने  
मूच्छा मात्र मान, माया, रोम, राग, द्वेष कलह, अभ्याख्यान, पैतृ  
रति वरति, परिपरिग्रह माया शृयात्राद, मिथ्यात्व शरर, वा वध  
मेल्पमागना विश विघ्न करनार होवार्थी, तथा वा आठार पा  
स्थानदुर्गतितना मार्गने पौचाडनाह होवार्थी तने हु धेनि रा  
छु ॥ २८-२९-३०

चोषु द्वार समाप्त ।

## अथ पाचमु द्वार

चउत्तसि अइसय जुआ अठमहापाडिहर काय साहा ।

निअयरा गयमोहा झाए अया पयत्तण ॥ ३१ ॥

चातिम अनिदाय वड युक्त तथा अष्टमहापाति हार्यथी शोभायमा  
न रागद्वेषमी रहित एया निर्यमग्नु यनपूरर ध्यान करे तु ॥ ३१ ॥

चउत्तोस अइसयजुआ अठमहापाडिहेरपडि पुत्रा ।

सुगमिहिय समअमरणा अग्निहता त मुग्ग सरण ॥ ३२ ॥

चोतीम अनिदायथी युक्त, अष्टमहा प्रातिहायथी शोभायमान,  
प्वना नु रवेए समअमरणा विराचेल पथा अग्निहत भगवानु  
सरण हो ॥ ३२ ॥

चउविस्माय चत्ता चउवयणा चउपयार धम्मरुहा

चउगइदुहनिहलणा अग्निहता मुग्गते सरण ॥ ३३ ॥

क्रोध मान, माया, गेम, ए चारअपायनो त्याग करनार, चार,  
मुखे चार प्रकारना ' दान, शील, तप भायना, धम ने कहनारा  
तथा देव, मनुष्य नियच नरक ए चार गतिनो नाशकरनारा एया  
अग्निहत भगवानु सरण हो ॥ ३३ ॥

जे अट्टकम्म मुक्का वर केएल नाणमुणि अपरम था ।

अठमय ठाण रहिया अग्निहता मुग्गते सरण ॥ ३४ ॥

ज आठ कमना त्याग थी श्रेष्ठ केएल ज्ञानजाठा तथा आठ मदनो  
त्याग करनार एया अग्निहतनु सरण हो ॥ ३४ ॥

मअन्वित्ते अरुहता भाआरिप्पहणणेण अग्निहता ।

जे तिजग पूआणेज्जा अग्निहता मुग्गते सरण ॥ ३५ ॥

ससारणी क्षेत्रमा अणुअणरना (समारमा आआगमन निवारक)  
तथा अतरग शत्रु ओने नाशकरनाग अण जगतना पूजानिक अग्निहत  
भगवानु सरण हो ।

तरिउण भवसमुह रउइदुइए हरि लम्ब वृहत्थं ।

जे सिद्धि मुह पत्ता ते सिद्धा हु तुमे सरण ॥ ३६ ॥

ससारणी समुद्रन तगर, भयकर दुख रुपी लाखो



लहरियाने ओलंघान-जे त्विद्धि गगिन पामग एया सिद्धि भगवाननु  
सरण हो ॥ ३६ ॥

जे भानि उण तय मुग्गरेण निपडारं कम्मनिगमारै ।

सपसा मुक्खसुहं ते सिद्धा हं तुमे सरण ॥ ३७ ॥

जे तपरूपी मुद्गयड करी कठिण कम नो नाशकरी, मादसुगत  
पामेला एया सिद्ध भगवाननु सरण हो ॥ ३७ ॥

ज्ञानानलजोगेणं जात्रो निदहु सवल कम्म मलो ।

कणगरंजाण अप्पा ते सिद्धा हं तुमे सरण ॥ ३८ ॥

ज्ञानरूपी तापर्यो समस्त कम मरणा नाशकरी कनक सुयण ना  
जे घो आमा कर्यो छे जेणे एया सिद्ध भगवाननु सरण हो ॥ ३८ ॥

जाण न जम्मो न जरा न घाणिणा न मरण नवाथाह ।

नय कोहाइकसाया ते सिद्धा हं तुमे सरण ॥ ३९ ॥

जेणे जम्म नहीं, घृडा घर्या नहीं, ध्याधि नहीं मरण नहीं कोई  
प्रकारनी बाधा नहीं, तथा मोघ मान माया अने लोभ, ए चार  
कसाय नहीं एया सिद्ध भगवाननु सरण हो ॥ ३९ ॥

काउ मट्टरवीति ते यायालीस दोसपरिसुहं ।

भुजति भत्तपाण ते मुणिणो हं तुमे सरण ॥ ४० ॥

भमरानी माफक वृति भे करता, येतालीस दोषधी रहित शुद्ध  
आहार पार्ष्णीनी गयेपणा करता, एया मुनि महाराज नुं सरण  
हो ॥ ३९ ॥

पचदि अदमणपग निज्जिअ कदव्य सग्यसरा ।

धरनि उभवेरं ते मुणिणो हं तुमे सरण ॥ ४० ॥

पान्ने इंद्रियोतुं दमन करनार, तथा कामदेवरूपी बाणने जितनार,  
तथा ब्रह्म त्रय अतने धारण करनार एया मुनिमहाराजनुं सरण हो ४०

जे पच समिद्धं समिद्धा पचभेहं उभ महं त्रय घसहा ।

पचमगइ अणुरत्ता ते मुणिणो हं तु मे सरण ॥ ४१ ॥

जे ईयासति। भापासामति, एपणासमिति, आवाणभडमतिनिशे  
पणासमिति, उच्चारपासवणजग्मिघाणपारिहापानिजासमिति, आ

पाच समितिथी युक्त, तथा प्राणातिपात मृग्यावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, ए पाच महाभतरूपी धृषभ समान, अने सिद्धमोक्ष गतिमा जाया तत्पर ण्या मुनिमद्वाराजनु सरण हो ॥ ४१ ॥

जे चत्तमयत्संधा समतिण मणिमिस्त सतुणो धीरा ।

साहंति मुक्ख मग्गं ते मुणिणो हं तुमे सरण ॥ ४२ ॥

समस्त संसगना त्याग करनार तूण ( खास ) मणि मित्र शत्रु ने सम समजनार, तथा मोक्षमागने साधनार एवा मुनिराजनु सरणु हो ॥ ४२ ॥

जो केवल नाण दीवायरोद्धि तित्थकरुद्धि पन्नतो ।

सत्तजग जीवहिंय ओ सो धम्मा हाउ मे सरण ॥ ४३ ॥

समस्त जगतना जीयने हित करनार तिथंकर भगवाने कहल जे केवल ज्ञानरूपी धम तेनु मन सरण हो ॥ ४३ ॥

कल्याण कोडी जणणी जत्थ अणत्थाय यधनिट्ठणी ।

धन्तीज्जयी निघद्या सो धम्मो होउ म सरण ॥ ४४ ॥

कल्याण कोटीने माना अहिंसा तथा अनथ यधनन नाश करनार जने जीवद्यानु मूठ जे अहिंसा ते धम माफ सरण हो ॥ ४४ ॥

जे पाषभरकत जीवभीममि कुगइ कुयमि ।

धगेइ नियजमाण मो धम्मे होउमे सरण ॥ ४५ ॥

जे पाषरूपी भारधी आक्रान्त-दया अल एवा भयंकर कुगतिरूप कुशामा पडता प्राणि ओन यचाकरनार धर्मनु सरण हो ॥ ४५ ॥

सग्गापजग्गा पुरमग्गात्त लोयाण सत्थराहो जे ।

भय अडपि सघण गग्गो सो धम्मो हाउ सरण ॥ ४६ ॥

भयग-तथा मोक्षमागने विशेष तत्पर, तथा लज्जमा सार्यवाह समान, जे ससाररूपी अटवी-उल्लस्यवामा समथ- एवाधमनु मने सरण हा ॥ ४६ ॥

## अथ छठुं द्वार

एषचउष्ट सरण पत्रशो निविघ्नवित्ताभत्र चारमाभो ।

ज दुष्कट त्रिभि समरयमोमि निन्दामि सत्रग्नि अह तमिण्ह ५८

चार सरणा लेता, संसारमा भमता अरिहत-प्रभूनी जे काइ निर्दा  
करी होय ते पापने हमणा हु निर्दुष्ट-मिच्छामि दुष्कट त्रु छ

ज इत्य मिच्छिन त्रिमोहिण मयभय तेण कुनित्थ ।

मणेणवात्तलवरण निंदामि सत्रग्निपि अहत मिण्ह ॥ ५९ ॥

जे काइ मिव्या जुटा माह गी, संसारमा कुनित्थि ओ जय लोभोनी  
साथे मोह कर्यो होय, ते मन बचन कायाए करी हमणा त्रु  
निदुष्ट ० ॥

पच्छाइ ओ ज जिणघम्ममग्गो मए कुम्मगा एवड्डीअ आ ज ।

जओ अहं जपरपावडेऊ निंदामि सत्रग्निपि अह तमिण्ह ॥ ० ॥

जिनेश्वर भगवानता मार्गने ढाक्यो होय-निचो होय, तथा स्वयं  
मार्ग बनाव्या होय पाप हेतु तूथी बनाया हाय हे सर्वनी ह हमणा  
निदारू छ ॥ ० ॥

अताणि जं जं कुरुहावहाणि हए उरलामए जयाणि ।

ज पोसिय पावट्टवथ च निंदामि सत्रग्नि अहं तमिण्ह ॥ १ ॥

यत्र कमवी प्राणियाने-दु स दिधु होय तथा हए, उग्यलधी म  
पापम कर्या होय तथा पापमयी कुट्टयन पोइया-रक्षा करी होय,  
ते सर्वनी हमणा हु निरा करु छु ॥ ११ ॥

छठुं द्वार समाप्त ।

## अथ सातमुं द्वार

जिणारिअ भरण पुत्थय सघम्मसरूअहमत्तवित्तिपे ।

जं वपिअ धन्विअ तमह अणुलाएसुत्थय ॥ ५२ ॥

जिन मन्दिर, जिनश्वर भगवाननी प्रतिमा पुस्तक साधुमाध्वी  
धाधर आधिका चतुर्विधसंघ रूप ए सात क्षेत्रने धिये ज धन-  
लक्ष्मी रूपी धाज धायु होय- अथान् आ साते क्षेत्रमा पोतानु

द्रव्य ज खच्यु होय ते सुरत पुन्यत ह अनुमोदना करु छु-प्रदासा  
करु छु ॥ ५० ॥

जं सुद्ध नाण दसन चरणार भवणेणप्यप हाणाइ ।

मम्म मणु यागी आइ तमह अणु मोया सुक्य ॥ ' ३ ॥

जे पुद्ध शान दशन चरित समाररूपी ममुद्रमा जहाज समान  
पास्या होय तेरा सुरत पुन्यती ह अनुमोदन करु छु ॥ ५३ ॥

जिण लिद्धसुग्गि उवज्जाय साहुसाहम्मियण्णयणसु ।

ज विदि थो यहमाणा तमद् अणुमोयण सुक्य ॥ ४ ॥

जिन सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु, मधर्मि, प्रवचन, आगमन  
न प्रिये ज यहमान विधु होय तनी ह अनुमोदना करु छु ॥ ' २ ॥

सामान्य चउविमन्ययाइ आपस्सयम्मि छमेएण ।

ज उज्जम्मिअ मप तमह अणु मोयाए सुक्य ॥ ' ॥

सामान्य, चोविहसथा- धन्दना, पडिक्कमण काउसग्ग, पग्गवा-  
ण ण आपश्यक्कना छ भेदे न ह अनुमोटु छु ॥ ॥

डार मानमु समाप्त ।

### अथ डार आठमु

पुत्रक्यपुत्रपात्राणि सुखदुःखरक्षणकारण लोप ।

नय अणोक्कोप्पिनणो इयमुणित कुणसु सुहभारं ॥ ' १ ॥

आ संसारमा सुखदुःख अपनार पूव भयना पुत्रपाप मिवाय फोइ पण  
जापी शक्तु नथी माट आम समर्जिने सुम भावना भावो ॥ ५६ ॥

पुत्रिदुःखिघ्नाण कम्माण चइयाण ज मुक्खो ।

न पूणा अचइयाण इय मुणित कुणसु सुहभारं । ' ७ ॥

पहिला करेग रागर कर्मो ते भोगया रिना छुटसो नथी, माटे  
तेम समर्जिने- शुभ भावना भावा ॥ ५७ ॥

जं तु मण नर नाग्गण दुक्कति निक्खिअ अतिक्र ।

तत्ता मित्तिपमित्त इयमुणित कुणसु सुह भारं ॥ ' ८ ॥

जेमे नरकमा नारकिना नदि महन फरवा योग्य खदुसखा ते

अपेक्षाए आदु ल थोडाज छे माटे माम समजीने सुभ भावना  
भायो ॥ ' ८ ॥

जेण विणा चारिस्त सुयंत धदाण सीलमधिसव्य ।

कास कुसुम विटल इय गुणिकं कुणसु सुहमापे ॥ ५० ॥

भाव धर चारित्र ज्ञान, तप, दान, शील-ब्रह्मचर्य, आचर्य  
होय तो आकाशमा जेदीरीनेपुल होय ते समजयु अर्थात् आकाश  
शमा पुल न सभशावेरे तेम आर्यु भाव धर निष्कल जाणतु  
आम समजीने शुभ भावना भायो ॥ ' ९ ॥

इति ढार आठमु समाप्त

अथ नवमु ढार

जंजुनिउण वट्टहा सुरसेल समूह पण हितो ।

तित्तिण तण न पत्ता तच्चय सुवउत्थिहार ॥ ६० ॥

मरुपरतना जेटलु भोज क्यु तोपण आर्जियने त्ति न थइ तण  
चतुर्धिय आहारनो त्यागण न कयो आम समजीने चार प्रकार  
आहारनो त्याग करवो ॥ ६० ॥

जा सुलहो जीवाणं सुरनरतिनिनरुगाई च उपक्विवि ।

मुणि उ दूल्हं विरइय त चय सुवउत्थिहार ॥ ६१ ॥

द्वय, मनुष्य, तिर्यक नारकि, आचार गतिमा जीवने आहार सु  
छे तेम जाण्यु, तथा दुल्म विरानेने समजीने पण चार प्रकार  
आहारनो त्याग करवो ॥ ६१ ॥

छज्जीयनिवायधह अक्यापे क्वहपि जाने सभयइ ।

भय ममण दुहाहार त चय सुवउत्थिहार ॥ ६२ ॥

पृथी काय, अप् काय तेक काय, घायु काय, धनस्थाने काय, जस  
काय, एछ जीवनी कायनो हिंसारुपीजे आहार जे नकरया यो  
आहार भवध्रमणःदुखरुपी चार प्रकारना आहारनो त्याग करवो ॥ ६२ ॥

चत्ताभेम जाभेम जाणण हारकयल गय सुरिदस ।

सिखि मुहंपिहु सुलहं तं चय सुवउत्थिहार ॥ ६३ ॥

द्वाघमा प्रातःक्यु छे इन्द्रपणुजणे एषाजीवी ए आहारनो त्याग  
 करी, मुल्म सिद्धि सुरवने प्रातःकर्यावाला भोए धार प्रकारना आहा-  
 रनो त्याग करयो ॥ ६३ ॥

द्वार नघमु समाप्त

अथ द्वार दशमं ।

नाण विद्वा पाद्यपरयणेपि ज पावि उण भयमाणे ।

जीयो लहह सुरत्त त सरसुमणे नमुक्कारं ॥ ६४ ॥

नाना प्रकारना पाप करवामा ननुपर, एवा प्राणियो ए अतमा  
 नवकार मन्त्रनु स्मरण करता जीय देष परदीने प्रातःकरे छ माट  
 समाधि मरण इच्छता निरंतर छेयटनाममयमा एण नवकार मन्त्रनु  
 स्मरण फरता रहेषु ॥ ६४ ॥

जेणसहायेण गथाण परमत्वे समविद्याण ।

अणयच्छि असुब्बाइ त सरसमणे नमुक्कार ॥ ६ ॥

जेनी सहायतायी भयामा भो परमयमा सुमी थय, तेण प्राणि  
 ओ मनन घडिन सुगने देनार णवा नवकार मन्त्रनु स्मरण कताखेवु  
 सुल्हा ओ रमणि आ सुल्ह रज सुगण मुद्द ।

इयुधि अना दुल्हो तं सरसुमणे नमुक्कारं ॥ ६६ ॥

सुल्म लियो, सुल्म राज्य, देवताणु सग्न एणु आ वधामा  
 दुल्म एवच जे क सारीरीने नवकार मन्त्रनु स्माण करवु तेन  
 दुल्म छे थारी ससारमा थु सुल्मन छे की नवकार मन्त्रनु  
 स्मरण करता रहेषु ॥ ६६ ॥

ल्लामि जमि जीयाण जायए गोवप च भवउल्लही ।

सिचमुहमच धार त सरसुमणे नमुक्कार ॥ ६७ ॥

ससारमा जमलरने, समाररुपी समुद्रम मारुना माटे नवकार  
 मन्त्रनु स्मरण करता रहेषु

दशमं द्वार समाप्त ।

एव गुरु पदं पञ्जता गृहण निम्नुणि ऊण ।

चो नठसवपात्रो तद्देव आमेवण एसो ॥ ६८ ॥

आ प्रमाणे गुरुमहारजना उपदेशार्थी पयत-आराधना-छेली आराधना सँमर्लने स्वपापकर्मनो त्याग करनार-श्री नवकार मंत्रः स्मरण करना रहेबु ॥ ६८

परपरमिडि स्मरणं परायणो पात्रिउणपचत्त ।

पत्तो पचम कण्णमि रायसिहा सुखिदत्त ॥ ६९ ॥

पचपरमेष्ठिना स्मरणार्थी पचत्तने पामेल, एथा श्री रायसिंहकुमार पाचमा देवलोक्ते विवेगया ॥ ६९ ॥

तण्णसि रयणयद् नरेह आरादि ऊणतक्क पे ।

सामाणि अत्तपत्ता ऊ तत्तु अनिच्छुस्सति ॥ ७० ॥

तनी खी रत्तवनी, नवकार मंत्रनी आराधना करी तेज देवगैमा सामानिक इन्द्रपणुपामी, अने त्या गी चर्चने मोक्षमा जत्ते ॥ ७० ॥

मिरि सामत्तुणि रइय पञ्जता गृहण पत्तमज्जणण ।

ने अणुसरति सम्म लहति ने सासय सुक्ख ॥ ७१ ॥

श्री सामत्तुणि रचित-वनचेली शांतिने करनारी एवी पर्यंत आराधना-छेला-आराधना ने सारीगते जादरकरसे ने शाश्वता सुखने पामरो ॥ ७१ ॥

इति पर्यंत आराधना समाप्त ।

### प्राग्नि अभिषेक

पचु वरचउविणह द्विमत्त करणेय सत्तमहिना ।

राय भौयणमन्त्रिय बहुविअ अणत्त सत्तण ॥ १ ॥

घट, पीपल, उरग, जजिर, महुडा, ए पात्र उवग तथा चार मन्त्र विगह मध, मास मालण, अने मदिना-( दारु ) तथा परफ डडिन चलेते जमटु पाणि, डेर, पाणिनामरा-( गर ) र्थी जातिनी माटी रात्रि भोजन करनार्थी घणा जीवानो घात एय नेवी तना पण त्यक करघो पापोटा-( श्मिर्कट ) प्रमुख गृहविज, अत मय नयाण

धूलिपटा धायगण, अमुणिय नामाणि पुष्पल्याणि ।

तुच्छफल चलिभ्रस धञ्जद अभ्रस प्रचसि ॥ २ ॥

मचा दहिमा ते करेल दहिपडा, रिंगणा, तथा जेना नामो न  
जाणता होय तेना, तथा तु उफल, जातु प्रभुव, चलितरस कोद  
पण चिजनो रस जरतो होय-मडी गयला होय, पवा पावीस प्रस  
रना अभ्रस नही खाना योग्य चिजनो त्याग करवा ॥ २ ॥

चात्रिश अभ्रस समाप्त ।

### चात्रिश अननकाय

सद्याउकद जाह सुरण कटोर चञ्जदध ।

अह्लहलिदाय तहा अद तह अह्लकचुरी ॥ १ ॥

सत्र जानिना रूत अनन काय, तथा सुरणरुद, चञ्जद, लीली  
हलदर, आदु, तथा कचुरी, ते अनन काय समजवा ।

सत्तावरी त्रिपली, फुनारी तदथाहभरी गिराण ।

रसनरसकरिहा, गज्जहर तह लुणभो लोढा ॥ २ ॥

शतावरी, लीली धरियाली, कुंभारपढा, वाहर, गलो, लसण,  
वासरग, गाजर, तथा कान्धुमिट, लोढा नामनी घनस्पती-अनन  
काय समजवी ॥ २ ॥

गिरिकर्षि त्रिसहयपत्ता खरि सुना येग अह्लमुथाय ।

तन्तुणा कटोरती बिलाटा अमयउलीय ॥ ३ ॥

गिरिकर्षिवर, कुपरा, गरसुनामना कद धगकद, रीरी  
माय, तथा उल, गिलोडा कद तथा जमूनवल अनन काय  
जाणवा ॥ ३ ॥

मूला तदभूमिरहा त्रिहाद दकचुना पत्ता ।

सुत्र खले अ तदापहको कोमल बलिया ॥ ४ ॥

मूग, समिफेड, जे छत्रिना जाकार जयावायन, अतुरासहित  
बेहडी, हरु नामना भाजी, सुत्रगरा, पालकशाक, तथा कोमल  
आयति प्रभुव अनन काय जाणवा ॥ ४ ॥



अन्तु तर्हविडा तु यतिवजाणि उणाणं भाइ ।

बुद्धियनिपवाई परिहरिद्विद्यापयसेन ॥ ५ ॥

रतातु, पिंड तु, भायत्रित मननं काय जालनि बुद्धियान पुष्पीप  
त्याग करषो

अथ श्री आराधना पुण्यप्रकाश स्तवन

दोहा

सखलमिदिदायद सदा, चौविदाजिनराय । मन्गुरु सामिनी  
सरस्वती प्रेमप्रणमु पाय ॥ १ ॥ भिभुवन पतिविशाल प्रणा नदा  
गुणगर्भीर । नासन नायक जगत्पथी धर्तमान बडरीर ॥ २ ॥ एक  
दिनरीर जिणदने धरणेकरी प्रणाम । भविष जीयता हितमणी पुछ  
श्री गीतमस्याम ॥ ३ ॥ मुक्तिमाग आराधिये कणे किणपद अरिहत  
सुधासगस तयव जन रग, भाग्ये श्री भगर्थेन ॥ ४ ॥ अनिचार भाग्य  
इये, प्रत धरिये गुरुशास्य । जीय समाया सखलज, यानि चापणी  
लाग ॥ ५ ॥ विधिगुं बला धामगविय पाय स्थानक धरार चार  
शरणनित्य अनुसरा, निदा वृति आचार ॥ ६ ॥ शुभकरणी धनु  
भोदिये भाय भले मन आण । धणसज अरसर भाग्यी नवपद जपा  
सुजाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा ए छ दश अधिकार । त्रिच  
आणिने भाग्ये जेम पामो भयथार ॥ ८ ॥

दा० पदेनी

एकडी किहा रासी

ज्ञानदशन चारित्र तप धीरज, ए पात्र भाचार । षट्पणा इहभर  
परभजना आलोइये अनि रागे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञानमणी गुणराणी  
धीरयदे एम याणी रे । प्रा० । हा० । ए आरणी । गुरु ओत्रिय नदी  
गुरु विनये काले घरी बहुमान । सूत्रयथ तदुभयकरी सुधा भणिये  
यही उपजानरे ॥ २ ॥ प्रा० । हा० । ज्ञानोपकरण पात्री पोयी, टयणी

नोकरवली । तेह तणी किधि आशातना, शानभासे न सामगरे  
 ॥ ३ ॥ प्रा० । शा० । इत्यादिक् विपरितपणार्थी शान विराध्यु जेह ।  
 आभय पम्भय धर्गय मनोभय मिच्छामि दुज्जड तहरे ॥ ४ ॥ प्रा० ।  
 शा० । समस्मित्तयो शुद्ध ज्ञाणी, ए जाकर्णी । निमवचने शक्ता न  
 विस्तीज विपरितपणत अभिलाष । साधु तणी निंदा परिहरजो फल  
 सन्हे म राखे ॥ ५ ॥ प्रा० । शा० । मूढपणु छडो परशाना गुणवतने  
 आदगिये । सामिने धर्मकरी थीरता, भनिप्रभावना करियेरे ॥ ६ ॥  
 प्रा० । शा० । स्व चैत्र प्रानाद तणोज, अणणवाद मतग्या । द्रव्य  
 द्वेष से जे विण साड्यु, विणसना उतरयोरे ॥ ७ ॥ प्रा० । स० ।  
 इत्यादि विपरितपणार्थी समस्मित्त लड्युचंद । आभय० । मिच्छा० ।  
 प्रा० । चारित्तियो चित्त ज्ञाणी । ए जाकर्णी ॥ पाच समिति तीन  
 गुत्ति तरार्थी आठ प्रवचन माय, साधु तण धर्म प्रमादे अणुड  
 वचन मन कायरे ॥ ९ ॥ प्रा० । चा० ॥ ध्यावकन धम सामायक पो  
 सदमा मनवाली, ज जयणा पूरुण ण अठ प्रवचन माय न पालिरे  
 ॥ १० ॥ प्रा० चा० ॥ इत्यादिक् विपरितपणार्थी चारित्रि डोट्यु जेह ।  
 आभव० मिच्छा० ॥ ११ ॥ यारे भेदे तप नपि कीधु छने यागे निज  
 शक्ते । धर्म मन वचन फाया कीरज नपि फेर त्रियो भगने रे ॥ १२ ॥  
 प्रा० चा० । तप कीरज आचार यणी परे, विविध विगह्या जेह ।  
 आभव० मिच्छा० ॥ १३ ॥ प्रा० चा० । घटि विदोषे चारित्रि करा  
 अनिचार आलाइये धीर जिणे सर वयण मुणीने पाप मल सपि  
 धोइये रे ॥ १४ ॥

ढाट धीजी पामी सुगुरु पसाय एरुशी

पृथ्वी पाणी नेड, वायु घनस्पति ए पाचे धावर कहाए, करी  
 करसन आरम जे येन रोडिया । बुचा तलाव रणायियाए ॥ १ ॥ घर  
 आरम जनेक टाका भौयरा, मेडी भाट चणावियाए । लिपण धूपण  
 फान, एणपर । पृथ्वी काय विराधियाए ॥ २ ॥ धोत्रण नाहण पाणी  
 जीवण अप्पाय, छोती घाती करी दूरध्याए । भाटीगर पुमार,  
 लेह सोवनगाभा भाडमुंजा गिहा लागयाए ॥ ३ ॥ तापण शक्ति

काजे वस्त्र निवारण, रंगण राधण रस चर्तीए । एणीपरे धर्मादान  
 परं केली, तेउ वायु विराधीयाए ॥ ४ ॥ बाडी वन धाराम,  
 घावी वनस्पती, पान फुट फल चुटिया । पोंप पापडी शाक,  
 शेका सुक्या, छुद्या छेद्या आयिया ॥ ५ ॥ अल्सीने परंड घाणी  
 घालीने घणा तिलादिक पीलियाए । घाली कोठुं भादि पीली  
 शेण्डी फंदमूल फल घचियाए ॥ ६ ॥ एम एकद्रिय जीव एण्याह  
 पाविया ह्वणता जे अनुमोदियाए । वामर परभर जेह वली  
 भयोभव ते मुत्र मिच्छामि दुकड ए० ॥ ७ ॥ धर्मी सरमीया भोटा  
 गाडर गडीला इयल पुरा अग्नियाए । घाला जले चुडेल, विच  
 लित रसतणा, वगी अथाणा प्रमुपता ए ॥ ८ ॥ एम वेद्रिय जीव  
 जेमेदूह्या ॥ ते मुत्र० । उदेही जु लीब माफ्ट मशोडा चाण्डमीडी  
 फुंनु आप ॥ ९ ॥ गह्रिया घामेल फान पञ्जरडा गिगोटा धनेरिया  
 ए । एम तेद्रिय जीव जे मे दूह्या । ते मुत्र० ॥ १० ॥ मन्थी मच्छर  
 डाम, ममापतगिया कसारी कोलिया बडाए । द्विषण विंदु तीड  
 भमरा भमरिया फोता वग रड माफडी ए ॥ ११ ॥ एम चारद्रिय  
 जीव जे मे दूह्या । ते मुत्र० । जग्मा नावी जाल, जलचर  
 दूह्या, वनमा मृगसताविया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव पाडी पा  
 शमा पोपट बाल्या पाजरे ए, एम पंचेद्रिय जीव जेमे दूह्या । ते  
 मुत्र० ॥ १३ ॥

### ढाल तीजी

प्रथम गोयला तणे भवे जीए देशी

त्रोध लाभ भय हास्यर्थाजी वोल्या वचन असत्य । कुडररी धन  
 पारकाजी लिधा जे अदत्त रे । जिनजी ॥ १ ॥ मिच्छामी दुकड  
 आज, तुम सापें महाराजरे ॥ निनजा ॥ देह साक फान रे जिनजी  
 मि० ए आकणी । देव मनुज तिर्यचजी, मथुन सेया जेह,  
 त्रिशयरस लंपटपणजी, घणुविट्यो दहरे । जिनना० २ मि० परि  
 ग्रहनी ममता करी जी, भवभर मेली आय । जेह जिहानी ते तिहा

रहीजी फोड़ न आरी साथ रे ॥ जि० मि० ० ॥ खणी भोचन जे  
 कर्याजी, कीधा भूप अमूप रसना रसनी लालचेनी, पापकर्या  
 प्रत्यक्षरे ॥ नि० मि० ४ ॥ व्रत लेइ विसार्याजी र्णी भाग्या पद्य  
 खाण कपट हतु निगियाङ्गीजी, कीधा आप वाणारे ॥ नि० मि० ५ ॥  
 प्रण ढाले आठ दुहजी, आलोइया अतिचार । शिपगति आराधन  
 तणेनेए पहेले अधिमाररे ॥ जि० ॥ ६ ॥

### ढाल चौथी । महिलडीनी देशी ॥

पच महाव्रत जादरा, साहेलडारे । अयमा ह्यो व्रत जारतो यथा  
 शक्ति व्रत आदरी ॥ सा० पाले निरती चार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधा  
 सभाग्ये । सा० हियट घरी विचारतो शिपगति आराधन तणे ॥  
 सा० एरीजा अत्रिकार तो ॥ २ ॥ योनी चोराशी लाबतो, मन शुद्धे  
 करी स्वामणा सा० फाइशु राप न राबने ॥ ३ ॥ सर्व मित्रकरी  
 चिंतयो ॥ सा० कोइ न जाणा शत्रु तो । गगद्वेष एम परिहरो । सा०  
 कीज जत्र पत्रि ता ॥ ४ ॥ भाभी सद्य समाविये । सा० जे अपनी  
 अमीनि तो सचन कुट्टर करी स्वामणा सा० एजिन शासन रीततो  
 ॥ ५ ॥ गमिये अने समाविय ॥ सा० एहज धर्मनो साग्ता शिध  
 गति आराधन तणे सा० एरीजो अधिमार ता ॥ ६ ॥ मृगासाद  
 दिमा चोरी सा० अन मूर्छा महुर तो प्रोध मान माया कृष्ण  
 सा० प्रेम द्वय पैगुय तो ॥ ७ ॥ निद्रा कण्ह न कीजिए सा० कुडा  
 न दीजे आग्ता रति अरति मिथ्या तने सा० माया मास जनाले  
 तो ॥ ८ ॥ त्रिभिध त्रिभिध घोसिरात्रिद सा० पाप स्थान अढारतो  
 शिपगति आराधन तणे सा० ॥ ए चाथा अत्रिकार तो ॥ ९ ॥

ढाल पाचमी हने निसुणो इहा अत्रिषा ए इरी

जम जरा मरणे करिण ए ससय आसार तो कर्या कम सह्य अनु  
 भये ए फोड़ न रावण हाव तो ॥ १ ॥ शरण एर अरिहंतनु ए शरण  
 सिद्ध भगवततो, शरण धम श्री जिननो ए साधु शरण गुण वततो

॥ २ ॥ अर मोह सनिपरिहरिण चार शरणचित्त धारतो । शिव  
 गति आराधन तणो ए, ए पाचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभयपर  
 भय जे कर्या ए पापकर्म न्है राखतो । आमनाखे ते निन्दिये ए  
 पाडिक्कमिये गुरु साधतो ॥ ४ ॥ मिथ्या मति घनारियो ए  
 जे भाव्या उत्सुत्रतो । धुमति द्वाग्रहने वणो ए वलीथाप्या उत्सुत्रतो  
 ॥ ५ ॥ घड्या घडाय जे घणायें घट्टी हल हरीयावतो । भय भय  
 मोटे मुक्किया ए करना जीवसहारता ॥ ६ ॥ पाप करिने पोपिया ए  
 जम जम परिहारतो । ज मातर पहोता ए कोइए नरीधी सारतो  
 ॥ ७ ॥ आभय परभय जे कया ए ए एम अधिकरण अनेक तो ।  
 त्रिविधे त्रिविधे बोभिरात्रिये अणि हृदय त्रियेक तो ॥ ८ ॥ दुष्टननि  
 दा एम करिए, पाप कया परिहारतो शिधगति आराधन तणो ए ए  
 उठो अधिकार तो ॥ ९ ॥

हाल छठी जादि तु जोइने जायणि । ए दंडी ।

घन धा ते दिन भावरो जिहा विधो धर्म । दान शील तप  
 आदरी, टाल्या दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुजयादिक तीथनी, जे कीधी  
 यात्रा । युगते जिनपर पूजिया, वली पोल्या पात्र ध० ॥ २ ॥ पुस्तक  
 ज्ञान लभारिया णिणहर जिण चैल्य सत्र चतुविध साचव्या, ए  
 सात क्षत्र ते ॥ ध० ३ ॥ पाडिक्कमणासुपरे कया अनुष्ठा दान,  
 साधु सुरी उव शायने दीधा रहमान ॥ ध० ४ ॥ धममारज अनु  
 मोदिये एम वाग्वाग, शिधगति आराधन तणो ए सातमो अत्रिकार  
 ॥ ध० ५ ॥ भाव भलो मन आणिये चित्त आगि ठाम । समता भाव  
 भाविये ए आ मगम ॥ ध० ६ ॥ सुख दुख कारण जीवने कोह  
 अर न होय । कर्म आर जे आचाया भोगविये भोय ॥ ध० ७ ॥  
 समतात्रिणने अनुसर, प्राणी पु यना काम । छार उर ते लिण्णु  
 झापर चिप्रामण ॥ ध० ८ ॥ भाव भालिये भाविय ए धर्मनो  
 सार । शिधगती आराधन तणो ए वाठमो अत्रिकार ॥ ध० ९ ॥

## ढाल सातमी खेतगिरि उपर ए देशी ।

हरे अत्रसर जाणी, करिये भलेपणा सार, अणसण आदरिये  
 पश्या चार आहार । लडुता स्वविमुक्ति छाडी ममता स्व ए आत्म  
 खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कंधा, जाहार अनत  
 नि शरु पण तृप्ती न पाव्यो । जोत्र लालचिया रक दुलहो ए घली  
 घला अणसणनो परिणाम, एथी पामीजे शिवपद सुगपद ठाम ॥ २ ॥ धन  
 धना शास्त्रिन्द्र पयो मेघकुमार, अणसण आराधि पाव्या भयना  
 पार । शिवमदिर जाश करी एष अत्रतार आराधन करी, ए नथमो  
 अधिहार ॥ ३ ॥ दशमै अधिकारे महामत्र नवमार, मनयी नधी  
 मुक्ता शिव सुखफल सहार । ए जपना जाये दुगती दोष विशार ।  
 सुपे ए समरो चउदपूर्वना सार ॥ ४ ॥ ज मातरे जाता, जा पाम  
 नत्रकार तो पातर गाली पामे सुर अत्रतार । ए नत्रपद सरिगो  
 मात्र का न सार इहमवने परमने सुत्र संपति दातार ॥ ५ ॥  
 जु ओ भीत्रे भीत्रडी राना राणी थाय नत्रपद हिमार्थी राजविह  
 महाराय । राणी रतारती रेहु पत्रशाळ सुखयोग एक भयर्थी लेशे  
 मिद्धि घनु नयोग ॥ ६ ॥ श्रमनेने ए घली, मात्र फायो तत्रशाळ ।  
 फणी घर फीटीन प्रगट ये फुल माल शिवकुमरे योगी सोत्रत पूरि  
 सोकीत्र । एम एणे मात्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अवि  
 कारे घीर जिणे सर भाग्या, आराधन करी विधि जणे चित्तमा  
 राव्यो । नेण पाप पळाली भवभव दूरे नाव्यो । चित्त शिव करता  
 सुमति शमून रस चाव्यो ॥ ९ ॥

## ढाल जाठमी नमो भवि भावगु ए, ए देशी ॥

सिद्धाग्र राय कुलति लोच तिसलामात मल्हागतो । अवनतिले  
 तुमे अवनर्या ए त्रजा अम उपगारता ॥ १ ॥ जयोनिनरीर जी ए ए  
 आरुणी । मे अपराध क्या घणा ए कता न लहे पारतो तुम चरणे  
 आप्या भणिण जां तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० जाशरिने आवियो ए

तुम चरणे महागज तो । आया ने उखेतशो ष तो केम रहेशो लान  
 ॥ ३ ॥ ज० कर्म धनुजण अकरा ए जममरण जंवाल तो हँ सु ष  
 हयी उभग्यो ए छोडा शो देवदयाल तो ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मन रथ  
 मुग फल्या ए गाडा दु गदंशोल तो ॥ तुग जिन चोविशमो ए प्रगट्यो  
 पुण्य कलोलतो ॥ ५ ॥ ज० ॥ भव भय विनय तुमारडो ष, भाव  
 भक्ति तुम पायतो । देवदयाररी क्षीजेए घोधक्षीज सुपमायतो ॥ ६ ॥  
 ॥ ज० इति ॥

### कलश

इयतरण तारण सुगतिभरण दु ष विवारण जग जयो । श्री  
 धीगजिनर चरण धुणता अधिक मन उट्ट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजय  
 देव सुर्गाद पटघर तीरथ जगम इणि जग । तपगउ पति श्री  
 विजय प्रमसुरि, सुरितेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्रीदीरविनय सूरि शिष्य  
 वाचर, कानि विनयो, सुरगुरु सभा । तस शिष्यप्रायक विनय  
 विजये धुण्यो निन चोविशमो ॥ ३ ॥ सह सत्तर सत्रन् जोगण त्रिशे  
 रही, रादर चौमान ए । विनय दशमी विजय कारण, त्रियो गुण  
 अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आगधन सिद्धिमाधन मुकृत गीठ विला-  
 सए । निजग हेते स्तवन रचियु नाम पुण्य प्रभाश ए ॥ ॥

इति पूण्य प्रभाश स्तवन समाप्त ।

प्रत्येक पुढना रामनी तीजी ढाल जननी मन भाशाधरी ए ढाल

## पद्मावती जीव राशी

### राग बेराडी

हय राणी पद्मावती जीव राशी गमाव । जाण पगु ते जुगनेभट्ट इण  
 घला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ भिच्छामि दुष्कड, अरिहतनी साख ।  
 जेमें जीव विराधिया चउराशिलाख ते मुझ ॥ २ ॥ सात लाख  
 पृथी तणा, साते जू काय । सात लाख तेउ कायना, सात  
 बली वाय ॥ ते मुझ ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति चोदह साधारण ।

त्रिति चउरिडिजीविना वे धे लाख विचार । ते मुग्र० ॥ ४ ॥ देवना  
 त्रियंघ नारकी चार चार प्रकाशो । घादह लाख मनुष्यना ए लाख  
 चोराशी ॥ ते मुग्र० ॥ ॥ इण भउपरभेउ भोगिया जे पाप अणर ।  
 त्रिप्रिध त्रिप्रिध फरी परिहरुं दुर्गति दानार ॥ त मुग्र० ॥ ६ ॥  
 हिंसा कीधी जीवनी घाल्या मृयाउद । दोष अदत्ता दानना भैद्युन  
 उमाद ॥ त मुग्र० ॥ ७ ॥ परिग्रह मल्यो कारमो, त्रिग्रा मोघ विशेष ।  
 मान माया लोभमें क्रिया चली रागने ह्य ॥ ते मुग्र० ॥ ८ ॥ कलह  
 फरी जीव दूया दीघा कूडा कलह । निंदा कीधी पारफी गति  
 अरति नि शक ॥ त मुग्र० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चानर कीधो गणण  
 मोमो । युगुग कुघमनो भले अण्यो भरुमा ॥ ते मुग्र० ॥ १० ॥  
 खाटकीना भय में क्रिया जीव नानाविध घान । चटीमार भये चर  
 फरा मायादिन रात ॥ ते मुग्र० ॥ ११ ॥ माछीने भये माछला  
 जाल्यापल चास । धीवर भीर फोली भय मृग पाड्या पस ॥ त  
 मुग्र० ॥ १२ ॥ कानी मुहाने भये फडी मात्र फटोर । जीव अनेक  
 मारिया कीधा पाप गघोर ॥ ते मुग्र० ॥ १३ ॥ फोटचालना भये में  
 क्रिया आरुग दड । थदिवान मरात्रिया, कारडा छडी दंड ॥ ते  
 मुग्र० ॥ १४ ॥ परमा धामिन भये दीघा नारकी दु छ । छेदन भेदन  
 घेदना ताडना अति निग । ते मुग्र० ॥ १५ ॥ कुंभारना भयेन क्रिया  
 निभाडा पत्राया । तेली भये तिलपीलिया, पाप पेट भयाया ॥ ते  
 मुग्र० ॥ १६ ॥ हालीने भये हल खेटिया फाड्या पृथीना पेट ।  
 सूड निदान क्रिया घणा नी राधलद चपेट ते मुग्र० ॥ १७ ॥ माग्नि  
 भये रोपिया नानाविध दृश्य । मूलपत्र फलफुटना, लाग्यापापने  
 लक्ष । ते मुग्र० ॥ १८ ॥ अधोराह्याने भये भया अधिका भार ।  
 पोटी उट काटा पट्या द्या न रही लगार ॥ ते मुग्र० ॥ १९ ॥  
 छीपाने भर छेनरी कीधा रागणपाम । अगनि आरंभक्रिया घणा,  
 घातुर्नाद अभ्यास ॥ ते मुग्र० ॥ २० ॥ शूणणे रण जूसता, भार्या  
 माणस घृद । मदिरा मान मावण भार्या खाधा मूत्रने क ॥ ते  
 मुग्र० ॥ २१ ॥ गण गणात्री घातुनी पाणि उहेच्या आरंभ क्रिया  
 अति घणा पोते पापज सेया ॥ ते मुग्र० ॥ २२ ॥ अंगारधर्म क्रिया



घने घरमे दरदीघा । सुस किधा चीतरगना कुडा कोसन पीघा ।  
 त मुझ० ॥ २३ ॥ चिह्नी भवे उंदर लाया गिराली हत्यारी । मूड  
 गमार तणे भवे मँजु लीप मारी ॥ ते मुझ० ॥ २४ ॥ भाडमुंना तणे  
 भवे एकेद्रिय जौय । जवार चणा महु दोकिया पाडेता रीय ॥ त  
 मुझ० ॥ २५ ॥ खाटण पीमण गारना आरंभ अनय । राधण ईधण  
 भाग्निना निया पाप उद्रक ॥ त मुझ० ॥ २६ ॥ विकथा चार किधी  
 वली संया पाय प्रमाद् । इष्टवियोग पाट्याकिया रद्दा रिगयाद् ।  
 मुझ० ॥ २७ ॥ माधु अनेक थमण तणा यन लद् भाग्या । मूल अने  
 उत्तर तणा मुझ कृपण ग्या । त मुझ० ॥ २८ ॥ सापाघिडी सिद्ध  
 पितरा शरुगने समला । हिंसन जौय तण भय हिंवा कीधी  
 माली ॥ त मुझ० ॥ २९ ॥ सुयावडी दूषण घणा, वली गर्भ  
 गलाया । जायाणी होल्या घणा शील्यन भेनाया ॥ ते मुझ०  
 ॥ ३० ॥ भय अनेत भमना थरा कीधा पुट्टुय सम्बध । त्रिविध  
 त्रिविध करी यामिहं तिणनु प्रतिबध ॥ ते मुझ० ॥ ३१ ॥ भय  
 अनेत भमना थरा कीधा परिग्रहस्यध । त्रिविध त्रिविध करी  
 येसिहं तिणनु प्रतिबध ॥ ते मुझ० ॥ ३२ ॥ एणिपे इण भये परमये  
 कीधा पाप अत्य । त्रिविध त्रिविध करी येसिहं करुनम पवित्र । ते  
 मुझ० ॥ ३३ ॥ राग वै गडी जे सुण ए तीनी दाठ । समय सुंदर  
 वहे पापयी छुट तन् काल ॥ ते मुझ० ॥ ३४ ॥

अहंम

## श्री सिद्धचक्रमण्डल पूजनविधि

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाला स्नात्रियात्रोप मंत्रेला पाणिधी स्नान  
 करुं—जन्मत्र—ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भव अमृतपरणि अमृतं  
 श्रापय २ स्वाहा । आ म प्रथी पाणि म त्रीने पडे ॐ ह्रीं अमले विमले  
 विमलाद्भवे ॥ च तीर्थ जलोपमे पापा वावा अगुनि शुचि भवामि  
 स्वाहा । आ मत्रथी सातवार भणीने स्नान करु, पडे ॐ ह्रीं आ  
 ॐ नम ना मत्रथी सातवार मंत्रिने वर शुद्धकरीने येरा, तथा

ॐ आ हा म्रों अर्हते नम आ मत्रयी सातवार केशर मन्त्रिने तिलक करघु पछी ॐ ह्रीं बबनर बजतर, नमो सोमो धुरु धुरु वग्गु धग्गु सुमणे सोमणम महुमहुरे ॐ धवली क क्षः म्याहा आ मत्रयी नाडा छोडी, मिडल, मरोडाफरी मन्त्रिने हाथ घाघरी, ज्यार मड नी चारे तरफ गलना मिडल बाधे योगेपण आमत्रयी मन्त्रिने घाघनु, तथा ना प्रमाणे गणना शरीरने शुद्धकरि स्नात्रिया गुरु महापत्तनी समुप हाथ जोडाने घेसे त्यार गुरुमहाराज अग्रा स्नात्रियाओ पण अग्रस्था स्तोत्र मणीत अग्रक्षा करे

### अथ अग्रक्षा स्तोत्र

ॐ परमेशी नमस्कार साग नरपदामक आमरक्षाकर वज्र पञ्च राभ स्मराम्यहम् ॥ १ ॥ ॐ नमा अरिहताण शिरस्क शिरानि स्थित ॐ नमा सारसिद्धाण मुने मुखपटम्बर ॥ २ ॥ ॐ नमो आधरियाण अंगश्रानिशाधिनी ॐ नमो उवशायण आयुधे हस्तयोद्धम् ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोण मत्रस्ताहण मोचके पादयागुभे पसा पवनमुञ्जारे शिलावज्र मयितले ॥ ४ ॥ सत्र पात्रपाणाम्णानाग्रो वज्रमयो वहि मगलाण च सचेमिखादिग्गार जातिका ॥ ५ ॥ स्वाहात च पद षय पदमे ह्यवद् भगवत् यत्रापखिज्रमय पिध न देह रक्षण ॥ ६ ॥ महा प्रभावाद्भ्रम्येथ श्रुत्रापद्रवनाशिनी परमेशि पदाद्गुता कथिता पूर्व सूरिभ ॥ ७ ॥ यथेव कुरुत रक्षा परमेशिपदे सदा तस्य न स्यात् मय याधिरात्रिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

आ स्तोत्र गणना गणिने आमरक्षा कररी, पछ तणवार नवकार मत्रयी मन्त्रिने चोटलीनी गाठ घाघरी, अत्र प्रणवार नरपदामत्र गणिने सर्वे स्नात्रियाना कानमा त्रिप्रिम्गानार गुरुपुत्र ओपे आ प्रमाणे त्रिधि गानिस्नात्र पतिष्ठामा तथा नरपद मडलनी पूजाकरते करयी पडे मन्दिरमा जे अधिष्टायिका देवधी होय त सर्वना पूजा करे; जष्टद्रव्य चडाव, पडे चरलीना तलमा द्विगल्लुग अथवा सिन्दुर, भेलथीने क्षेत्रपालनी पूजा कर, तथा चातुना वरखयी अग

रचना करे अन्तर तथा पुत्र धूप दीप नैवेद्य फल विगने अष्टद्वय  
ॐ क्षत्रपात्राय नम एमयाला सत्र द्रव्य चढाय

नवपद मण्डलनी जमणा तरफ दशदिग्गायना पाटलाती सजावना  
करधा एकदिग् पालनी पूजा कराने मद्य द्रव्यथो पूजा कर

### दशदिग्पाल पूजा

१ ॐ नमो इन्द्राय, सायुधाय सजावनाय सपरिकराय, अस्मिन्  
जम्बूद्विप भ्रतश्वेत्त्रे अमुक नगर अमुक जिन चैत्य श्रीनवपदमण्डल  
पूजा महोत्सव आगच्छ २ वरि पूजा गृह २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि  
वृद्धि कुरु २ स्वाहा । ॐ इन्द्राय नम आ प्रमाणे पहाने इन्द्र आतन  
पूजा पुत्र दिगामा जल उदन धूप, दीप, नैवेद्य, आदि अष्टद्वय चढाय  
२ ॐ नमो अश्विन सायुधाय, सजावनाय अस्मिन् जम्बूद्विपे भरत  
श्वेत्र अमुक नगर अमुक जिन चैत्य श्री नवपद मण्डलपूजा महोत्सवे  
वरिपूजा गृह २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु - स्वाहा सत्र  
द्रव्य चढायना ॐ अथ नम । ३ ॐ नमो यमाय सायुधाय स्वाहा  
नाय सपरिकराय जम्बूद्विप भरतश्वेत्रे अमुकन अमुक जिन नवपद  
मण्डलपूजा महोत्सवे आगच्छ २ वरि पूजा गृह २ शान्ति तुष्टि पुष्टि  
रिद्धि वृद्धि कुरुकुरु स्वाहा सत्र द्रव्य चढायवा, ॐ यमाय नम । ४ ॐ  
नमो नरताय सायु सजा सपरि अ जम्बू भरतश्वेत्र नवपदमण्डल  
पूजा महोत्सवे आगच्छ २ वरि पूजा गृह २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि  
वृद्धि कुरु २ स्वाहा, सत्र द्रव्य चढायवा ॐ नरताय नम । ५ ॐ  
नमो यरुणाय सायु सजा सपरि अ जम्बू भरतश्वेत्र नवपदमण्डल  
पूजा महोत्सव आगच्छ २ वरि पूजा गृह २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि  
वृद्धि कुरु २ स्वाहा सत्र द्रव्य चढायना ॐ यरुणाय नम । ६ ॐ  
नमो वायवे सायु स्वाहा सपरि अस्मि जम्बु भरत अमुकन  
अमुकजि नवपदमण्डलपूजामहोत्सव आगच्छ - वरि पूजा गृह २  
शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि कुरु स्वाहा सत्र द्रव्य चढायना ॐ वायवे  
नमः ७ ॐ नमो कुबेराय, सायु सजाह सपरि अस्मि जम्बू भरत

अमुक्त्वा अमुक्त्वा श्री नवपद्मण्डलपूजा महोत्सवे आगच्छ ० यत्किं  
 पूजा गृह २ शान्तिं पुष्टिं तुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु ० स्वाहा, सव द्रव्य  
 चढायवा, ॐ सुभाय नम । ८ ॐ नमो इशानाय, सायु सवा  
 सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्त्वा अमुक्त्वा श्रीनवपद्मण्डलपूजा  
 महोत्सवे आगच्छ ० यत्किं पूजा गृह शान्तिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु  
 २ स्वाहा, सव द्रव्य चढायवा, ॐ इशानाय नम । ९ ॐ नमो ब्रह्मणे  
 सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्त्वा अमुक्त्वा श्री  
 नवपद्मण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ ० यत्किं पूजा गृह ० शान्तिं तुष्टिं  
 पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु २ स्वाहा, सव द्रव्य चढायवा ॐ ब्रह्मण नम ।  
 १० ॐ नमो नागाय, सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्त्वा  
 अमुक्त्वा श्रीनवपद्मण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ ० यत्किं पूजा गृह ०  
 शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु २ स्वाहा, सव द्रव्य चढायवा, ॐ  
 नागाय नम ।

उपरप्रमाणे सव दिशामा जष्टद्रव्य पानसहित चढायवा, गेरुद  
 नाणु पडे उपर वसुवत्सव लाल सूत्रधी पात्र, पडे ॐ दशदिशा  
 लाय नम जा प्रमाणे ळ्ही दशदिशामा दशदीपक पुलकती-उभी  
 घनीनो नीचो करे

इति दशदिशाल पूजनविधि ।

### श्री नवग्रहपूजनविधि ।

भगवाननी डारी तरफ नवग्रहना पाटलानी स्थापना करवी, १  
 ॐ नमो वादित्याय सायु सवाह सपरि अस्मि जम्बू भरत  
 अमुक्त्वा अमुक्त्वा श्री नवपद्मण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ ० यत्किं  
 पूजा गृह २ शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु ० अत्र तिष्ठ २ स्वाहा  
 ॐ सूर्याय नम जल रदन पुष्प धूप दीप नैरव्य अक्षत फल यजामहे  
 स्वाहा आमर्षोति अष्टद्रव्य चढायवा ।

२ ॐ नमो चन्द्राय, सायु सवाह सपरि अस्मि जम्बू भरत  
 अमुक्त्वा अमुक्त्वा श्रीनवपद्मण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यत्किं

पूजा गृह शान्ति तुष्टिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु २ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा, ॐ  
चन्द्राय नम आम वालीने जल चन्दन द्रव्ययी पजारये, तथा अष्ट  
द्रव्य चढाये

३ ॐ नमो भामाय, सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्त्त  
अमुक्त्ति श्रीनरपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि पूजा गृह  
शान्ति तुष्टिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु २ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा, ॐ भोमाय  
नम आम कहीने अष्ट द्रव्य चढाये ।

४ ॐ नमो बुधाय, सायु सवा सपरि, अस्मि यम्बू भरत  
अमुक्त्त अमुक्त्ति श्रीनरपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि पूजा  
गृह २ श्री शान्ति तुष्टिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु २ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा,  
ॐ बुधाय नम आम वालीने अष्टद्रव्य चढायेवा

ॐ नमो बृहस्पतये सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत  
अमुक्त्त अमुक्त्ति श्रीनरपदमण्डलपूजामहोत्सवे यलि पूजा गृह २  
शान्ति तुष्टिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु २ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा ॐ बृहस्पतये  
नम , कहीने अष्ट द्रव्य चढाये

६ ॐ नमो शुक्राय, सायु० सवाह० सपरि० अग्नि० जम्बू भरत०  
अमुक्त्त अमुक्त्ति श्रीनरपदमण्डलपूजामहोत्सवे यलि पूजा गृह २  
शान्ति तुष्टिं पुष्टिं रिद्धिं वृद्धिं कुरु २ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा, ॐ शुक्राय  
नम कहीने अष्ट द्रव्य चढाये ।

७ ॐ नमो शनिश्चराय, सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत  
अमुक्त्त अमुक्त्ति श्रीनरपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि  
पूजा गृह २ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा, ॐ शनिश्चराय नम कहीने अष्ट  
द्रव्य चढायेवा

८ ॐ नमो राहवे सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्त्त  
अमुक्त्ति श्रीनरपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि पूजा गृह  
२ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा, ॐ राहव नम , कहीने अष्टद्रव्य चढायेवा

९ ॐ नमो केतये सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्त्त  
अमुक्त्ति श्री नरपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि पूजा गृह

२ अथ तिष्ठ २ स्वान्, ॐ केतवे नम आमकहीने अष्ट द्रव्य चढानया

आप्रमाणे नवग्रहनी पूजा करीने पठे नवग्रहानो पाटलो भगवा ननी डारी पास राखवो अने तेने कुसुबल घरत तथा सूत्रथा घाधे पठ ॐ नवग्रहाय नम , एव कहीने अष्ट द्रव्य नागरवेलना पान तथा रूपान्णु भेटरे चार तरफ नव दीपक करे, अत्रा एर दीपक करे इति नवग्रह पूजन विधि ॥

### अथ देवगन्दनविधि

पछे यथा स्नात्रियाओ आठ वस्तु ( थोय ) यी देववदन करे, प्रथम विधिकराधनार गुरु अथवा विधि करनार प्रथम खमासमण० इरियाजहि, तस्म उत्तरी, अत्रथ कटिने चार नोफारनो का उस्मग करि प्रगट लोमगस्म करे पठे खमासमण० दइने, जमणो हिचण निचे राखे, डायो पग उचो राखे, पठे इच्छा करेण सदिग्द भगवन् चैत्यवदन करु इच्छ- चैत्यवदन करे

ॐ नमो पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणियते ।

ह्रीं धरणद्रुघोद्यापद्मादेवी युतायते ॥ १ ॥

शांति तुष्टे महापुष्टि धृति कीर्तन विधायिने ।

ह्रीं दिङ्मयालचेतलसर्वाग्निप्राधिनाशिने ॥ २ ॥

जयाजिताप्य विजयाप्या पराजितान्विता ।

दिशापाल प्रहृषक्षिद्यादेवी भिरन्विता ॥ ३ ॥

ॐ असिया उन्माय नमस्तत्र प्रेलोभ्य नाग्रताम् ।

चतुष्टुष्टि सुरद्रास्ते भागते छत्रचामरै ॥ ४ ॥

श्रीसङ्खेश्वरमण्डनपार्श्वनिन । प्रणतकल्पतरुत्रय ।

चूरय दुष्टघातमे पुरय वाञ्छित नाथ ॥ ५ ॥

पठे जरिचि नमुधुण, अरिहत चेइयाण करेमि काउसग्ग, घट्टण, अत्रय काउसग्ग एर नवग्रहनो पारीने, नमोऽहत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सवसाधुभ्य , कहीने थोय कहे

बहस्तनोतु मधय त्रिय यद्भ्यानतो १रे ।

अप्यंत्रिस्रक् ऽर्थादि रंहरा सत्सौच्यते ॥ १ ॥

पठ लेगम्ब करीन सत्रलाप, अण्ण घत्तियाए, अण्णथ कर्ह  
काउस्मग एक् नरकारनो करे पठे पार्गनि-यीजिधायकहे—

आमिनिमता य ङासनस्य नता मदा यशधिध ।

आधियते धिया १ भवता भवता जिता वानु ॥ २ ॥

पुन्रवर्यदि घदण, काउस्मग एक् नरकारना करीने, पार्गनि  
याय कहे

नरनत्ययुता विपर्यात्रिता म्रिज्ञान पुण्यशक्तिमता ।

घग्धमकारिनि विद्यानन्दास्या जैगीजियात् ॥ ३ ॥

सिद्धाण दुद्धाण कर्णने देवाधिदेव शातिनाथ आराधनार्थ करे  
काउस्मग अण्ण अण्णथ, कहीन काउस्मग एक् लेगस्मनो सागर  
गभिरा मुधि करीन पठ नमोऽहन् कहीन चोथी थोय कहवी—

थी शाति श्रुतशाति प्रशान्तिकीऽसायशान्तिमुपशान्तिम्

नयतु मदा यस्य पदा सृशान्तिदा सन्तुसतिजने ॥ ४ ॥

थी ङादशाङ्गा—आराधनाथ करेमि का उस्मग अण्ण अण्णथ  
कहीन काउस्मग एक् नरकारनो करीने पारे पठ नमोऽहन् कर्ह  
पाचमी थाय कहे—

समगाय सिद्धसाधन यीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा ।

भरनादनुपहतमहातमोऽपहा ङादशाङ्गाय ॥ ५ ॥

मुअद्वियाए करमि काउस्मग अण्णथ, कहीने नरकारना  
उस्मग करे नमोऽहन् कहीन छटी थोय कहे—

वद घदति घाग्वादिनि भगवनि क श्रुतसरस्वनि गमेच्छु ॥

रङ्गतरङ्ग मतिवरतरणि स्तुभ्यं नमः इतीह ॥ ॥

शासन देवता आराधनार्थ करेमि का उस्मग अण्णथ नोका  
काउस्मग करी नमोऽहन् कहीने सातमी थोय कहे—

उपसगयलयविलयननिरता जिनशासनाननेरता ।

श्रुतामिह समीहित इने स्यु शासन देवता भवताम् ॥ ७ ॥

समस्त वेद्यावद्यागराण मन्त्रि करेमिमिका अत्रत्य काउस्मग  
एक नवकारानो कही पारीने नमोऽर्हन् कही आठमी थोय कहे—

सद्यःत्रये गुण्गुणोऽनिघे सुवेयापृत्यादिस्वरणैः निवद्धन्था ।  
ते शातये सहभवन्तु सुरा मूरिभि सहदृष्टयो निषिल धिप्र  
त्रिघातदक्षा ॥ ८ ॥

पठ नवकार उभा गणना पछे रेसाने नमुःयुण जावनिचे समा  
जोऽत रेपिसाऽ नमोऽर्हन् सिद्धा कहीन स्तवन कहेवु

ॐ मिति नमो भगवता अरिहतासिद्धायरिय उच्यते ॥

वरम्पसाह भुणि सद्यधम्मतिथ्यपत्रणस्त ॥ १ ॥

सपत्रणमो तह भगवई सुयदेवयाइ मुहयाण ।

सिपसति देवयाण मिपत्रयण देवयाण च ॥ २ ॥

इत्ता गणिजमनेइय चण्णजाउकुःरेइमाणा ।

वभा नागुति दसण्हमत्रिय सुत्तिसाण पालाण ॥ ३ ॥

नामयमवणवेममणत्राम्प्राण तहेव पचण्ह ।

तह लेगपालयाण सुरागहाणय नण्ह ॥ ४ ॥

साहत्तम्म समस्य मत्रामिण चैव त्रम्मणु द्वाण ।

सिद्धिमपिध गच्छउ जिणा नवकारओ धणिय ॥ ५ ॥

पठ जयत्रियराय सम्पूर्ण कहेता इति देवपद्मनामिधि पूर्ण

### नवपदमण्डल प्रतिष्ठाविधि ।

प्रथम मण्डलनी वक्षे तरफ लालसुत्र तथाघीना श्रीगोमरे, दीवो  
चारपट्टोर सुप्रि अवरण्ड रापे, पउ सोनाना-या चात्तिना कलशमा  
पाणि भरिने सोनावाणिकरे, पउे हाथमा कलश लईने सात नवकार  
गणे ॐ ह्रीं श्रीं जीयन्ती पाःयनाथाय रक्षा कुरु ॐ स्वाहा आम  
न्त्रयो पाणिन मातवार मन्त्रे, तथा ने पाणिन मण्डलनी चारे तरफ  
धारामडी दे तथा उपर जरा पाणेना छाटा नार्वीने शुद्धकरे, पउे  
नवनार लाल सूत्रना साडात्रण आटा मण्डलनी बहार चारे तरफ  
करे, पहेला कहेत्त मन्त्री मन्त्रिने लाल सुत्र, मिडल मपेडा फली,





तस्य पुवदल मिदल मय्यन्वादिगुणामकान ।  
निश्रेयस पद प्रातान् निदधे मक्तिनिभा ॥ २ ॥  
तत् पुर्वपो परित प्रणष्ट दुष्ट प्रद्वर्तविगुणुष्टि ।  
प्रातानगन् सिद्धिमन् तवोपन् सिद्धन् वदे शक्ति दय  
गन् ॥ २

श्रीं निदधेभ्यो नम म्याहा पुवं सिद्धि नष्ट मिदल  
स्थापनानी पुना करे, सर्व द्रव्य चणारे पउ रक्षक रणे ताटे  
पीली धजा, पी लु घख, पाच गोमक रन उरिता मनजा फुल  
तथा जगुण्यादि सर्वे हाथमा लरने आचार्य पदनी पुदधर—  
स्थापयामि तन सूरिन् दधिषेद्रमि रनन ।  
चरत पञ्चधाचारान् पदनिगुणुष्टन ॥ ५ ॥

सूरिस्मदाचारविचारसारानाचारान् सारान् गन् ॥  
उग्रोपसप्र क निवारणार्थमभ्यर्चयामस गन् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसूरिभ्योनम स्वाहा, ब्रह्मचर्या श्रित्तिशातरख  
आचार्यपद स्थापनानी पूजा करे, सर्व इव इदन्, पउ रकेरीम  
लीलागाला लीला बख लीली धना, स्त्रिण रन पर्वीम  
मरकत रन पना, लीलामगना लरना नष्ट इत्युय धर्मोपा  
हायमा लरने उपाध्याय पदनी पूजा यन् ॥ ७ ॥

छादशाङ्गधुतधारान् शरान् लरनन ।  
निवेशयाम्युपाध्यायान् श्रित्ति ईदन् ग्ट ॥ ७ ॥  
श्रीधर्मशास्त्रप्यनिराप्रशान्त्यान् शरान् पदधनि ।

अध्यापकास्ता न परानपये मिदलान् परिपूत्रयामि ॥ ८ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्योनम स्वाहा, ब्रह्मचर्या श्रित्तिशातरख  
तरफ उपाध्याय पद स्थापनानी पूजा करे, सर्व इव इदन्, पउ रकेरीम  
धीमा, काला रंगना गोला काल रन इदन्, काल रन  
लाडवा रानपट, २१ अरिष्ट रन, इत्युय धर्मोपा  
साधुपदनी पूजा आप्रमाणे कइ,

द्व्याख्यादि नम कृषायात् नमः ॥  
द्विमानस्य

वैराग्यमर्तव्यचमि प्रसिद्ध सत्य तपोद्वादशाधा शरीरे ।

येषामुदस्यचगतान् सुरतान् परिभ्रान् साधून् सदा तान्  
पूजयामि ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सर्व साधुभ्यो नम स्वा आप्रमाणे कहीने उतर दिशा  
तरफ साधुपद स्थापनानी पूजा करे सर्व द्रव्य चढाये, पछे रक्तेरीमा  
सफेद गोला, सफेद वस्त्र, सफेद घञा, ६७ मोती, जल्पुष्प धूप  
दीपादि हाथमा लहने आप्रमाणे दशन पदनी पूजा कहे—

जिने द्रोक्तमतध्रदालक्षणेदर्शने यजे ।

मिध्यात्वमथन शुद्धयस्नमीशाने मदुले ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सम्यक्त्यदर्शनाय नम स्वाहा, आ प्रमाणे कही इशान  
खुणे दर्शनपदनी स्थापना पूजा करे, पछे रक्तेरीमा ५१ मोती, सफेद  
गाला, धञा, वस्त्र, धपदीप नैवेद्य सर्व अपद्रव्य हाथमा लहने आ  
प्रमाणे पूजा कहे—

अशेषसमद्रव्यपर्यायमवारभासकम् ।

ज्ञानमाप्नेयपत्रस्य पूजयामि द्वितानदम् ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं समनत्यज्ञानाय नम , स्वाहा आ प्रमाणे कही अग्नि  
कोणमा ज्ञानपदस्थापनानी पूजा करे, सर्व द्रव्य चढाये, पछे रक्तेरीमा  
७० मोती सफेद गोला सफेद वस्त्र सफेद धञा जल्पुष्प  
धूपदीपादि हाथमा लहने चारित्र पदनी पूजा कहे—

स सामायिकादिर्भेदैश्चारित्र चारु पचधा ।

सस्थापयामि पठार्थ पत्रेह नैरुते ममात् ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् चारित्राय नम स्वाहा, आ प्रमाणे कहीने नेरुत्य  
गुणामा चारित्र पद स्थापनानी पूजा करे, पछे रक्तेरीमा १० मोती  
सफेद गोला सफेद वस्त्र सफेद धञा, तथा जल्पुष्प धूपदीपादि  
हाथमा लहने तपपदनी पूजा आ प्रमाणे करे—

द्विधाद्वादशाधामिध्र पुतेपत्रतप स्ययम

निधाययामि भक्त्यात्र वायथा दिशि शर्मदम् ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं समस्य तपने नम स्वाहा आ प्रमाणे कहीने वायथ  
गुणामा तपपदनी स्थापना पूजा करे,

## अथ अर्घ्यपूजा

नि स्वेदत्यादिदीव्यातिशयमयतनुन् धीजिने द्रान् सुसिद्धान्  
समस्त्वादिप्रष्टाष्टकमृदाचारसापश्चसृग्न् ।

शास्त्राणि प्राणि रक्षाप्रवचना सुंदराण्यादि यज्ञ

तन् सिद्धयै पाठकाना मुनिपनिसहिता नर्चयाम्यघदान् ॥ १४ ॥

इयमष्टदलंपद्म पूरयेद्दहन्नादिभि ।

स्नाहाने प्रणम्यश्चपदैर्निघ्ननिवृतये ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अहं अमिथा उस्ता सम्यग् दर्शनज्ञानचारित्रि तपसंभ्यो  
ह्रीं श्रीं अहं परमेष्ठिने परमनाथ परमदेवाधिदेवाय परमार्ह परमान्त  
चतुष्टय परमात्मने तुभ्य नम । आ प्रमाणे मन्त्रमणीने अर्घ्य आप ।  
इति प्रथम वलय मूलपूजाविधि ।

## अथ द्वितीय वलयपूजा

प्रथम वलयमा एकमयमा चारदिशा, चारविदिशा, आ प्रमाणे अष्ट  
दलकमलना आकारे नत्र कोठा मंडलना मध्यभागमा होय छ ते नी  
पुर्वोक्तविधियी पूजा कर, पछे बीजा वलयमा १६ कोठा होय, जेमा  
एक कोठाना आतरे आठ कोठामा अर्गादि जाठ चर्ग स्थापना करे,  
तथा एक एक कोठामा घचमा पाली रहेल कोठामा अनाहन जेम-  
ॐ ह्रीं नमो अरिहताण आतु पद स्थापना कर, पछे एक रकेरीमा  
साकर तथा लविग तथा एक रकेरीमा मोटी ट्राप, लइने उभा रहेतु  
१ तथा ॐ ह्रीं नमो अरिहताण कहीने साकर लविग चढावये तथा  
तथा आठवर्गमा ट्राप चाढाये, अ, आ, इ, ई उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ,  
लृ, ए, ऐ, ओ, औ, अ अ ॐ ह्रीं स्वर चर्गाय नम आठेमाणे १६  
सोल ट्राप चढाये, २ ॐ ह्रीं नमो अरिहताण साकर लविग चढाये,  
३॥ क ख, ग, घ ङ, ॐ ह्रीं व्यजन चर्गाय नम १६ ट्राप चढाये  
४। ॐ ह्रीं नमो अरिहताण ७ च छ ज झ ञ, ॐ ह्रीं चवर्गायै नम  
६ ॐ हा नमो अरिहताण ७ ट ठ ड ढ ण, ॐ ह्रीं टवर्गायै नम ८  
ॐ ह्रीं नमो अरिहताण ९ तथदधन ऊँ ह्रीं तवर्गाय नम १० ॐ ह्रीं  
नमो अरिहताण ११ पफयमम, ॐ ह्रीं पवर्गायै नम १२ ॐ ह्रीं नमो  
अरिहताण १३ यरलय, ॐ ह्रीं यवर्गायै नम १४ ॐ ह्रीं नमो अरिह  
ताण १५ शपसह ॐ ह्रीं शवर्गायै नम ॥ १६ ॥

पेग अथवायी पथगसुधि दूरक धर्ममा स्वाड सोल द्राग चद्रोये  
 तथा यरलयमा ३० द्राग चद्रोये, तथा शयसदमा ३२ द्राग चद्रोये,  
 इति द्वितीयलय पूजा

अथ तृतीयलयलक्षि पद पूजन विधि ।

तीजायलयमा चारदिशा, चार विदिशा, आठ परमेष्ठि पदनी  
 स्थापनाता आठ कोटरर अने धा आठ काटानी धचमा लण लण  
 यत्रयाशरकरे प्रण यत्रयाशरमा २४ स्थाना थाय, एक एक कोटामा  
 धरे लक्षिपद स्थापन कर्याथी २४ स्थानमा ४८ लक्षिपदनी स्थापना  
 कर्या आठ परमेष्ठिपदमा ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः स्वाहा धा प्रमाणे  
 आठ धरत कहीने आठ धीजोरा चद्रोये कारणके तेनो रगयीजोरा  
 जेवाछे पछे लक्षिपदना नामयोगीने ४८ कारको चद्रोय, मामा ४८  
 लक्षिनो धनी कारेक जयो छे

- १ ॐ ह्रीं अर्हणमो अरिहनाण
- २ ॐ ह्रीं अर्हणमो बोहिजिणाण
- ३ ॐ ह्रीं अर्हणमो परमोहि जिणाण
- ४ ॐ ह्रीं अर्हणमो सत्र्याणि जिणाण
- ५ ॐ ह्रीं अर्हणमो अणतोहि जिणाण
- ६ ॐ ह्रीं अर्हणमो पुत्रघुणिण
- ७ ॐ ह्रीं अर्हणमो धायपुस्सिण
- ८ ॐ ह्रीं अर्हणमो पयाणुसारिण
- ९ ॐ ह्रीं अर्हणमो आग्नीविसाण
- १० ॐ ह्रीं अर्हणमो दिठीविसाण
- ११ ॐ ह्रीं अर्हणमो समिन्नसोयाण
- १२ ॐ ह्रीं अर्हणमो सवसंयुद्धाण
- १३ ॐ ह्रीं अर्हणमो पत्तेय युद्धाण
- १४ ॐ ह्रीं अर्हणमो धाहियुद्धाण
- १५ ॐ ह्रीं अर्हणमो रुज्जुमहण
- १६ ॐ ह्रीं अर्हणमो रिउलमहण

- १७ ॐ ह्रीं अँहणमो दसपुत्रीण  
 १८ ॐ ह्रीं अँहणमो चउदसपुपुत्रीण  
 १९ ॐ ह्रीं अँहणमो अटगनिमितकुशलाण  
 २० ॐ ह्रीं अँहणमो विउत्पण हट्टिपत्ताण  
 २१ ॐ ह्रीं अँहणमो नि जाहराणा  
 २२ ॐ ह्रीं अँहणमो नारण लखिण  
 २३ ॐ ह्रीं अँहणमा पण्णास भणाण  
 २४ ॐ ह्रीं अँहणमो आगाम गामिण  
 २ ॐ ह्रीं अँहणमो खीरामरीण  
 २६ ॐ ह्रीं अँहणमा सत्पिम्बणाण  
 २७ ॐ ह्रीं अँहणमो महुआसत्त्याण  
 २८ ॐ ह्रीं अँहणमो अमियाम्पणाण  
 २९ ॐ ह्रीं अँहणमो सिद्धायणाण  
 ३० ॐ ह्रीं अँहणमा भगवयामदइ महावीरधरमाण  
 बुद्धरिम्भिण  
 ३१ ॐ ह्रीं अँहणमो उम्गतवाण  
 ३२ ॐ ह्रीं अँहणमो अग्निपणमहाणस्त्रियाण  
 ३३ ॐ ह्रीं अँहणमो घट्टमाणाण  
 ३४ ॐ ह्रीं अँहणमा दित्तवाण  
 ३ ॐ ह्रीं अँहणमो तत्तवाण  
 ३६ ॐ ह्रीं अँहणमो महात्तवाण  
 ३७ ॐ ह्रीं अँहणमो घोरत्तवाण  
 ३८ ॐ ह्रीं अँहणमो धारगुणाण  
 ३९ ॐ ह्रीं अँहणमो घोरपरिक्कमाण  
 ४० ॐ ह्रीं अँहणमो घोरगुणथभयारिण  
 ४१ ॐ ह्रीं अँहणमो धामास्सट्टिपत्ताणं  
 ४२ ॐ ह्रीं अँहणमो एत्तेग्गिपत्ताण  
 ४३ ॐ ह्रीं अँहणमो जल्लुग्गिपत्ताण  
 ४४ ॐ ह्रीं अँहणमो विण्णोत्तट्टिपत्ताण

- ४ ॐ ह्रीं अहणमा मय्योग्यपिपत्तार्ण  
 ४१ ॐ ह्रीं अहणमो मणयलीण  
 ४३ ॐ ह्रीं अहणमा वयणयलीण  
 ४८ ॐ ह्रीं अहणमा वाययलीण

ॐ ह्रीं अहं अडयाग्लधिपदभ्यो नम आर्यीरिति लधिपदना नाम  
 योलीने तीजा चाया, अन पाचमा पलयमा, चारक ४८, चढारपी, पछे  
 मण्डलना गलाना स्थानमा ह्रीं कारना स्थापना करयी, अन त्यायी  
 नादा व्रण घण्य, मंडनी चार तरफ र्पी, अने नीचे श्रीं लखयो  
 छटावत्यमाना आठ दिशामा आठ गुरुपादुफानी स्थापना करयी

- १ ॐ ह्रीं श्रीं अहपादुक्भ्यो नम  
 २ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धपादुक्भ्यो नम  
 ३ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्यपादुक्भ्यो नम  
 ४ ॐ ह्रीं श्रीं गुरुपादुक्भ्यो नम  
 ५ ॐ ह्रीं श्रीं परमगुरुपादुक्भ्यो नम  
 ६ ॐ ह्रीं श्रीं अष्टगुरुपादुक्भ्यो नम  
 ७ ॐ ह्रीं श्रीं अनन्तागुरुपादुक्भ्यो नम  
 ८ ॐ ह्रीं श्रीं अनन्तान्तगुरुपादुक्भ्यो नम

ॐ ह्रीं अष्टगुरुपादुक्भ्यो नम स्वाहा

आ प्रमाण पालीन आठ दाडः तथा चुरमाना आठ लाइया  
 चढायवा

मातमा वलयमा जयादिदेवीयोनी स्थापना करवी.

- १ ॐ ह्रीं जयायै नम स्वाहा      ५ ॐ ह्रीं जययै नम स्वाहा,  
 २ ॐ ह्रीं जम्मायै नम स्वाहा      ६ ॐ ह्रीं माहायै नम स्वाहा,  
 ३ ॐ ह्रीं विजयायै नम स्वाहा      ७ ॐ ह्रीं अपराजितायै नम स्वाहा  
 ४ ॐ ह्रीं रथमायै नम स्वाहा      ८ ॐ ह्रीं अधायै नम स्वाहा  
 आ प्रमाण आठ नारंगो तथा युदिना अथवा चणानु लाइ चढानया  
 आत्मा वलयमा सोलविद्यादेवीनी स्थापना करवी  
 १ ॐ ह्रीं रौहिण्यै नम      २ ॐ ह्रीं प्रहस्प्यै नम

- ३ ॐ ह्रीं यज्ञशुभलायै नमः  
 ४ ॐ ह्रीं यज्ञाकुंशायै नमः  
 ५ ॐ ह्रीं यज्ञेश्वर्यै नमः  
 ६ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायै नमः  
 ७ ॐ ह्रीं फाल्गुने नमः  
 ८ ॐ ह्रीं महाफाल्यै नमः  
 ९ ॐ ह्रीं गार्ग्यै नमः

- १० ॐ ह्रीं गंधायै नमः  
 ११ ॐ ह्रीं सज्जाम्ब महाज्जालायै नमः  
 १२ ॐ ह्रीं मानयै नमः  
 १३ ॐ ह्रीं वैरुट्टायै नमः  
 १४ ॐ ह्रीं अल्लुप्तायै नमः  
 १५ ॐ ह्रीं मानस्यै नमः  
 १६ ॐ ह्रीं महामानस्यै नमः

आ प्रमाणे बोलोने सोल नारंगी, तथा सोल मोतीचरना लाडवा चढावे

नममा वलयामा टागा पडखे २४ शासन देवी ओनी  
 स्थापना करवी

- |                      |                       |
|----------------------|-----------------------|
| १ ॐ चक्रेश्वर्यै नमः | १३ ॐ विदितायै नमः     |
| २ ॐ अनित्यलायै नमः   | १४ ॐ अकुशायै नमः      |
| ३ ॐ दुरितायै नमः     | १५ ॐ कल्पार्थ्यै नमः  |
| ४ ॐ काल्यै नमः       | १६ ॐ निजाण्यै नमः     |
| ५ ॐ महाफाल्यै नमः    | १७ ॐ वलायै नमः        |
| ६ ॐ शामायै नमः       | १८ ॐ धारिण्यै नमः     |
| ७ ॐ शांतायै नमः      | १९ ॐ धरणाप्रियायै नमः |
| ८ ॐ ध्रुवुष्ट्यै नमः | २० ॐ नरदत्तायै नमः    |
| ९ ॐ सुताग्न्यायै नमः | २१ ॐ गांधार्यै नमः    |
| १० ॐ अशोकायै नमः     | २२ ॐ अभिजायै नमः      |
| ११ ॐ मानयै नमः       | २३ ॐ पद्मावत्यै नमः   |
| १२ ॐ चण्डायै नमः     | २४ ॐ सिद्धायिकायै नमः |

पृथी दक्षिण दिशा २४ यक्षी स्थापना करवी

आ प्रमाणे बोलोने घरत लगाटेटी २४ सोपारी, चढावरी

- |                    |                      |
|--------------------|----------------------|
| १ ॐ गोमुखायै नमः   | ४ ॐ यश्व नायकायै नमः |
| २ ॐ महायज्ञायै नमः | ५ ॐ तुषर्यै नमः      |
| ३ ॐ त्रिमुखायै नमः | ६ ॐ कुसुमायै नमः     |



- |                   |                     |
|-------------------|---------------------|
| ७ ॐ मातगाय नम     | १६ ॐ गरुडाय नम      |
| ८ ॐ विजयाय नम     | १७ ॐ गधवाय नम       |
| ९ ॐ अजिताय नम     | १८ ॐ यक्षराजाय नम   |
| १० ॐ ब्रह्मणे नम  | १९ ॐ कुचेराय नम     |
| ११ ॐ यक्षराजाय नम | २० ॐ वरुणाय नम      |
| १२ ॐ कुमाराय नम   | २१ ॐ भृकुट्यै नम    |
| १३ ॐ पण्मुलाय नम  | २२ ॐ गोमेधाय नम     |
| १४ ॐ पातालाय नम   | २३ ॐ पाश्वयक्षाय नम |
| १५ ॐ विघ्नराय नम  | २४ ॐ ब्रह्मशातये नम |

आ प्रमाणे घोलिने २४ सोपारी चढावे

तथाचारे दिशामा चार द्वारपालनी स्थापना करे

पूर्वदिशामा—१ ॐ मुकुन्दाय नम दक्षिण दिशामा २ ॐ अंजनाय नम पश्चिमदिशामा ३ ॐ वामनाय नम उत्तर दिशामा ४ ॐ पुष्पदताय नम आ प्रमाण घोलिने चारे दिशामा पीला चणाना फाफडा तथा घलिवाकुला चढायना

पठे चार त्रिदिशामा वीरनी स्थापना करवी

- |                   |                |
|-------------------|----------------|
| १ ॐ मणि भद्राय नम | ३ ॐ कपिलाय नम  |
| २ ॐ पूण भद्राय नम | ४ ॐ पिंगलाय नम |

आ प्रमाणे घोलिने काला घलीवाकुला तथा काला तलना लाडू चढावना तयारवादि पूण कलशाना आकारे करेल, सिद्ध चक्रना गणना ठेकाण नव निधाननी स्थापना करवी, तथा सोनु चादि आदि कलशाओमा गेरुड नाणु घालिने स्थापना करवी

- |                   |                  |
|-------------------|------------------|
| १ ॐ नैसर्गिकाय नम | ५ ॐ महापद्माय नम |
| २ ॐ पण्डुकाय नम   | ६ ॐ कालाय नम     |
| ३ ॐ पिंगलाय नम    | ७ ॐ महाकालाय नम  |
| ४ ॐ सवरत्नाय नम   | ८ ॐ माणवाय नम    |
| ९ ॐ शंखाय नम      |                  |

स्वारवाद् कालाफल ( काशीफल ) हाथमा लहने ॐ ह्रीं वि  
मलस्वामिने नम एक कहीने चढायु पातु यतीया काला  
फल ( काशीफल ) हाथमा लहने ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नम  
कहीने चढायु, पछे तीर्त्ताथार कालाफल हाथमा लहने ॐ  
ह्रीं चक्रेश्वर्यै नम कहीने चढायु, पछे चौथी थार कालाफल  
हाथमा लहने ॐ ह्रीं सिद्धायिकाय नम कहीने चढायु त्पारवाद्  
दशदिशाओमा दशदिगूपालनी स्थापना करयी धने थापणी यथा  
शक्ति यण प्रमाणे यत्र नैवेद्य चढायवा अथवा यधने समान  
चढायु

### दशदिगूपाल पूजा

१ ॐ इन्द्राय नम कनक यण—पल्लुयत्र चन्दन केशर,  
धूप दीप तथा द्राघ, पान सोपारी, राखड नाणु आदि द्रव्य  
चढायवा, २ अग्निहोत्रमा ॐ अग्नये नम लाल यत्र तथा  
रोकड नाणु धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन चढायु ३ दक्षिण  
दिशामा ॐ यमाय नम काला रगनु यत्र, तथा राखड नाणु  
धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन चढायु ४ नैरुयकुणमा धुसर यणनु  
यत्र तथा रोकड नाणु धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन चढायु ५  
पश्चिम दिशामा ॐ यरुणाय नम धुसरयण यत्र, तथा धुसर  
घर्णनु नैवेद्य धूप दीप जल चन्दन चढायु ६ घायय कुणम ॐ  
घायवे नम घुटुर्णनु यत्र तथा धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन चढा  
यवा ७ उत्तर दिशामा ॐ कुंभराय नम सफेद यत्र तथा  
धुप दीप नैवेद्य जल चन्दन रोकड नाणु चढायवा ८ इशान कोणमा  
ॐ ईशानाय नम सफेद यत्र, रोकड नाणु धुप दीप नैवेद्य जल  
चन्दन चढायु ९ अत्रा दिशि ॐ नागाय नम, सफेद यत्र  
धुप दीप नैवेद्य जल चन्दन रोकड नाणु चढायु १० उच्च दिशामा  
ॐ ब्रह्मणे नम सफेद यत्र धुप दीप नैवेद्य जल चन्दन रोकड  
नाणु चढायु

त्पारवाद् निचे पडयी स्थान नधग्रहनी स्थापना करयी

## नवग्रह स्थापना

१ ॐ सूर्याय नम लाल वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन सर्व  
द्रव्य रोम्ड नाणु चढावतु २ ॐ सोमाय नम सफेद वस्त्र  
धुप दीप नैवेद्य जल चंदन सर्वद्र ५ रोम्ड नाणु चढावतु ३ ॐ  
भोमाय नम लाल वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन नैवेद्य सप्त  
द्रव्य तथा रोम्ड नाणु चढावतु ४ ॐ बुधाय नम लाला रंगनु  
वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन तथा रोम्ड नाणु चढावतु ५  
ॐ बृहस्पतये नम पीतु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन रोम्ड  
नाणु चढावतु ६ ॐ शुक्राय नम सफेद वस्त्र धुप दीप नैवेद्य  
जल चंदन रोम्ड नाणु चढावतु ७ ॐ शनिश्चराय नम अस्मानी  
रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन तथा रोम्ड नाणु चढावतु  
८ ॐ राहवे नम फाग रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन  
तथा रोम्ड नाणु चढावतु ९ ॐ कतये नम पत्ररंगी वस्त्र  
धुप दीप नैवेद्य जल चंदन रोम्ड नाणु चढावतु

आ प्रमाणे यत्रि विधि करीने पठे नवपदजीनी पूजाकहे भणावे,  
तथा नवपदजीना आरती उतारे पठे नवपदजीनु चयवदन करे,  
उपर सनाण महोमयाण सापाडिहेरासणसठियाण ।

सद स्तनाण दियम् जणाण नमो नमो होड सया जिणाण ॥१॥

जो धुरिसिरिःरिहतमूःदढ पैट्टिपडिओ सिद्धमूरि उत्राया  
साहुचिहु सागरिडिआ । दसण नाण चरित्त तवहि पडसा हे सुदरु,  
तत्तम्पर सग्ग लद्धिगुरुपयदलडरु, जम्प जफवणी पमुहसुर  
कुमुभेहि मलक्कियओ जोसिद्धचळ गुरु कपतरु अह मन्वंलिय  
दियओ ॥ २ ॥ जम्पि नमुयुण जायति० जायत० नमोऽर्हत्त्० उप  
ससनाण० स्तयन जयवीपराय अरिहत चे० १ नत्ररानोरा उसग्ग  
थोय नवपदनी कहेनी पठ गुरुनी पासे आरिने वासक्षेपयो क्षान  
पूजा करे, रोम्ड नाणु चढावे, तथा शक्ति प्रमाणे सार्धमिन् वारसत्प  
करे—अनाय आयकोनु पोषण कर

इति श्री नरपरु मडल पूनन विधि

आ ओली—नक्षत्रद्वयी तपस्या फोई श्रीमत्—जैन ग्रहम्यकरे तो तेणे छ छ महिने आ मंडलनी पूजा विधि, उपर वहेल प्रमाणे करे तथा तपस्या सादाचार घष करी, पूण थये उद्यापन नव नव उपकरण, रागवा, यथाशक्ति उद्यापन द्रव्य क्षेत्र भाव थी करे परंतु अनाथ धावनी रक्षाजिर्णोद्धार आवा तप निमित्ते करता रहेवु

### दशादिग्पाल निमर्जन विधि

ॐ नमो इन्द्राय, पूर्वदिग् अधिष्टाय, पेरायण वाहनाय सहस्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकाय अस्मिन् जम्बूद्विपे अमुक नगरे, अमुकक्षेत्रे अमुक महात्मने, सर्वोपद्रवाद्रक्षार्थं पूजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ इन्द्राय नम , २ आग्निदुर्गमा ॐ नमो अग्नि भूतये शक्ति हस्ताय सायु० सरा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोपद्रवाद् धर्त्तं पूजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ अग्नि भूतये नम ३ दक्षिणदिशामा ॐ नमो यमाय, दक्षिणदिग् अधिष्ट काय, महिषनाहनाय, दण्डायुधाय, कृष्णभूतये सायु० सरा० सपरि० अस्मि० सर्वोपद्रवाद् रक्षार्थं पूजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ यमाय नम ४ नैरुतदुर्गमा ॐ नमो नैरुताय, गङ्गाहस्ताय सायु० सरा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोपद्रवाद् धर्त्तं पूजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ नैरुताय नम , ५ पश्चिम दिशामा ॐ नमो वरुणाय पश्चिमदिग् अधिष्टाय मकर वाहनाय, सायु० सरा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोपद्रवाद् धर्त्तं पूजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ वरुणाय नम ६ घायत्र दुर्गमा ॐ नमो घायत्रे घाय वाधिभूतये, पद्महस्ताय हस्तिनाहनाय, सायु० सरा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोप० धर्त्तं पूजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ घायत्रे नम , ७ उत्तरदिशामा ॐ नमो धनदाय, उत्तरदिग् अधिष्टायकाय, नखाहनाय, गदाहस्ताय, सायु०

## नवग्रह स्थापना

१ ॐ सूर्याय नमः लाल चक्र धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन सर्व  
 द्रव्य रोकड नाणु चढायतु २ ॐ सोमाय नमः सफेद चक्र धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन सर्व  
 द्रव्य रोकड नाणु चढायतु ३ ॐ भौमाय नमः लाल चक्र धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन सर्व  
 द्रव्य तथा रोकड नाणु चढायतु ४ ॐ बुधाय नमः लीला रंगनु  
 चक्र धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन तथा रोकड नाणु चढायतु ५  
 ॐ वृश्चिकाय नमः पीतु चक्र धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन रोकड  
 नाणु चढायतु ६ ॐ शुक्राय नमः सफेद चक्र धूप दीप नैवेद्य  
 जल चन्दन रोकड नाणु चढायतु ७ ॐ शनिश्चराय नमः अस्मानी  
 रंगनु चक्र धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन तथा रोकड नाणु चढायतु  
 ८ ॐ राहवे नमः काला रंगनु चक्र धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन  
 तथा रोकड नाणु चढायतु ९ ॐ कर्तरे नमः पथरगी चक्र  
 धूप दीप नैवेद्य जल चन्दन रोकड नाणु चढायतु

आ प्रमाणे यत्र विधि करीने पठे नवपदजीनी पूजाकहे-भणाये,  
 तथा नवपदजीना आरती उतारे पछ नवपदजीतु चयचन्दन करे,  
 उपर सन्नाण महोमयाणं नव्याडिहगमनमडियाणं ।

सद ससण दियस नणाण नमो नमो होउ सया जिणाण ॥१॥

जो धुरिसिरिअरिहंतमूट्टड पंठिपइठिओ सिद्धसूरि उवञ्जाय  
 साहुचिहु सागरिठिओ । दसन नाण चरित्त तयहि पडसा ह सुदरु,  
 तत्तम्पर सग्ग लद्धिगुरुपयदलडवरु, जम्प जम्पणी पमुहसुर  
 कुमुभेहि अलंक्रियओ जोसिद्धचल्ल गुरु कम्पतरु अह्म मनरंजिय  
 दियओ ॥ २ ॥ जम्पिधि नमुयुण जायति० जायत० नमोऽर्हन्० उप  
 न्नसन्नाण० स्तयन जयरीपराय अरिहंत चे० १ नवग्रहनोका उसग्ग  
 थोय नवपदनी कहरी पठ गुरुनी पाये आवीने घासक्षेपयी धान  
 पूजा करे, रोकड नाणु चढाये, तथा शक्ति प्रमाणे साधर्मिक वासल्य  
 करे—अनाथ श्रावकोनु पोषण करे

इति श्री नवग्रह मंडल पूजन विधि

२ ॥ एम कही प्रभुना जानुए पूजा करीए ॥ गाया ॥ निम्मल ताणपया-  
सकर निम्मल गुण सरन ॥ निम्मल धमोयपरमकर, सो परमणा घन  
॥ ३ ॥ टाल ॥ लामा लंरु प्रशशक नाणी, भविचन तारण  
जेहनी घाणी ॥ परमानद तपी। निशाणी, नसु भगने मुज मति  
टहराणी ॥ कुसुमाजलि मेले नेम जिणदा ॥ तो० ॥ कु०  
॥ ३ ॥ एम कही प्रभुना ये हाथे पूजा करीए ॥ गाया ॥ ज सिज्जा  
सिज्जनि जे निज्जसनि अणत ॥ जसु ब्यालयन टपिय मणसो  
सेरो अरिहत ॥ ४ ॥ टाल ॥ शिवसुग कारण जह भिकाले,  
सम परिणाने जगत नीहाने ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इद्रादिक  
जसु चरण पबाले ॥ कुसुमानाले मेठो पास जिणदा ॥ ता० ॥ कु०  
॥ ४ ॥ एम कही प्रभुना गभाए पूजा करीए ॥ गाया ॥ सम्महिटी  
देस जय साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उयजाय मुणि, जो  
निम्मल आधार ॥ १ ॥ टाल ॥ चउविह मघे जे मन धार्यु ॥  
मोक्ष तणु कारण निरघार्यु ॥ रिविइ कुसुम वर जानि गहेयी,  
तम् चरणे प्रणमन ठपेयी ॥ कुसुमाजलि मेलो वीर जिणदा ॥  
॥ ५ ॥ एम कही प्रभुन मस्तके पूजा करीए ॥ इति

गाया ॥

१ छद् ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर । नमिय  
रुल्लाणकरिहि संठपिय करिस धम्म सुपरित्त ॥  
इग सत्तरि तिथ्यकर, एक समय विहरति महीयल ॥  
इगवीस जिण जम्म समय इगदसि ॥ भत्तिय भावे  
सुजगीस ॥ १ ॥

॥ टाल बीजी ॥

सवा० सपरि० अस्मि० अमु० अमु० सर्वोप० यलि पुजा गृह  
 २ स्वस्थाने गच्छ ३ स्वाहा ॐ घनदाय नम ८ इशान कुणमा  
 ॐ नमो इशानाय, त्रिशूळ हस्ताय ईशानाधिराये धृपमया  
 घहनाय सयु० सवा० सपरि० अस्मि० अमु० अमु० सर्वो० यलि  
 पुजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ इशानाय नम ०  
 उग्र विशामा ॐ नमो ब्रह्मणे, राजहंसमाहनाय, उर्ध्वगिरा  
 धिष्ठापनाय सायु० सवा० सपरि० अस्मि० अमु० अमु० सर्वो०  
 यलि पुजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ नमो ब्रह्मणे १०  
 अधो लोकमा ॐ नमो नागाय पातालनिवासाय, पद्ममाहनाय,  
 सायु० सवा० सपरि० अस्मि० अमु० अमु० सर्वोप० यलि पुजा गृह  
 २ स्वस्थाने गच्छ ० स्वाहा, ॐ नागाय नम

इति दश दिग्पालविभर्जनविधि

॥ श्री देवचद्रजी कृत स्नात्रपूजा प्रारभ्यते ॥

॥ पारडी गाथा ॥ ढाल पहेली ॥

देहा ॥ चउतिसे अतिमयजुभो घचनादिदाय सुत्त ॥ सोपरमेसर  
 देयी भवि, सिंहासन सरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासन घेडा  
 जग भाण, दली भविक जन गुण माणे पाण ॥ जे दीडे तुज  
 निप्रल नाण ाहीप परम महादय ठाण ॥ कुसुमाजलि मलो  
 आदि जिणदा तोप चरण कमल सेव चोमड इदा ॥ कु० ॥ १ ॥  
 चौथीस वैरागी, चौथीस सोमागी, जिणदा ॥ कु० ॥ एम कही  
 प्रभुना चरणे पुजा करीप ॥ गाथा ॥ जो नियगुण पज्जव  
 रम्हो, तसु अनुभव पगत ॥ सुद्ध पुगल आरोपता, जो तसु रंग  
 निरत्त ॥ २ ॥ ढाल ॥ जो निज आत्म गुण आणदा, पुगल  
 सग जेह अपदी ॥ जे परमेसर निज पद लीन पूजे प्रमाणमा  
 मय अदीन ॥ कुसुमाजलि मेलो शानि जिणदा ॥ ता० ॥ कु० ॥

२ ॥ एम कही प्रमुना जानुर पूजा करीए ॥ गाथा ॥ निम्मलनाणपया  
 सकर निम्मल गुण सरत्त ॥ निम्मल धमोयणसरत्त, सो परमापा धन्न  
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ लोमा लोक प्रफाशक नाणी, भविनन तारण  
 जेहनी धाणी ॥ परमानद तणी, निशाणी, तसु भगते मुज मति  
 ठहराणी ॥ कुसुमाजलि मेले नेम जिणदा ॥ तो० ॥ कु०  
 ॥ ३ ॥ एम कही प्रमुना थे हाथे पूजा करीए ॥ गाथा ॥ जे मिज्जा  
 सिज्जति जे मिज्जंसति अणत्त ॥ जसु आलवन अविमणसो  
 सेवो अरिहत्त ॥ ४ ॥ ढाल ॥ शिवसुत्त कारण जेह त्रिकाले,  
 सम परिणामे जगत नीहाले ॥ उत्तम साधन माग देवाडे, इद्रादिक  
 जसु चरण पयात्रे ॥ कुसुमानलि मेले पास जिणदा ॥ ता० ॥ कु०  
 ॥ ४ ॥ एम कही प्रमुना धमाए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ सम्मदिष्टी  
 देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवज्जाल्य मुणि, जो  
 निम्मल आधार ॥ ५ ॥ ढाल ॥ चउविह सघे जे मन धार्यु ॥  
 मोक्ष तणु कारण निरधार्यु ॥ विविड कुसुम घर जाति गहवी,  
 तसु चरण प्रणमत टरेवी ॥ कुसुमाजलि मेले वीर जिणदा ॥  
 तो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ एम कही प्रमुन मस्तके पूजा करीए ॥ इति  
 पालडी गाथा ॥

॥ वस्तु छंद ॥ मयल जिनवर सयल जिनवर । नमिय  
 मनग्ग, फल्लणरुविहि संअविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥  
 सुंदर सय इग सत्तरि तिथ्यकर, एक समय चिहरति महीयल ॥  
 चरण समय इगवीस जिण जम्म समय इगवीस ॥ भत्तिय भावे  
 पूजाकरो मघ सुजगीश ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ ए देशी ॥

॥ भव श्रीजे समञ्जित गुण रम्या, जिनभक्ति प्रमुत्त गुण परिणम्या  
 तजी इद्रियसुत्त आशसना करी स्थानर वीरानी सेवना ॥ १ ॥  
 अति राग प्रशस्त प्रभावता मन भावना पदवी भावता ॥ सवि जीव  
 करु शासनरसी, इसी भावदया मन उहसी ॥ २ ॥ लही परिणाम  
 पद्वुं भदु, नीपजावी जिनपद निर्भदु ॥ आयुवघ वचे एक भव करी



थद्वा सप्रेग ते धिर धरी ॥३॥ त्याधी चवीय लहे नरभय उदार, भक्त  
 तेम पेरवतेज सार ॥ महात्रिभेहे विजये वरु प्रधान, मध्य रडे अ  
 तरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ढाल व्रीजी ॥

॥ पुण्ये सुपनह देखे, मन माहे ह्य विशेषे ॥ गजवर उज्ज्वल  
 सुंदर, निर्मळ धूपम मनोहर ॥ १ ॥ निर्मय केसरी सिंह, लक्ष्मी  
 अतिही अरीह ॥ अनुपम फुलनी माल, निर्मळ शशी सुकुमाल ॥ २ ॥  
 तेजे तरणि अति दीपे, इद्रभ्रना जग व्यापे ॥ पूरण कलश पंदूर,  
 पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥ अग्यारमे रयणाथर, देख माता गुण सायर ॥  
 चारमे भुवन विमा, तेरमे अनुपम रत्नानिधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा  
 निरधूम, देवे मानाजी अनुपम ॥ ह्यो रायने भावे, राजा अरथ  
 प्रभाशे ॥ ॥ जगपति जिनवर सुखर, होशे पुत्र मनोहर ॥ इद्रा  
 दिक जसु नमशे सफल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥ वस्तु छद् ॥ पुण्य  
 उदय २, उपना जिननाह, माता तप रयणी सम, देख सुपन हरखती  
 जागीय ॥ सुपन वही निज कतने, सुपन अरथ सामगे सोभागीय ।  
 त्रिभुन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान । इद्रादिक जसु पाय  
 नमी, करशे सिद्धि विमा ॥ १ ॥

॥ ढाल चोयी ॥

॥ चंद्रानलानी देशीमा ॥

॥ सोहमपति श्रान्त कपीयो ए, देह अवाधि मन बाणदियो ए ॥  
 निजअतम निर्मळ करण काज, भवजलतारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥  
 भवअडनी पारण सयराह केवल नाणाइय गुण अगाह ॥ शिखसाधन  
 गुण अंगुरो जेह, कारण उलट्यो आसाढी मेह ॥ २ ॥ हरख विकसी  
 तव गमपाय, बलयादिना निज तनु न माय ॥ सिंहासनथी उठ्यो  
 सुरेंद प्रणमतो जिन आनदकद् ॥ ३ ॥ सग जम पय सामो आरी  
 तथ, करी अजत्रिय प्रणमीय मत्य ॥ मुखे भाखे ए क्षण बाज सार,  
 तिय लाय पदु कीडो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विप  
 यानल तापित तुम सपेव ॥ नसु शातिकरण जलधर नमान मिथ्या  
 विप चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव सफल तारण समत्य प्रगट्यो

तसु प्रमणी हुवा सनाथ ॥ एम जपी शक्र स्तत्र करेपि, तव देव  
 देवी हरम् सुणपि ॥ ६ ॥ गाव तव रभा गीत गान, सुरलोक हुवो  
 मगल निघान नरक्षेत्रे आरज यश ठाम निनराज चधे सुर ह्य घाम  
 ॥ ७ ॥ पिना माता घरे उत्तव अशेष, निनशासन मगल अति  
 विदेश ॥ सुगपति देवादिक् हर्ष सग, सयमर्थो जनने उमग ॥ ८ ॥  
 शुभ वेग लयने तीर्थनाथ जनम्या इडादिक् हर्ष साथ ॥ सुख पाग्या  
 त्रिभुन सर्व जीव, यघार यघाह थइ अतीव ॥ ९ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ श्री शाति निननो कलश कहीशु, प्रेम सागर पूर

॥ ए देशी ॥

॥ श्री तीर्थपतिनु कलश मजन, गाइए सुप्रकार  
 नरपित्त मडण हुह विहडण भरिऊ मन आधार ॥  
 तिहा राव राणा हर्ष उन्मव, ययो जग जयकार ॥  
 दिशिकुमारि अत्रि विदेश जाणी लह्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥  
 निय अमर अमरी सग कुमरी गावती गुण छद् ॥  
 निन जननी पामे आग्री पडोती गहगहनी आर्णद् ॥  
 हे माय ! ते निनराज जायो शुधि यघायो रम्म ॥  
 अम जम्म निम्मल करण कारण, करीश स्तुईकम्म ॥ २ ॥  
 तिहा भूमि गोघन दीप दपण वायराणण घार ॥  
 तिहा करीय कदली गेह जिनर जननी मजनकार ॥  
 घर राखडी जिनपाणी याधी दीप एम आशीप ॥  
 जुग कौडा कोडी चिर जीयो, धर्मदायक ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल छठी ॥ परनीशानी ॥

॥ जगनायकनी, त्रिभुवन जन हितकार ए ॥

परमातजी, चिन्तनद घन सार ए ॥

॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ निण रयणीची दश दिशि उज्वलता घर ॥ शुभ लझे

जी ज्योतिष चक्र ते संवर ॥ जिन जनम्याजी जेण भवसर माता घर ॥  
 तणे भवसरची इद्रामन पण थरदरे ॥ पुटक थरदर भासन रड धित,  
 कोण अरसर ए यथा ॥ जिन जम उत्सव काल जाणी, अतिहा मानद  
 उपयो ॥ निज सिद्धि संपासि हेतु निवर, जाणी मत्ते उमटो ॥  
 विहित घदन प्रमाद घघने द्यनायक गद्गरो ॥ १ ॥ ढाल ॥ तर  
 सुरपतिजी घटानाद वगाय ए ॥ सुलोकिजी घोषण पद देवराय  
 ए ॥ नगश्रेजी जिनपर जम हुउ भउ ॥ तसु भगतेनी, सुरपति  
 मदरीरि गच्छे ॥ पुटक ॥ गच्छति मद्र शिगर उपर भरा जीयन  
 जिन तणो ॥ जिन ज म उत्सव करण कारण भायजो नवि सुरगणो  
 तुम शुद्ध समकित धासो निर्मल, देवाधिदेव नंदाकना ॥ आपणा  
 पानिक स्व जासो नाथ चरण पयालना ॥ २ ॥ ढाल ॥ एम माम  
 लीजी सुरघर फोडी यहु मनी ॥ जिनघदनजी मद्रगिरि सामा  
 चली ॥ सोहमपतिजी, जिन जननी घर आर्याया ॥ जिन माताजी,  
 धरी स्वामी घघापीया ॥ पुटक ॥ घघापीया जिन हर्ष यहुल घय हू  
 फुरयपुण्य ए ॥ त्रैलोक्यनायक देव दंडो, मुज समो कोण आय ए ॥  
 हे जगतजननी ! पुत्र तुमचो मेरु मज्जन घर करी । उत्सव तुमचे  
 घलीय थापीश, भातमा पुण्ये भरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन  
 निज करकमले टव्या ॥ पच रूपेजी अतिशे महिमाण स्नय्या ॥  
 नाटन विधिजी तव घर्षाश आगल घटे ॥ सुर फोडीनी जिनदर्श  
 नने उमट्टे ॥ पुटक ॥ सुरकोडाफोडी नाचती घली नाथ शुचि गुण  
 गावता ॥ अप्सरा फोडी हाथ जाडी, हाथ भाय दगावनी ॥ जयो  
 जयो तु जिनराज जगगुरु, एम दे आशीय ए ॥ अह्न प्राण शरण  
 आधार जीवन, एक तु जगदीश ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरिवरजी  
 पाडुक घनमें विहु दिशे ॥ गिरि शिल परजी, सिंहासन सासय घसे ॥  
 तिहा आणीची शक्रे जिन खोले प्रहा ॥ चौसठेजी, तिहा सुरपति  
 आनी रहा ॥ पुटक । आर्याया सुरपति सर्व भक्ते कलश धेणी वनाय  
 ए ॥ सिद्धाथ पमुहा तीर्थ आंवाधि, सव घस्तु अणाय ए ॥ अच्युभ  
 पति तिहा हुकम कीनो देव फोडाफोडीने ॥ जिन मज्जनारथ नीर  
 लावो, सर्वे सुर घर जोडीने ॥ ५ ॥

॥ ढाल मानमी ॥

॥ शक्तिने कारणे इद्र कलशा भरे ॥ ए देशी ॥

॥ आमसाधन रसी देवरोडी हसी उल्लुमीने धमी क्षीरसागर  
दिशि ॥ पडमदद आदि दह भग पमुहा नह, तीर्थजल अमरतेषा  
भणी ते गह ॥ १ ॥ जाति अड कच्छशाकरी सहस्र अटांतरा, छत्र  
चामर सिंहासन शुभतरा ॥ उपकरण पुष्क चगेरी पमुहा मये, आगमे  
भाषीया तेम आणी ठये ॥ २ ॥ तीर्थजल भरिय कर कच्छा करी  
देवता, गात्रता भावता धर्मद्वन्तरिता ॥ निरिय नर अमरने ह्ये उप  
जायता धन्य अम शक्ति शुचि भक्ति पम भावता ॥ ३ ॥ समाहित  
धीज निज आम आरोपता, कलश पाणी मिषे भक्तिजल मित्रता ॥  
मेरुसिद्धरोधरे सर्व आया घडी शक्र उ सग निज देवी मन  
गहगही ॥ ४ ॥

॥ वस्तु छद् ॥ ह्यो देवा ह्यो देवा अणाइ कागे, अदिठ पुष्यो  
तिलोयतारणो तिलोययधु मिच्छसमोह विदसणो ॥ अणाइ तिण्हा  
विजासणो, देवाहिदेवो णिठ बोहिय कामेहि ॥ ५ ॥

॥ ढाट तेहीज ॥ पम पमणत घणभवण जाइमरा देव वेमा  
णिया भक्ति घममायरा ॥ केवि कप्याडिवा केवि मिताणुणा, केवि घर  
रमणी घयणेण अइ उच्छुगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छद् ॥ तथा अच्युय इद्र आदेश कर जोडी  
सवि देवगण, लंय कलस आदेश पामीय ॥ अमृत रूप मरुप जूअ,  
कथण पद्द उत्सगे सामिय ॥ इद्र कहे जगतारणो, पागग अम परमेश,  
नायक दायक घम्मनिदि, करीए तसु अभिसेस ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

तीर्थकमलदल उदक भरीने, पुष्करसागर आपे  
॥ ए देशी ॥

॥ पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, निजवर अगे नामे ॥  
आतम विमल भात्र करता, वधते शुभ परिणामे ॥ अच्युतादिक  
सुरपानि मज्जन, लोकपाठ लोकात; सामानिक इद्राणी पमुहा,

एम अभिषेक करंत ॥ १ ॥ गाहा ॥ तव ईसाण सुरिंदो, सक्के  
पमणेई, करइ सुपसाउ ॥ तुम अके महशाहो, पणमिच्छ अम्ह  
अपेह ॥ २ ॥ ता सिमिद्धा पमणेई, साहमीव-छलमि बहु लाहो ॥  
आणा एव तेण गिण्हिह-वो उक्कयाथ्याभो ॥ ३ ॥ एम कही मय  
स्वार्त्राया कलश ढाले अने मुत्तयी नांचे प्रमाणे पाठ कहे ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करी, न्दघण  
करे प्रभु अग ॥ करीय विलेपण पुष्पमाल टवी घर आभरण  
अमग ॥ तव सुखर वटु जय जयरव र्गी, नाच धरी आणद्  
॥ मोक्षमार्ग सारथपति पाम्या, भाजगुं हवे भवभद् ॥ ४ ॥ फोडी  
वत्रीश सोपन उवागी, चाजत पर नादे ॥ सुरपति मघ अमर  
थ्री प्रभुने, जतनेने सुखमदे ॥ आणी थारी एम पथये, एम  
निस्तरिया आज ॥ पुत्र तुमरे धणी र हमारा, तारण तरण ज,ज  
॥ १ ॥ मात जतन करी रागजा पहन, तुम सुत अम आधार ॥  
सुरपति भक्ति सहित नदीवर करे जिनभक्ति उदार ॥ निय निय  
कप गया सवि निर्जर, कहुता प्रभु गुणमागर ॥ दक्षिा कंधलशान  
रुत्याणक इच्छा चिन्त मजार ॥ ६ ॥ रगतगन्तु जिन आणागी,  
राजसागर उरचाय ॥ गा धर्म दीपचद सुपाठक, सुगुरु तण  
सुपसाय ॥ देवचद्रसुजिनभक्ते गायो, ज ममहोसय छुं बोध  
रीज अकुरो उग्या, मघ सकर आनद ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ राग वल्लभल ॥ एम पूजा भक्त कर, आतमहित  
काज ॥ तजीय विभाव निज भायमें, रमता शिरगज ॥ एम० ॥  
॥ १ ॥ काल अनत जे सुआ होश जेह तिणद ॥ सपय सीमधर  
प्रभु केवलनाण लिणर ॥ एम० ॥ २ ॥ जन्ममहोत्सव एणी एरे,  
आपक रचिधत ॥ विचरे जिनप्रतिमा तणा, अनुमोदन मंत ॥  
एम० ॥ ३ ॥ द्यचर्चट जिनपजना, करता भवपार ॥ जिनपाडेमा  
जिनसागवी कही सूत्र मजार ॥ एम० ॥ ४ ॥ इति पडित्वादध  
चद्रजीमन्त स्नात्रपूजा संपूण ॥

॥ अथ ॥

# ॥ नवपद लघुपूजा ॥

## ॥ प्रथम अरिहतपदपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम मन्त्र प्रणमी करी; तास धरी उर ध्यान ॥

अरिहतपदपूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ उपपन्नसत्राणमहोमयाण, सप्पाडिहेरासणसट्टियाण ॥  
 सदेसणाणदियमज्जणाण णमो णमो होउ सया जिणाण ॥ १ ॥  
 नमोऽनतसतप्रमोदप्रदान,—प्रधानाय भयात्मने भास्वताय ॥ थया  
 जेहना ध्यानया सौख्यमाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा  
 ॥ २ ॥ कन्या कर्म दुर्म चक्रचर जेणे, भला भय नव पद ध्यानेन  
 तेणे ॥ करी पूजना भय भाये त्रिकाले, सदा घासीयो आतमा  
 तेणे काले ॥ ३ ॥ जिक तीर्थकर कर्म उदये करीन दृण देशना  
 भयने हित धरीन ॥ सदा आठ महापाडिहारे समता सुग्गेशे नरेशे  
 स्तव्या ग्राह्यपुत्ता ॥ ४ ॥ कन्या घातिया कम चारे अलगा, भवोप  
 प्रही च र जे छ विलगा ॥ जगत् पच कल्याण सौख्य पाम, नमो  
 तेह तीर्थकरा मोश्रकामे ॥ ॥

॥ टाल ॥

॥ श्रीज भय विधिसे करी, चीश स्थानक तप करीन र ॥  
 गोत्र तीर्थकर थार्थायु, समकित शुद्ध मन धरीने र ॥ १ ॥ अ  
 रिहतपद नित वदीए, करम फटिन जिम छडीए रे ॥ ७ आकणी ॥  
 जनम कल्याणने दिने, नारकी सुखीया थावे र ॥ मति  
 धृत अथाधि विराजता, जसु उपम फोड नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥  
 दक्षिा लीधी शुभ मने, मन पर्यंत आदगीयु र ॥ तप करी कर्म  
 गपादिने, ततामिण केवल उरीयु रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ चउतीश अनिशय

शोमता, घाणी गुण पेंनीशा रे ॥ अष्टदश दाश रहित था पुरे  
 सद्य जगीशो र ॥ ४० ॥ ४ ॥ तन मन घयण लगान्ने, अरिहत  
 पद् आत्रारे रे ॥ ते नर निश्चययी सही अरिहनपदधी साधे रे ॥  
 अरिहनपद नितपदीण ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याञ्ज—कणिकाया त्रिनेश्वरान् ॥ अत्रि  
 भुतलसद्गाथा नावृत स्यापयाम्यहन् ॥ १ ॥ नि शेरदपेधनधूम  
 केतू—नपारम सारसमुद्रसतून् ॥ यज समस्तातिशयहेतून् श्री  
 मग्जिनानुजकणिकायाम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अह्भ्यो नम ॥ इति ॥

## ॥ अथ सिद्धपदपूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुर्जा पूजा सिद्धकी कीजे दिल रुक्षियाल ॥  
 कम अगुभ दूरे टले, फल मनोरथमाल ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ सिद्ध णमाणसुरम लयाण णमा णमो णनचउह्यारणं,  
 सम्म कम्मावयकारयाण जम्मनरादुकलदुगिघारयाण ॥ १ ॥ वरी  
 आठ कर्म क्षय पार णम्या जरा जम मरणादि भय डेण च म्या ॥  
 निराघरण डे आत्मरुपे प्रसिद्धा थया पार ५ ॥ ३५५ ॥  
 त्रिभागानेदेहाघगाहात्मदेशा ॥ १ ॥ १५५५ ॥  
 सोरयाश्रिता ज्योतिरूपा ॥ १ ॥ १५५५ ॥

॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान् सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् ॥  
निश्रेयसपदं प्राप्तान् विदधे भाक्तेनिर्भर ॥ १ ॥ तत्पूजयन् परिः  
प्रणष्ट—दुष्टं एकमनिधिगम्य शुद्धिम् प्राप्तं प्रान् सिद्धिमनतयोधान्,  
सिद्धान्यने शातिकराशरणाम् ॥ २ ॥ ॐ ॥ सिद्धेभ्यो नमः ॥  
इति ॥ २ ॥

## ॥ अथ आचार्यपदपूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हृद्ये आचारज पदं तणी पूजा करो रिदोष ॥

मोह निमिर दुरे, हरे सुक्षे भाय अदोष ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥ सूरिणिदुरीक्यकुम्भाहाण, णमो णमो मूरसमप्यद्धानं ॥  
सद्देसणादाणममायराण, अल्लड छत्तीस गुणाराण ॥ १ ॥ नमु सूरि  
राजा सदा तत्पताजा, जिनेद्रागमे प्रोढ साम्राज्यभाजा ॥ पट्टवर्ग  
घर्गित गुणे शोभमाना, पत्राचारने पाल्ये सायधाना ॥ भयिप्राणीने  
देशना दश काले सदा अप्रमत्ता यथा सुत्र आले ॥ जिफे शास्त्र  
नाधार दिग् ति कल्या, जगे त जिर जीवचो शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ गुण छत्तीशे दीपता, पाल पच आचारो रे ॥ जिन  
मारग साचो कहे, युगप्रधान जयकारो रे ॥ आचारिजपदं ६ दीप  
॥ १० ॥ ए आकणी ॥ सारण घारण चोयणा, पडिचोयण चो  
दिवा रे ॥ भग्यजीव समन्नायया, देवाने ते दक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥  
निनघ( मूरज आथम्या, पवतिप दीपक जेहा रे ॥ सफल भात्र  
परगट कर, नामयी जसु देहा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ मिधिगु  
पूजा साचये, ध्याये निज हित जाणी रे ॥ पाये लघुतर कालमा,  
आचारजपदं प्राणी रे ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥ स्थापयामि तत सूरिन्, दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥  
चरत पञ्चधाचारं, पट्टिदत् सूरिण्युतन् ॥ १ ॥ सूरिन् रुदा  
चाररताश्च, सारानाचार्यत स्वपरान्वयेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गकनिवा-



रणाथ—मभ्यवयाम्यक्षतगभ्रुवै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं मूर्तिभ्यानम ॥  
इति ॥ ३ ॥

## ॥ अथ उपाध्यायपदपूजा ॥ ४ ॥

### ॥ दोहा ॥

॥ गुण अनक जग जेहना, सुदर शोभति गाथ ॥

उपध्यायपद अरचाणि, अनुभवस्तनु पात्र ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥ सुततत्ययिथारणतपरण, णमो णमो धायगबुजराण  
॥ गणस्स संधारण मायराण, सत्तपणापज्जियमच्छराण ॥ १ ॥  
नहीं मूर्ति पण मूर्तिगणन सहाया नमु धाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥  
घली छात्रशागादि मूत्रादान त्रिक साधना निरुद्धाभिमाने ॥  
धरे पचने घग यति त गुणौघा प्रगादि द्विपेच्छदने तुह्य सिंघा ॥  
गुणी गच्छसधारणे स्वभमूता, उपाध्याय ते वर्णी चित्तमुता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ छन्दशागा घाणी घदे, मूत्र अरथ विस्तारे र ॥ पच  
वर्ज गुण जेहना, सुमति गुपति निस्त धार रे ॥ १४ ॥ श्री उच  
शाय घादए ॥ ए आकणी ॥ दायक आगम घाचना, भेद भाव युत  
सरी र ॥ मूरसकं पडित धरे जगतजतु दितकारी रे ॥ १ ॥ श्री०  
शी० ल चंद किरण समी, घाणी जेहनी फहीए रे ॥ ते उपध्याय  
पनता अचिच सुखमा लहीए रे ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अक्षर ॥ छन्दशागाधुनाधारान शास्त्राभयनतपरान् ॥ निवेश-  
याम्युपध्यायान पवित्र पश्चिमे दल ॥ १ ॥ श्री०र्मशास्त्रा  
ण्यनिश प्रशास्यै पठति येऽन्यानपि पाठयति ॥ अध्यापश्चास्तान  
परात्तपत्रे, स्थितापवित्रापरैपूजयामि ॥ ३ ॥ ह्रीं उपाध्यायभ्यानम  
॥ इति ॥ ४ ॥

## ॥ अथ साधुपदपूजा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोक्षमार्ग साग्रन भणी सायधान धया जह ॥  
ने मुनिवगपद वंदती, निमल धाये देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ साष्टुण ससाद्विअ संजमणा णमा णमो सुखदयाद'  
माण ॥ तिगुत्ति गुत्ताण समाहिशणं मुणीण मणद पयट्टियाण  
॥ १ ॥ करे सवना सूरि घयग गणिनी, करु वर्णना तेहनी शी  
मुणिनी ॥ भमेता मदा पंच मिति त्रिगुत्ता त्रिगुत्ते नहो काममो  
सिपु लिता ॥ घली बाह्य अर्भपतर प्रथि टाली होये मुत्तिन योग्य  
चारिअ पाली ॥ शुमाष्टग योगे रमे चित्त घाली, नमु साधुन नह  
निज पाप टाली ॥ १ ॥

॥ द्वाल ॥ सकल विषय विष घारन, आतमध्यान रता र ॥  
उपशम रसमा झीलता निज गुण छाने माना रे ॥ २७ ॥ हिन  
धरी मुनिपद वदी ॥ आकणी ॥ रतनप्रयी आराधना, पट्टकशक्ति  
पाले ॥ पचिंद्री जीपे सदा, निनमार्ग अजुवाल रे ॥ हित० १० ॥  
गुण सत्त वीन अलङ्कारा पत्र महाग्रन धारी रे ॥ हाद्वन्द्वि तर  
आदरे, चिदानंद सुखकारी रे ॥ हित० ॥ १० ॥ स्वयं प्रथम  
धर करम महा भट जीया रे ॥ पहवा मुन प्थव गग त न  
जगत चिन्ता र ॥ हित० ॥ २० ॥

॥ श्लोक ॥ यस्यादिकर्म कुर्वण न शुभायलक्ष्मणम् ॥ उर  
कपप्रगतार्जित्य, स धूपदाभि सुधतान ॥ १ ॥ कर्णनरंशक्ति  
प्रसिद्ध सत्य तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदसकलद पवित्रान्,  
ग्राधन् सदा त न परिपूजयामि ॥ ॐ श्रीं सत्यपुत्रा नमः ॥  
इति ॥ ५ ॥

## ॥ अथ दर्शनपदपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनपर भागिन गुड नय, तस्य तर्पी परतीत ॥

ते स्वयम्भूता मदा भादगीए गुमरीत ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ जिणुत्तनसे गल्पवणरण, जमा जमा निमलदेमजम  
मिच्छतनावार समुग्गमस्य मुग्गम सरम्म मातदुमस्य ॥१॥ पिर  
याग दृष्टयामनारूप मिथ्या, टोके जे भनादि प्रउ जम पव्या ॥  
जिगोने शुभे महजया भद्रपाने, बदीए दर्शने तेह परमं निघाने ॥  
जिना जहर्था ज्ञान भद्र नरूपे शरिरे विविधं मधारण्यकूपे ॥ प्रष्टने  
सानन उपशोभे हाव तेह हाय, निदा भापरूपे मदा भाप जाये ॥ १ ॥

॥ टाल ॥ सुगुरु सुरेय सुधनेनी मद्दणा रिक्त घटीए रे ॥ मात  
प्रष्टितो क्षय करी, क्षायिक समकित घटीए रे ॥ २१ ॥ दरानपर  
नित घटीए ॥ ए भावणी ॥ इण एण ज्ञान निफल बसु, खात्रे  
नि फल जाये रे ॥ शिष्यसुण ए पिण ना भिजे, बहु मंसायि धाय रे  
॥ २० ॥ २२ ॥ सडसटी भद्र शाभनु अत्रगमर पल्ल दाना रे ॥ जे  
नर पूजे भायनु ने पाभ सुण दाना ॥ दरानपद ० ॥ २३ ॥

॥ ग्याक ॥ जिनेद्रातमने धदा लक्षण दर्शने यजे ॥

मिथ्यान्वमथन दाद -पम्नमीदातामद ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्भूताय नम ॥ इति ॥ ६ ॥

## ॥ अथ ज्ञानपदपूजा ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सतम पद धी ज्ञानुं मिच्छम तप मां ॥

आराभाजे शुभ मन, दिन दिन भधिइ उच्छाति ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ अद्याणसमोत्तमादरस्य जमा जमा नाणादियायरस्य ॥  
पे उप्यारस्तुधमारगस्य, गलण सत्तथपथामगस्य ॥ १ ॥ हाये  
जेहथा ज्ञान गुद्ध प्रशोध यज्ञरण नास त्वायत्रायशोध ॥ तेजे

जाणीए धरतु पइ द्रव्य भाजा, न ह्ये वितथ्या ( वाद ) निजेन्छा  
स्वभाजा ॥ होय पच मत्यादि सुजान भेदे, गुरुपासस्थिथी घाम्यता  
तेह घेदे ॥ यलो होय होय उपादेयरूपे, लहे चित्तमा जेम घात  
प्रदीपे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ मक्ष अमक्ष विचारणा पेय अपेय निघारो रे ॥ वृत्य  
अकृत्यने जाणीए, ज्ञान महा जयकारो ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर धंदीए ॥  
ए आकणी ॥ ज्ञान बिना जयणा नहीं जयणा विण नहीं धर्मो रे ॥  
धम बिना शिवसुख नहीं, ते विण न मिटे भर्मो रे ॥ ज्ञाना ॥ २५ ॥  
पाचो प्रकार छे जेहना, भेद धरान तासो रे ॥ जाणीने पूजे सदा,  
ते लहे केवल खासो रे ॥ ज्ञान० ॥ २६ ॥

॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय, - रूपमेवावभासकम् ॥

ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थ, पूजयामि द्वितावहम् ॥ १ ॥

## ॥ अथ चारित्रपदपूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टम पद चारित्रनु, पूजो धरो उमेद ॥

पूजत अनुभवरस मिले पातक होय उज्ज ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ आराहिअखडीअ सक्रिअस्स, णमा णमा सयम वीरि  
अस्स ॥ सज्ञायणा सगणियाहुयिस्स, निव्यणइणाह समुज्जयस्स  
॥ १ ॥ बली ज्ञानफठ चरण धरीए सुरंगे, निरांसता द्वारोघ  
प्रसंगे ॥ भयाभोधिसंताण यान तुल्य, धरु तर चाग्नि अप्राप्त  
मूल्य ॥ १ ॥ होय जास माहिमा थकी रंऊ राजा, बली द्वादशागी  
भणो होय ताजा ॥ बली पापरूपेपि नि पाष थाय, थइ निउ ते  
कमने पाए जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सर्व विरति श्रेयान्निरतिथा, अणकार सागारी रे ॥ जय  
वंतो याचो सदा, त चाग्नि गुणधारा रे ॥ १३ ॥ चारित्रपद निर  
धंदीए ॥ ए आकणी ॥ पटखड सुख तथा अक्ष, सयम शिखड  
दायी रे ॥ सत्तर भेदे चिन बहो, ते आदण भाइ रे ॥ चा० ॥

तत्परमणा तसु मूल छे, सङ्ग आश्रयनो त्यगी रे ॥ विप्रि मेनी  
पूजन करे, भाव धरी घड भागी रे ॥ चा० ॥ २० ॥

॥ १५ क ॥ सामायिकादिभिर्भेदे, -धारित्र चार पत्रा ॥  
सस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैर्ऋते प्रमात् ॥ १॥  
ॐ ॥ ह्रीं सम्यग् चारिप्रायनम ।

## ॥ अथ तपपदपूजा ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कमलाष्ट प्रतिजाला, परतिष्ठा जगति ममान ॥  
ते तपपद पूजो सदा, निमल धरिष ध्यान ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ कर्मदुमोमलणतुजरस्म, णमो णमा निव्यतयोमरस्म ॥  
अणेगलद्दीणनियधणस्स, दुस्सज्ज अथ्याण य सात्तणस्स ॥ १ ॥  
त्रिकालिकपणे कम कयाय टाले, निकाचितपणे वाधोय। तेह थाले ॥  
कहा तेह तप थाह्य जंतर दु भेदे श्रमा युक्त निर्ऋतु दुध्यान छेदे ॥  
होये जास महिमा थरी लब्धि सिद्धि अत्राछापण कम आवरण  
गुद्धि ॥ तमे नेह तप अ महानंद हेने होय सिद्धि श्रीमतिनी निज  
सके ते ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥ निज इच्छा अरुधीष तही तप जिन भाख्युं र ।  
थाह्य अभ्यतर भेदथी द्वादश भेद दारथु रे ॥ ३० ॥ अनुपम तप  
पद धरिष ॥ ए आकणी ॥ तद्भव मोक्षगामीपणु जाणे पण निनगाय  
रे ॥ तप कीधा अति आकरा कुत्सित करम स्वपाया र ॥ अ० ॥ ३१ ॥  
काम निकाचित क्षय हुवे ते तपने परभावे रे ॥ लब्धि अक्यावीर  
उपजे अष्ट महासिद्धि पचे र ॥ अ० ॥ ३२ ॥ एतु तपपद ध्यायता  
पूजता चित्त चाहे रे ॥ अर्थय गति निमल गृह सहृ योगींद सगति  
रे अ० ॥ ३३ ॥

॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा भिन्न, पून पत्रे तपश्चय सस्था  
पयामि भक्त्यात्र, वायथा दिशि शमदम् ॥ ॐ ॥ ह्रीं सम्यक्तप  
नम ॥ इति ॥ ० ॥

## कलश.

इमन्यपद् ध्याये परम ध्यानं पामे । नयम भवशात्र जाये, देय  
: भवपात्रे । ज्ञानधिमल गूणगात्रे सिद्धचक्रप्रसाये मद्दुदुरित नामाये  
श्च जयकार पात्रे ॥ १ ॥

अरिहंत सिद्ध आचारज उद्योगाय मातु दंमण माणय । चारित्र  
प नयपदकी, इहा सिद्ध चक्र प्रमाणय ॥ २ ॥ आप ल राजा सुरव  
ताजा, लक्षासिद्ध चक्रव्यानसा भविना भवो विनलामजापी, द्विप  
राजी मात्रसो ॥ ६ ॥

इय नय पदसिद्धे लद्धिभिज्जानमिद्धे । पयदिसुरयग्ग ही निरहा  
मग्ग । दिसरसुस्मार खोणिपाडायाग । निनयविजय चक्रमिद्ध  
इय नयमानि ॥ ३ ॥

निः स्वदेत्यादिदि यातिशयमयतनून धीनिने द्रमुजान् ।  
सम्यक्त्वादिप्रकृष्टाष्ट गूणगणभद्राचार मापश्च सुरीन् ॥  
शास्त्राणि प्रागिरथा प्रयत्न रचना सु-शास्त्रादिशान-  
स्तत् सिद्धे पाठकाना यतिपति सहितानच्चयाम्यर्घदाने ॥ ४ ॥

इत्यमष्टः लपद्म पुरये दहेदादिभि ।

स्वाहाते प्रणयाद्यश्च पदेविमृत्तये ॥ ७ ॥

ॐ ही पचपरमेष्ठिने सम्यग्ज्ञानादि चतुःश्रित्तेभ्योनम ।

इति श्री नयपद लघु पूजा-

### अथ नयपद आरत्ति ।

ए नयपद ध्यावो प्राणितेन ध्याया पथम गति साम्य  
सुखपात्रे । ए आरुणी । चुरथी अरिहंत रद ध्याशने, थिग्ता ए सिद्ध  
सुणिज । ए० १ ॥ आचारज निज आपधा, शुद्ध मन निजकारिज  
साथे । ए० २ ॥ उद्योगाया पथम ध्यानगाय, प्रणमता पाम भूध  
परा । ए० ३ ॥ दंमण नाण ँरण भलदंयि, तप तपता कम अरिने  
जीपे । ए० ४ ॥ ए नयपद प्राणा नित धुगता, गिरथा मस्तु गिगता  
। ए० ५ ॥ सिद्ध चक्रनी काज सेरा मनयाछित लहिए निनमवा

४ ए० ६ ॥ अजर अमर सुखदायक साचो रुडे मनसे नितप्रति  
राचो । ए० ७ ॥

### इति नवपद आरति

॥ हवे स्तवना करवाना प्रसंगे प्रथम नव पदना ०

॥ चैत्यवदन ९, स्तवन ० थोय वहे छ दगेज करवानु ॥

### ॥ अथ अरिहतपद चैत्यवदन ॥

॥ श्रीरुद्रदेवाय नम ॥ जय जय श्री अरिहत भानु, भधि कमल  
विकारी ॥ लोहालोह अरुण रुमी, समस्त वस्तु प्रकाशी  
॥ १ ॥ समुद्रात शुभ केघले, क्षय हन मल राशि ॥ शुद्ध चरम  
शुचि पादसे, भयो घर अविनाशी ॥ २ ॥ अतरग रिपुगण हणीए,  
हुय अप्पा अरिहत ॥ तसु पदपंकजमें रही, हीर धरम नित संत  
॥ ३ ॥ इति अरिहतपदचैत्यवदन ॥ ज विचि० ॥ नमोऽर्चत् ॥

### ॥ अथ प्रथम पद स्तवन ॥

॥ पूजो मनरंगे, हा हो दादा कुशल सूरिदि ॥ पू० ॥ ए देशी ॥  
श्री तेरम गुण घसिके कत, कमकु भजे श्री अरिहन ॥ मन मान ले ॥  
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहार गी हावे हीन ॥ म० ॥ १ ॥  
यादर काये मन घच भोग, तनु तनुसे पुन दढ तनु योग ॥  
मन० ॥ सुखम कायेते मन यत्र रोक, निज धार्य ताकुं कर फोक ॥  
मन० ॥ २ ॥ सही मांके मन यापार, येइदिने घाप्य प्रचार ॥ म० ॥  
आदि समय रहो पणक सुजीव, सुखम लहो तिण जाग अतीव  
॥ मन० ॥ ३ ॥ ण्या योगथा समये एर, हीना सखगुणो कर छेर  
॥ म० ॥ समया सखे जोग निरोय, वृत्वा जो लहो जोगी सोघ ॥  
मन० ॥ ४ ॥ यत् समना हारता पाय, कुशल वहे ते श्री जिनराय ॥  
म० ॥ तेरमे गुणमें गुण सम देउ, आपा सा जगकु नितमेउ ॥ मन०  
॥ ५ ॥ अरिहतपदस्तवनम् ॥ १ ॥

॥ अथ सुइ ॥ सफल द्रव्य पयाय प्ररूपर, गालोह सरूपोजी ॥  
केवलशानरी ज्योति प्रकाशक, अनत गुणे करी पूरोजी ॥ तीजे भय

थानक आराधी, गोत्र तार्थकर नूरोजी ॥ धार गुणाकर पदया बरि-  
ईत, आराधो गुण भूरोजी ॥ इति अष्टितपदस्तुति ॥ १ ॥

## ॥ अथ सिद्धपद चैत्यवदन ॥ २ ॥

॥ श्री शैलेशो पूवप्रात, तनु हीन त्रिभागी ॥ पूवपयोगपसगस,  
ऊढ गत जागी ॥ १ ॥ समय एरमें लोकप्रात, गये निगुण  
निरागी ॥ चेतन भूरे आत्म रूप, सुदिशा गही म्वागी ॥ २ ॥ केवल  
ईसण नाणगी ए, रूपातीन स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीर धर्म, धद  
धरी गुम भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपदचैत्यवदनम् ॥

## ॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥ २ ॥

॥ था रे महिला उपर मेह झरोखे रीजली ॥ ए चाल ॥ अष्ट घरस  
नंग मास हीना फोडी पूर्वमें ग्दारा लाल ही० ॥ उत्पष्ट करे घास  
सयोगी धाममें ग्दा० स० ॥ अजोगीके अंत तजे भव भयता ग्दा०  
शैलेशी लहे कर्म दल गुणश्रेणिता ग्दा० द० ॥ १ ॥ इत्याक्षर पच काल  
रहे ते योगमें ग्दा० र० ॥ तेरस प्रवृत्तिनो अन्त करीने अतमें ग्दा०  
क० ॥ गमन करे नगरजासे अक्रिय होयने ग्दा० ॥ अ० ॥ पुव्वप नोग  
असग स्वभाव अवधने ग्दा० स्व० ॥ २ ॥ इगु गुण नत्र परमाण  
जोजन लक्षे कही ग्दा० जा० ॥ वतुल निसदा भादा निरालयन सही  
ग्दा० नि० ॥ मध्ये जोजा अष्ट घनाकृति अतमें ग्दा० घ० ॥ मथरी  
पक्षथी हीन भणी सिद्धातमे ग्दा० भ० ॥ ३ ॥ तनु रूभारा नाम  
शिलासे ज्ञायने ग्दा० शि० ॥ लघु अगुल वत्तिस प्रमाण अवगाणा  
ग्दा० प्र० ॥ वृद्धि अनु शत पच गुणासे हीनता ग्दा० गु० ॥ मिलिया  
एकमें नत अवाधा ना लही ग्दा० अ० ॥ ४ ॥ अष्ट प्राण धरी रम्य  
सिरीही जो सही ग्दा० सि० ॥ रीजो पद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें  
ग्दा० धरो० ॥ कुशल भये जगजीव मिगगा तेहमें ग्दा० मि० ॥ ५ ॥  
इति सिद्ध पदस्तवनम् ॥

॥ अथ धुद ॥ अष्ट करमकु धमन करीने गमन नियो शिववासीजी  
अवथायाध सादि अनादि, चिदानन्द चिद्राशिजी । परमात्म पद



पूरण विलासी, अघ घन दाघ त्रिनाशीजी ॥ अनन चतुष्टय शिखर  
ध्यात्रो, वेधलक्षानी भार्गीजी । इति सिद्धपदस्तुति ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीय पद चैत्यवदन ॥

॥ जिनपदकूल सुव्वरस अनिल, मितरस गुण धारी ॥ प्रथल  
सवलधन मोहकी, जिणते चमु हारी ॥१॥ ऋचादिक जिनराज गीत  
नयनत त्रिस्तारी ॥ भत्र कृपे पापे पडत जगनन निस्तारी ॥ २ ॥  
पचाचारी जीयके आचारजपद सार ॥ तिनकू वंदे हीर धर्म, अपोत्त  
रसो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपदचैत्यवदनम् ॥ २ ॥

## ॥ अथ आचार्यपद स्तवन ॥

॥ नणदठ वदिला ले ए चाल ॥ स्वती स्वडगर्था जेणे, हण्यो भोध  
सुभट सम देणे हो ॥ गणप ते गुण पेवी ॥ मान महा गिरि घयरे,  
अति सोभन मद्दव ययर हो० ॥ ग० ॥ १ ॥ दभरूप विपवेली घर  
भजव कील टेली हो ॥ ग० ॥ मूळा धल्यी भरीयो लोहसागर  
मुत्ते तरीयो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन नाग मद्दहिना जिण दम शम  
जप्रे कीनो हा ॥ ग० ॥ माह मटामह ताड्या, पुण वराग मुगेर  
पाड्या हा ॥ ग० ॥ ३ ॥ दाप गयद घस कीना धरा उपशम अकुश  
लीना हा ॥ ग० ॥ अतरग रिपु भेद्या, सुर घर विण जिण निपंध्या  
हा ॥ ग० ॥ ४ ॥ रम वृती गुणथा नीना म्त्र वरथे आगम पीनो  
हो ॥ ग० ॥ आचारिजपद पहा, धरी जीव कुलता सेरो हो ॥ ग०  
॥ ॥ इति आचार्यपदस्तवनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ शुद्ध ॥ पचाचार पाल उजवाट, दाप रहित गुणधारीजी ।  
गुण छत्तीस आगमधारी, द्वाश रग विचारिजी । प्रवल सवट घन  
माह हरणकु अनिल समो गुण धाणीजा । श्रमा सहित जे स्वयम  
पाले, आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्यपदस्तुती ॥ ३ ॥

## ॥ अथ चतुर्थ पद चैत्यवदन ॥

॥घन घन थी उग्रनाय राय शठता घन भजन ॥ जिजिनवर दिमत  
दुवाटसग, करण्टन जनरजन ॥ १ ॥ गुणगण भजण मण गयद, सुय

शाणि क्रिय गजण कुणाग्ध लोय लायण, जतयय शुय मंजण ॥ २ ॥  
महा प्रणमं जिन लहो ए, आगममे पद तुयं ॥ नितपे अहनिश हीर  
धर्म, उदे पाठकर्थ ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपदचैत्यवदनम् ॥ ४ ॥

## ॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

॥ स्वावलिया अलगा रहोने ॥ ए वा ॥ हुयने ३ दुरी हुयने  
चतन भापे शठने दुरी होयन । तु मुज पाम फ्यु आय ॥ १ ॥ तुजन  
कृण यतलावे हू० आकर्णी ॥ तो सगे निज पचेटिनो, रचना चरण  
भूलाणो ॥ नाणाचरणी खय उपशममे, भावेटिमहाणो ॥ २ ॥ १ ॥  
ट्टे ते परजाते कीना, जाति नाम यपदेश ॥ एय तो गौ तुग  
गजादिक, विण कर्म उपदे ॥ ३ ॥ २ ॥ इत्यादिक यट्ट मुजतु  
शंका, तेरे संग लागी ॥ नील वणकी शमता मती, मे भया तो  
रागी ॥ ४ ॥ ३ ॥ उप फहिण हणीगे भापियाना, अत्रिया लागन  
भाय ॥ आर्घाना मन पीडा नाम, मायो यन विलाय ॥ ५ ॥ ४ ॥  
अधिभ्ये स्मरणे घर अगम, मृशमे त उषभाय ॥ तत्सराते हणी  
शठतातु, चतन कुशलता पाय ॥ ६ ॥ ॥  
इति चतुर्थपदस्तवनम् ॥

॥ अथ शुद्ध ॥ जग इम्यात् च उद् पूरय गुण पचर्वासिता धारीनी ।  
सुभ अरधघर पाठक कहीए, जोग समानि विचारीजी ॥ तप गुण  
शूरा आगम पूरा नय निक्षप तारीजी । मुनि गुणगारी शुध विस्तारी  
पाठक पूजात्रि गविनारीजी ॥ इति उपाध्यायपदस्तुति ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पचम पद चैत्यवदन ॥

॥ दसण नाण चरित्त करी, घर शिरपद गामी ॥ धम शुद्ध शुचि  
चक्रस, आदिम गय धामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्तन, भय अंतर  
जामी ॥ मानम इदिय नमनमूल, शम दम अनिरामी ॥ २ ॥ चारु ति  
घन गुण भर्षा ए पत्रम पत्त मुनिराज ॥ तपदपरज नमत हे हरि  
धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपदचैत्यवदनम् ॥ ४ ॥

## ॥ अथ साधुपद स्तवन ॥

॥ मालन मालन मति कहो ॥ ए चाल ॥ निरुपाया जगजन कहे,  
घारे चउगति यमनमे रोप हो ॥ मुनादजी ॥ राग हीन भय तु करे,  
साहिया शिखरमणीस हेत हो ॥ मुनादजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तर्जा  
रहे ॥ सा० ॥ छठे पूरव मोड हो ॥ मु० ॥ शन सोगम आगम करे ॥  
सा० ॥ पाम कम निरुद हो ॥ मु० ॥ २ ॥ प्रगला निद्रामें रही ॥  
सा० ॥ वारमे गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुग  
करे ॥ सा० ॥ जा गुग सख्यातीन हा ॥ मु० तो पीण- तिण जगमें  
रही ॥ सा० ॥ त्रिक त्रिक घन गुणनी र्यान हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ रयण  
त्रयसे शिवपथे ॥ सा० ॥ साधन परवर जीव हो ॥ मु० ॥ साधु  
हुयइ तसु धममें ॥ सा० ॥ कुशल भवतु जगतीव हो ॥ मु० ॥ ५ ॥  
इति साधुपदस्तवनम् ॥ १ ॥

अथ धुइ ॥ सुमति गुणाति कर सजम पाले, दोष ययालीश टा-  
लेजी ॥ पट्टकाया गोकुल रकघाले नयविध इह्यप्रत पालेजी ॥ पच  
महाप्रत सूधा पाले, धम शुङ्ग उजवालेजी ॥ क्षणकश्रेणि फरी कम  
खपावे, दमपद गुण उपनावेजी इति साधुपदस्तुति ॥ ॥

## ॥ अथ दर्शनपद चैत्यवदन ॥

हूय पुगल परियट्ट अड्ड परमित रुसार ॥ गट्टिभेद तप कर  
रहे, सब गुणना आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशी असख, उप-  
शम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुये शिय दातार ॥  
॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धमनी ए रुचि लच्छन अभिराम ॥ दरशनकुं  
गणि हीर धर्म, अहानिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति दर्शनपदचैत्य  
वदनम् ॥ ६ ॥

## ॥ अथ दर्शनपद स्तवन ॥

॥ रामचद्रके थाग आयो मोह रह्यो री ॥ ए चाल ॥ देव श्री जिन  
राज, गुरु ते साधु भण्या री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, बोधि लक्षण  
तणे री ॥ १ ॥ वाधिलामके फाज, सप्तम नरक भलो री ॥ तेण विना

सुरलाभ, ताते अधिक धूरो री ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तन, घोषही  
छाह लहे री ॥ उपशम शायक घे, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ भय  
सागर हे अपार, कुण अस्ताप्र कहा री ॥ जरु लाभे ते होश, गोस  
पद मात्र खरो री ॥ ४ ॥ यद्भाय प्रमाण घाण चारिस्त भला री ॥  
गोत्र धर्ममे नीय, लाभे कुशल करा री ॥ ५ ॥ इति दशनपद  
स्तवनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ धुर ॥ निगपन्न तन सुत्रा सरधे, समन्वित गुण उज  
वालजी ॥ भेद छेद करी, आतम निरप्री, पशु टागी सुर पावेची ॥  
प्रत्यार्याने सम तुल्य भारव्या, गणधर बरहित गृगजी ॥ ७ ॥ दगा  
पद नित नित वदे भवसागरको तीरार्जी ॥ इति दशनपद  
स्तुति ॥ ६ ॥

## ॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवदन ॥

॥ त्रिप्रादिक रम राम वलि, मित आदिम नाण ॥ भाव मिलापने  
जिन जनित, सुय घाश प्रमाण ॥ १ ॥ अयगुण पाज आदि दाय, मण  
लोचन नाण ॥ लोनालोक स्वरूप जाण, एक फल भाग ॥ २ ॥  
नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सतम पदमे हाण घम,  
नित चाहत अजकाश ॥ ४ ॥ इति ज्ञानपदचैत्यवदनम् ॥ १ ॥

## ॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

॥ म्हारे अति उल्लसंग ॥ ए चार ॥ निनेश माग्नि भागम मणीया,  
तरु यथास्थिति गमीयाजी ॥ म्हारे जगजनताट, त उत्तम वर नाण  
बहावे । मविजन न्हानिशी चाहेची ॥ हा० ॥ १ ॥ मयाभय कुपय  
सुर्यया, पयापय अथानी ॥ म्हा० ॥ दुन कुपय अहित हात धारी  
जाणे जेण विचारीजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ अने मति दाय छे हाट्टि मार-  
तेण परोक्ष विचारजी ॥ म्हा० ॥ उदि मण कवन हे वारु, जीव प्रत्यक्ष  
सुधारजी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयवि अस्य वर ना जाणे, लाकादिक  
अनुमानेजी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जालु पावे धारी शुभ अयव  
सायंजी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपरम क्षय्यी, चेतन नाण

विलासेजी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें भविष्यत्हरखे, निशदिन कुशलता  
निरग्यजी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ इति नाणपदस्तवनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ धुइ ॥ मति धुत धद्रि जानित कहीए, लहीए गुण गभी  
रोजी ॥ जातमधारी गणधर विचारी ठादना अग विस्तारोजी ॥  
अपधि मन पयब कल बली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ॥ ए पव  
ज्ञाने वदा रूजा, मनेजनन सुखफारोजी ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥६॥

## ॥ अथ अष्टम पद चैत्यवदन ॥

॥ जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेंद ॥ नमन करे शुभ  
भात्र लाय, फुण नरपति वृत् ॥ १ ॥ जेपे धरी अरिहत राय करी  
रुम निरुद ॥ सुमति पच तीन गुति युत, टे सुख अमद ॥ २ ॥  
इपु वृति मान कपायथी ए, रहित लेश शुचिधत ॥ जीव चरित्तक  
हीर धम, नमन करत नितसत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपदचैत्यवदन

## ॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

निधिस्वप अज निर्गुणी, चिदाभास निरसग ॥ सुग्यानी साभलो ॥  
मृतिहीन चेतन करे रूपी पुट्टर रग ॥ सु० ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण  
वोणा, कार्ये कारण भात्र ॥ सु० ॥ २ ॥ लुया जोग सुधामता, लब्धा  
संप स्वभात्र ॥ सु० ॥ ३ ॥ पर्याता लघु जोगमें, वृद्धि लह जुगमान  
॥ सु० ॥ मर्ये वसु समये लहे, अते द्वौ ते जाण ॥ सु० ॥ ४ ॥ सह  
कागी मज्जस भुया, कारण रभ्य धरेण सु० ॥ प्राप्ताघत्र प्रनारता,  
सत्र प्राभृतशा तेन ॥ सु० ॥ ५ ॥ तद्रोधन रूपी भलो, चतन संव  
मधाम ॥ सु० ॥ धर धन मिल पद धममें, कृशल भवतु अभिराम ॥  
॥ सु० ॥ ६ ॥ इति चारित्रपदस्तवनम् ॥ १

॥ अथ धुइ ॥ कम अपचय दूर मप ने, जातमध्यान लगावेजी ॥  
चारे भावना सृधि भावे, सगारपार उतारेजी ॥ शट खंड राजक वृ  
तनीन, चर्मा संजम घरेजी ॥ एणवो चारित्रपद नित वदा, जातम  
गुण दितकारेजी ॥ इति चारित्रपदस्तुति ॥ ० ॥

## ॥ अथ तपपद चैत्यवन्दन ॥

॥ श्री शारदादिक नीथनाय, तद्गुण शिष्यनाथ ॥ विद्धि अतएवपि  
 पाह्य मध्य, द्वादश परिणाम ॥ १ ॥ घृतु क्व मित  
 व्यामोहदी, आदिक लप्ति निपान । भेदे समता दुत पिणे द्वा प्रपन्  
 कर्म विमान ॥ २ ॥ नयमो श्री तपस्य भला ए, इच्छरो प्र सरुप ॥  
 वदनसे निम हीर धम, दूर भवतु भवत्प ॥ ३ ॥ इति तपपदचैत्य  
 वन्दनम् ॥ ४ ॥

## ॥ अथ तपपद स्तवन ॥

धारम्य भेद भण्था जिनराजे, याह्य मध्य १णा जगज्जाने २ ॥ शिष्य  
 पद जेणि ॥ तिण भव सिद्धि तणा घर ग्याना, जिनर पिण तपना  
 कर्ता २ ॥ शि० ॥ १ ॥ समता सहित जिनते भारी, भला कर्मत्रमु  
 पिण हारी रे ॥ शि० ॥ जीव क्वणस कर्म कचोर, धे न पाव  
 नका जोरा रे ॥ शि० ॥ २ ॥ तप तरवरना कनुम है महे, म्य  
 नगनी फल ते सिद्धि २ ॥ शि० ॥ पाप सरुल है तमनी राशि, तप  
 भानुम जाये नामी रे ॥ शि० ॥ ३ ॥ जस्म पसाय उदीण वार,  
 त्रि सरली जगद्वितरारु रे ॥ शि० ॥ अति सुहृणुष सायना  
 हीना, काम ताते वार नीना रे ॥ शि० ॥ ४ ॥ इच्छारो प्र सरुप,  
 तपपदी चेतन वदीप रे ॥ शि० ॥ ५ ॥ इति श्रीतपपदस्तवनम् ॥

॥ अथ धुइ ॥ इच्छारो घन तप ते भारव्यो, भागम तहना सानीनी ॥  
 द्रव्य भाजम द्वादश दार्गी, जासमात्रि राखीना ॥ चतन निज गुण  
 परणित पेणी तहीज तप गुण दार्गीजी ॥ तन्ध सकलना धारण  
 नपी, इ वर संमुख भापीजी ॥ इति तपपदानुति ॥ ६ ॥

## ॥ अथ नवपद ओलीनी पेलदीवसनी विधि ॥

॥ प्रथम जासा सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ थो थला शरु कर ।  
 कदाच तिथि घटा हाय ता ६ थी वरा हाय तो अग्रमया शरु करे ।  
 पण आविल ० पूनिम सुधि करे । तिहा प्रथम समे सुद्ध फग्नि  
 माउलादिकथी चित्रिकरने पछे वाजाठ, पर नयन सिद्धचन

थापे । त्रिकाल पूजा करे ॥ सवारना राह पमिकमणु करी पीठे धरु  
 पडिलेहे । ज्या नरपद सिद्धचक्र यत्रनी स्थापना होय त्या आरीने  
 पाच शक्रस्तत्र देव वादे तथा या नरच यत्रदन नवपदना यत्र पासेकरे  
 पछे नव चैत्ये अथवा नत्र प्रतिमा आगे नत्र चैत्यचदन करे अने नव  
 पदनी लघु पूजा करे वासक्षेप आदिथी करे । पाछे केसर चदनथी  
 पूजा करे । पञ्चमभ्याह्न समय पाच शक्रस्तत्र देव वादे । पछे गुरु पामे  
 आरिने राह आलोच । जम्भुटिजोमि रामिने आयथिलनु पन्चप्लाण  
 करे । प्रथमे अरिहतपदना उर्ण सकृद् छे तथी आरिर्मे । श्रोत्रा मात  
 अत गरम पाणी आरुड द्रव्य लेणु एषु आयिल पचखे । पीठ  
 रामासमणा तथा फेरी साप्रिया माला काउसगा आरधु नरपद  
 सिद्धचक्र यत्रनी पास करधु अने न होयतो त्रासरमा करधु  
 अरिहतपद ना गार गुण उ एफ चित्त धार नमस्कार करे ॥ प्रथम  
 सर ठेगणे इच्छामि खमा समणो व० इत्यादि कहिने नमस्कार करे ॥

## ॥ अरिहतपदना १२ गुण ॥

- १ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम
- २ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ३ दिग्बन्धिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ४ चामरयुगप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ६ मामङ्गप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ७ कुंदुभिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ८ उग्रत्रयप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ९ क्षान्तिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- १० पूजातिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- ११ घननातिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
- १२ अपायापगमातिशयसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिने श्री अरिहतपद आराधना निमित्त का  
 उस्तसगुरु ँउ अरिहतपद आराधना करेमि काउस्तसगर्ग इच्छ वंदण०





ऊससिएण षड्दिने आठ लोगम्भनो फाउस्सग करे । एक लोगस्म  
 षड्दिने पारे । पठ पूर्वाक्त करणी अनुक्रमथी कर ॥ इति द्वितीय  
 दिघम् विधि ॥ २ ॥

## ॥ अथ तृतीय दिवस विधि ॥

॥ पूर्वोक्त विधिर्या सधारुं कतय कर । आचार्यपदनो पीलो  
 यण छे तथी चणानी दालनुं आयिल करे । 'ॐ ह्रीं णमो आयरियाण'  
 था पदनो गुणणो ३ हजार करे । आचार्यपदना ३६ गुण या  
 करिने छत्तीस नमस्कार कर ॥

## ॥ आचार्य पदना ३६ गुण ॥

- १ प्रनिरूपगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- २ सूयवत्तेज्जम्बिगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ३ युगप्रधानागमस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ४ मधुरव्याम्यगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ५ गार्भार्थगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ६ धैर्यगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ७ उपदेशगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ८ अपरिश्रायिगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ९ साम्प्रवृत्तिगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १० शीलगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- ११ अविग्रहगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १२ अत्रिथकगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १३ अक्षपलगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १४ प्रसन्नमदनगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १५ क्षमागुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १६ श्रुगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १७ मृदुगुणस्युताय श्रीआचार्याय नमः ॥
- १८ सर्वसगमार्त्तिगुणस्युताय श्री आचार्याय नमः ॥

- १९ छादराविधतपगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २० सतदशविप्रस्यमगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २१ सत्यव्रतगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २२ शौचगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २३ आर्च्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २४ ब्रह्मचर्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २५ अनिय भावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २६ अक्षरणा भवित्वाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २७ ससागम्यरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २८ एकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 २९ अयत्नभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 ३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 ३१ आश्रयभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 ३२ सपरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 ३३ निर्नराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 ३४ त्रैकर्म्यरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 ३५ पाथेदुर्गभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥  
 ३६ घमदुर्गभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नम ॥

॥ उत्तीम नमस्कार करिने अद्यत्थ उम्सिपण इत्यादि कहिने  
 उत्तीम [ ३६ ] लोगस्मनो काउस्सग्ग करे । एक लोगस्स उंते  
 स्वरथी कहे पारे । यथोक्त कर्णा अनुक्रमयी करे ॥

## ॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ ' ॐ ह्रीं णमो उवज्जयाण ' धा पदना २ हृत्कार गुणणो गणे ।  
 स्त्रीग मगतीशालनु आयिल करे । उपाध्यायपदना २ गुण थाद  
 करिने नमस्कार करे ॥

## ॥ उपाध्यायपदना २५ गुण ॥

१ श्रीआचार्यागमूत्रपटनगुणयुताय श्रीउपाध्याय नम ॥

२ श्रीसुयुगु डागमूत्रपटनगुणयुताय श्रीउपाध्याय ॥

- ३ श्रीटाणागमूत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥  
 ४ श्रीसमवायागमूत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 ५ श्रीभगवतीमन्त्रपटनगुणयुक्ताय श्रीपाध्यायाय० ॥  
 ६ श्रीसातामूत्रपटागुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥  
 ७ श्रीउपासकदशागमूत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 ८ श्रीअतगडदशागमूत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 ९ श्रीअणुत्तरोत्तर्गईमूत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १० श्रीप्रश्नशास्त्रमन्त्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 ११ श्रीत्रिपाकमूत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १२ उत्पाम्पुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १३ आप्रयणापुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १४ वीथप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १५ अस्तिप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १६ घानप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १७ स्वत्यप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १८ आत्मप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 १९ कमप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 २० प्रथारयानप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 २१ विद्याप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 २२ कल्याणप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 २३ प्राणायामप्रवादपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 २४ क्रियापिशालपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥  
 २५ त्रेकत्रिदुसारपुत्रपटनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥

आधीरीते पत्नीस नमस्कार करे । उभा वन ज्ञानथ उससि  
 श्यादि महिने पचवीस लोगम्मनो जाउम्ममा कर । एक लो  
 कहिने पारे । पउ पूरौक करणा करे । गति चतुथ दिउस विधि

॥ अथ पचम दिउम विधि ॥

ॐ ईा नमो लाए सत्साहण वा पदने ० हजार गुणणो ०

साधुपद बाल वर्णनां छे, तर्था अट्ठदत्तुं आपिल करे । सर्व साधुपद  
नत्तारीम गुण चिन्तविने नमस्कार कर ॥

## ॥ साधुपदना २७ गुण ॥

- १ प्राणतिपातविरमणप्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- २ मृयाघादविरमणप्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ३ अदत्तादान विरमणप्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ४ मैथुनविरमण प्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ५ पविग्रहविरमणप्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ६ रात्रिभोजनविरमणप्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- ७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- ८ अकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- ९ तेजकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १० वायुकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- ११ घनस्पतिकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १२ ब्रह्मकायरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १३ पंचद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १४ अद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १५ तेजद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १६ वायुद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १७ पंचद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नम ॥
- १८ लोमादिनिग्रहकारकाय श्रीसाधवे नमः ॥
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- २० शुभभावनाभावकाय श्रीसाधवे नम ॥
- २१ प्रतिलेपनादिश्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नम ॥
- २२ स्वयमयोगयुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- २३ मनोगुणियुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥
- २४ वचनगुणिकाय श्रीसाधवे नम ॥
- २५ वायुगुणियुक्ताय श्रीसाधवे नम ॥

२६ शीतादिद्वात्रिंशतिपरिपद्धसहनत्तराय० धीमाद्यत्रे नम ॥

२७ मरणातउपमगसहनत्तराय श्रीसाद्यत्रे नम ॥

॥ आशीरीत सत्ताजीम नमस्कार कर । उभा धेने अन्नत्य ऊम  
सिण्ण इत्यादि कहीने सत्ताजीम लागसननो काउहसग्ग करे । एव  
लोगस्य कहिन पार । पठे पूजात्त करणी करे । आ पद्य परमेष्टि  
पदना स्वय गुण मलाचार्या १०८ वाय । तेथी ताक धालीपीमाळना  
दाणा ( १०८ ) धाय छे ॥ इति पत्रम दिवस विधि ॥

## ॥ अथ पष्ठ दिवस विधि ॥

॥ ' ॐ ह्रीं णमो =मणस्व वा पदना २ हजार गुणणा गप  
दशनपद सकेन छे तमी माननु जाविल करे । सम्यक्त्वना सडसठ  
गुण चितन नमस्कार करे ॥

## ॥ सम्यक्तना-दर्शनपदना सडसठ भेद ॥

१ परमाथमस्तयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

२ परमाथगावृत्सेवनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

३ वापशदशनजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

४ कुदशनजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

५ पुधुपारूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

६ धमरागरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

७ धैयावृत्त्यरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

८ अर्हठिनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

९ सिद्धाग्नियरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

१० चैत्यविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

११ श्रुतविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

१२ धर्मविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

१३ साधुवर्णविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

१४ आचार्यविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

१५ उपाध्यायविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

१६ प्रवचनविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

- १७ दशमगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 १८ सप्तमे जिनसारमिति चितनरूपसश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 १९ सप्तमे चिनमतेसारमिति चितनरूपसश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २० सप्तमे जिनमतेस्थितस्वार्थादिसारमिति चितन रूपश्रीसद्-  
 शनाय नमः ॥  
 २१ शंखादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २२ काश्यादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २३ शिवादिस्मारुपदूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २४ वेदादिप्रदर्शादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २५ नेत्यदिचयदूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २६ धर्मप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २७ धर्मप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २८ धादिप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 २९ नैमित्तिकप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३० तपस्विप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३१ प्रसङ्गादिप्रियाभूत्प्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३२ चुर्णाजनादिसिद्धप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३३ शक्तिप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३४ जिनशासने कौशल्यभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३५ प्रभावनाभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३६ तीर्थसंघाभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३७ धैर्यभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३८ चित्तशासने भक्तिभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ३९ उपशमगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४० स्वदमगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४१ निर्द्वेषगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४२ अनुत्पागुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४३ आस्तिक्यगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥

- ४४ परतीर्थकादिवन्दनयजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः  
 ४५ परतीर्थकादिनमस्कारयजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४६ परतीर्थकादिबालापयजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४७ परतीर्थकादिमलापयजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४८ परतीर्थकादिजशनादिदानवयजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ४९ परतीर्थकादिगन्धपुष्पादिप्रेषणयजनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ५० राजामियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 १ गणामियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ५१ यगामियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ५२ सुरामियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ५३ कानारवृत्त्याकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ५४ गुणानिप्रहाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥  
 ५५ सम्यक्त्वं चाग्निधर्मस्य मुलमिति त्रि० श्रीस० ॥  
 ५६ सम्यक्त्वं धर्मपुंस्य द्वागमिति त्रि० श्रीस० ॥  
 ५७ सम्यक्त्वं धर्मस्य प्रतिष्ठानामिति त्रि० श्रीस० ॥  
 ५८ सम्यक्त्वं धर्मस्याधारमिति त्रि० श्रीस० ॥  
 ५९ सम्यक्त्वं धर्मस्य भावनामिति त्रि० श्रीस० ॥  
 ६० सम्यक्त्य धर्मस्य निधिसानिभामिति त्रि० श्री० ॥  
 ६१ अन्तिजीव इति श्रद्धास्थानयुक्तश्री सद्दर्शनाय० ॥  
 ६२ म च जीवा निय इति श्रद्धास्थानयुक्तश्री० ॥  
 ६३ स च जीव कृतकमाणि वेदयतीति श्रद्धास्थानयुक्तश्री सद्दर्शनाय नमः ॥  
 ६४ स च जीव कृतकमाणि वेदयतीति श्रद्धास्थानयुक्तश्री सद्दर्शनाय नमः ॥  
 ६५ जीवस्यमिति निराणामिति श्रद्धास्थानयुक्त० ॥  
 ६६ अन्ति इति श्रद्धास्थानयुक्त० ॥  
 ६७ अन्ति इति श्रद्धास्थानयुक्त० ॥  
 ६८ उमा धने अन्नस्य ऊसासि  
 काउम्माग करे । एकं लोगसस  
 करे

## ॥ अथ सप्तम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो नाणस्म' आ फट् नो २ हकार गुणणो गणे ॥  
 ज्ञानपद उग्वल यण छ तथा मातनुं थाविठ फेटे । इफायन भेट  
 ज्ञानपदना चितपिने नमस्कार करे ॥

## ॥ अथ ज्ञानपदना ५१ भेट ॥

- १ स्पर्शनैर्द्रिययज्जनायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनैर्द्रियेष्वज्जनायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणैर्द्रिययज्जनायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रैर्द्रिययज्जनायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ५ स्पर्शनैर्द्रिययथायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ६ रसनैर्द्रिययथायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ७ घ्राणैर्द्रिययथायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ८ चक्षुरिन्द्रिययथायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ९ श्रोत्रैर्द्रिययथायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- १० मनोऽप्यायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- ११ स्पर्शनैर्द्रियैर्हामतिज्ञानाय नमः ॥
- १२ रसनैर्द्रियैर्हामतिज्ञानाय नमः ॥
- १३ घ्राणैर्द्रियैर्हामतिज्ञानाय नमः ॥
- १४ चक्षुरिन्द्रियैर्हामतिज्ञानाय नमः ॥
- १५ श्रोत्रैर्द्रियैर्हामतिज्ञानाय नमः ॥
- १६ मनोऽप्यायप्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
- १७ स्पर्शनैर्द्रिययथायमतिज्ञानाय नमः ॥
- १८ रसनैर्द्रिययथायमतिज्ञानाय नमः ॥
- १९ घ्राणैर्द्रिययथायमतिज्ञानाय नमः ॥
- २० चक्षुरिन्द्रिययथायमतिज्ञानाय नमः ॥
- २१ श्रोत्रैर्द्रिययथायमतिज्ञानाय नमः ॥
- २२ मनोऽप्यायमतिज्ञानाय नमः ॥
- २३ स्पर्शनैर्द्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥



- २५ रसनैन्द्रियधारणामतिज्ञानाय नम ॥  
 २६ घ्राणैन्द्रियधारणामतिज्ञानाय नम ॥  
 २७ स्पर्शैन्द्रियधारणामतिज्ञानाय नम ॥  
 २८ श्रोत्रैन्द्रियधारणामतिज्ञानाय नम ॥  
 २९ मनाधारणामतिज्ञानाय नम ॥  
 ३० अक्षरश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३१ अक्षरश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३२ सक्षिश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३३ असक्षिश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३४ सम्यग्श्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३५ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३६ साक्षिश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३७ अनादिश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३८ स्वपथवसितश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३९ अपथवसितश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ४० गमितश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ४१ भगामिरुथतज्ञानाय नम ॥  
 ४२ जंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ४३ अनगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ४४ अनुगामिअवधिज्ञानाय नम ॥  
 ४५ अननुगामिअवधिज्ञानाय नम ॥  
 ४६ वधमानअवधिज्ञानाय नम ॥  
 ४७ हीयमानअवधिज्ञानाय नम ॥  
 ४८ प्रतिपातिअवधिज्ञानाय नम ॥  
 ४९ अप्रतिपातिअवधिज्ञानाय नम ॥  
 ५० रुजुमतिमन पर्यवज्ञानाय नम ॥  
 ५१ लिपुलमतिमन पर्यवज्ञानाय नम ॥  
 ५२ लोफालकप्रमादार्थविलक्षणाय नम ॥

इत्यादि षडे । ५१ लोगस्वनो फाडसग करे द्रगट लोगस्त षडे ।  
पडे मत्र पूर्वोक्त करणी करे । इति सप्तम दिवस विधि ॥ ७ ॥

## ॥ अथ अष्टम दिवस विधि ॥

॥ ' ॐ ह्रीं नमोच्चारितस्म ' आ पत्नो २ हजार गुणजो गणे ।  
चारित्रपदनो उज्ज्वल घण छे, तेथी भातनु धाविल करे । स्त्रितरे २  
भेद चारित्रपदन, चितचिने नमस्कार करे ॥

## ॥ अथ चारित्रपदना ७० भेद ॥

- १ प्राणानिपातविरमणरूपचारित्राय नम ॥
- २ मृयात्रादविरमणरूपचारित्राय नम ॥
- ३ अदृत्ताग्निविरमणरूपचारित्राय नम ॥
- ४ मधुनविरमणरूपचारित्राय नम ॥
- ५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नम ॥
- ६ श्वाधमरूपचारित्राय नम ॥
- ७ जार्जधमरूपचारित्राय नम ॥
- ८ मृदुताधमरूपचारित्राय नम ॥
- ९ मुक्तिधमरूपचारित्राय नम ॥
- १० तपोधमरूपचारित्राय नम ॥
- ११ सयमधमरूपचारित्राय नम ॥
- १२ सत्यधमरूपचारित्राय नम ॥
- १३ शौचधमरूपचारित्राय नम ॥
- १४ अविचनधमरूपचारित्राय नम ॥
- १५ वम धमरूपचारित्राय नम ॥
- १६ पृथ्वीरक्षासयमचारित्राय नम ॥
- १७ उदकरश्वासयमचारित्राय नम ॥
- १८ तेउरक्षासयमचारित्राय नम ॥
- १९ घाउंग्रामयमचारित्रायनम ॥
- २० वनम्पातिरक्षासयमचारित्राय नम ॥
- २१ वेद्वियरक्षासयमचारित्राय नमः ॥

- २२ तैश्चन्द्रियरक्षासंयमचारित्राय नम ॥  
 २३ चौरिन्द्रियरक्षासंयमचारित्राय नम ॥  
 २४ पैत्रैन्द्रियरक्षासंयमचारित्राय नम ॥  
 २५ अर्जाय रक्षासंयमचारित्राय नम ॥  
 २६ प्रेक्षासंयमचारित्राय नम ॥  
 २७ अनुपेक्षासंयमचारित्राय नम ॥  
 २८ अनिरिक्तचम्पभक्तादिपरतण प्रागरूपसंयम ॥  
 २९ प्रमाजनरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३० मन संयमचारित्राय नम ॥  
 ३१ याष्टसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३२ षायासंयमचारित्राय नम ॥  
 ३३ आचार्यवेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३४ उपाध्यायवेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३५ तपस्विनेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३६ लघुशिष्यादिर्वेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३७ ग्लानिसाधुर्वेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३८ साधुष्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ३९ श्रमणापासकवेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ४० सत्वेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ४१ कुलवेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ४२ गणवेद्यातृत्वरूपसंयमचारित्राय नम ॥  
 ४३ पञ्चपटगादि रदितप्रसन्निसनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय ॥  
 ४४ स्त्रीदास्यादिविस्थावजनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय ॥  
 ४५ स्त्रीआसनवर्जनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय नम ॥  
 ४६ रत्नभंगोपागनिरीक्षणवजनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय ॥  
 ४७ कुट्टन्तरन्धिनस्त्रीदायभाष्यवजनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय ॥  
 ४८ पूर्वस्त्रीभंगोपागचित्तवजनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय नम ॥  
 ४९ अतिसरम्भाहारवजनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय नम ॥  
 ५० अतिभाहारवजनप्रह्लागुणित्वाचारित्राय नम ॥

- ७१ अगविभूपावजनग्रहागुतिचारित्राय नम ॥  
 ७२ अनशनतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ७३ ऊनोदरीतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ७४ वृत्तिसंश्लेषतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ७५ रसत्यागतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ७६ कायकलेशतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ७७ सलेखनातपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ७८ प्रायश्चित्ततपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ७९ विनयतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ८० धेयावद्यतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ८१ सत्यायतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ८२ ध्यानतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ८३ उपसर्गतपोरूपचारित्राय नम ॥  
 ८४ अनतज्ञानसयुक्तचारित्राय नम ॥  
 ८५ अनतदर्शनसयुक्तचारित्राय नम ॥  
 ८६ अनतचारित्रसंयुक्तचारित्राय नम ॥  
 ८७ मोघनिग्रहकरणचारित्राय नम ॥  
 ८८ माननिग्रहकरणचारित्राय नम ॥  
 ८९ मायानिग्रहकरणचारित्राय नम ॥  
 ९० लोभनिग्रहकरणचारित्राय नम ॥

॥ आवि रीते ७० नमस्कार करे । उभा चैने अग्रत्य  
 ऊसन्निपण० इत्यादि कहे । ७० लोगस्सनो षाडस्सग्ग करे  
 एक लोगस्स प्रगट कहे । पछे पूर्वोक्त करणी बधी करे । इति अष्टम  
 दिवस विधि ॥

## ॥ अथ नवम दिवस विधि ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो तवस्स आ पदनो २ हजार गुणणो गणे ।  
 तपपदनो उज्जवल वण छे तेथी भातनु आविल करे । पचास भेद  
 तपपदना धितविने नमस्कार करे ॥

## ॥ अथ तपपदना ५० भेद ॥

- १ यात्रत्यथिततपसे नम ॥
- २ इतरतपोभेदतपसे नम ॥
- ३ यात्रऊनोदरीतपोभेदतपसे नम ॥
- ४ अभ्यतरऊनादरीतपोभेदतपसे नम ॥
- ५ द्रव्यतपोवृत्तिसश्रेयतपोभेदतपसे नम ॥
- ६ क्षत्रतपोवृत्तिसश्रेयतपोभेदतपसे नम ॥
- ७ काठतपोवृत्तिसश्रेयतपोभेदतपसे नम ॥
- ८ भारतपोवृत्तिसश्रेयतपोभेदतपसे नम ॥
- ९ कायकेशतपोभेदतपसे नम ॥
- १० रसत्यागतपोभेदतपसे नम ॥
- ११ इन्द्रियकषाययागत्रियसलीनतातपसे नम ॥
- १२ स्त्रीपुण्ड्रकादिवर्जितस्थानभवस्थितसलीनता०तपसे नम
- १३ आलायणप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- १४ षड्विंशमणप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- १५ मित्रप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- १६ विरुद्रप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- १७ उपमगप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- १८ तप प्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- १९ छेदप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- २० मूत्रप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- २१ अनघस्थितप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- २२ पावत्रियप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
- २३ ज्ञानविनयरूपतपसे नम ॥
- २४ दशनविनयरूपतपसे नम ॥
- २५ चारित्र्यविनयरूपतपसे नम ॥
- २६ शुश्रूषादिमनोत्रियरूपतपसे नम ॥
- २७ घनविनयरूपतपसे नम ॥
- २८ कायविनयरूपतपसे नम ॥

- २९ उपचारकथित्यरूपतपसे नमः ॥  
 ३० आचार्यवेद्यावद्यतपसे नमः ॥  
 ३१ उपाध्यायवेद्यावद्यतपसे नमः ॥  
 ३२ साधुवेद्यावद्यतपसे नमः ॥  
 ३३ तपस्विवेद्यावद्यतपसे नमः ॥  
 ३४ लघुशिष्यादिवेद्यावद्यतपसे नमः ॥  
 ३ ग्लान्नाधुवेद्यावद्यतपसे नमः ॥  
 ३६ श्रमणोपासनत्रयेयावद्यतपसे नमः ॥  
 ३७ सत्रयेयावद्यतपसे नमः ॥  
 ३८ कुशत्रयेयावद्यतपसे नमः ॥  
 ३९ गणत्रयेयावद्यतपसे नमः ॥  
 ४० धायणातपसे नमः ॥  
 ४१ पृच्छानानतपसे नमः ॥  
 ४२ पण्यत्तनानतपसे नमः ॥  
 ४३ अनुश्रेयानतपसे नमः ॥  
 ४४ धमकथानतपसे नमः ॥  
 ४ आत्तध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥  
 ४६ राट्रध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥  
 ४७ धमध्यानचित्तनतपसे नमः ॥  
 ४८ शुक्लध्यानचित्तनतपसे नमः ॥  
 ४९ चाक्षुषतपसर्गतपसे नमः ॥  
 ५० अभ्यतरतपसर्गतपसे नमः ॥

॥ आर्या रीते १० नमस्कार करे । उभा श्रेणे अग्रत्य ऊससिष्ण०  
 इत्यादि कहे । १० लोगस्सनो फाडस्सग करे प्रगट एक लोगस्स  
 कहे । पठे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति नमस दिवस विधि ॥

## नवपदओलीनी विधि

प्रथम आसोपुदी ७ सातम थी मथना चैत्रशुदी ७ थी शरु करे  
 तीया तुडेली हायता छड थी शरु करे, आउल नय पुनम सुधी पूण

કરે, પેલા સચારના ઉટીને રાય પડિમમણુ તથા ' કપડા વિગેરેની પડિલેહણ કરે, પછે ભૂમિ શુદ્ધ કરો ધાજોડ ઉપર " નવપદ સિદ્ધ ચમ્રયન્ત્ર ' ની સ્થાપના કરે તેના સામ પાચ નમુત્યુણ થી દયવદન કરે, પછે સિદ્ધચમ્રના નવ ધૈત્યપદા, કર, જેનીપાસે ' નવપદ સિદ્ધ ચમ્રયન્ત્ર ' ન હોય તેણ નવ મદિર અથવા એક મદિરમા નવ ધૈય ધદન કરયા, સિદ્ધ ચમ્રયન્ત્રની ઘાસ ક્ષેપથી પૂજા કરથી, પછે સ્નાન કરીને શુદ્ધ ઘસ્ર પહેરો તિગડાની ઉપર મદિરમા આદિશ્વર ભગવાનની પ્રતિમા સ્થાપન કરથી તેની પાસે ' નવપદ સિદ્ધ ચમ્રયન્ત્ર ' મુકીને આત્ર મળાવે, તથા નવપદજીની લઘુપૂજા મળાવે, કરે, પછે જ જે પદના જટલા ગ્રમાલમળા હોય તથા તેટલી ન કરી ( પ્રદક્ષિણા ) કરે તથા તેટલાજ સાથિયા, તેટલાજ કર, મુકે, પછ જ જે પદ હોય તેને આરાધવાનિમિત્ત કાઠમગ્ગ જટગ લોગસનો હોય તેટલો કરે, પછે નવકારવાલી પદ પદની ધીસ ધીમ રોજગણે જે જ પદનો જયા યણ હોય તવા તેવા ઘર્ણનુ આપિલ યે દ્રવ્ય થી અર્ચાત્ એક અનામ્મ ની એક ઘસ્તુ, તથા પાળી, આયેઘસ્તુતું આયલ નુ પચ્છાણકર, પછ મધ્યાહ્ના દેવધદન કરી ને પછ પચ્છાણ પારીને પછે આશેલ કરે, અને ત્યારવાદ આવેલ કરીને એયવદન કરે પછ નિવિહારનુ પચ્છાણકર, અથવા ચૌવિહારનુ પચ્છાણ કર, ત્યારવાદ તીજાપહોરે પડિલેહણ કરે, તથા સાજના દેવ ઘાઘા પછ મદિરમા જઈ ધૂપ પૂજા આરાતિ મગલ, દીયો કરે પછે ઉપાશ્રય જઈને પડિકમણુ કરે, પહોર રાત્રિ ગયા પછે સથાત્ પારસી મળાવથી અને ભૂમિશયન-સંચારા ઉપર સુષુ

તથા નવમા દિવસ વિશેષ નવપદજીની મોટી પૂજા અને મડલની પૂજા વિધિ ઠલેલ પ્રમાણે કરે

નવપદની એલી ધૂળ થયે ઉદ્યાપન કરશુ તેની વિધિ વિસ્તારથી થીપાલ ચરિત્ર માથી જાણથી, અથવા શુદ્ધ મુલે જાણથી, અને યથા શક્તિ ઉજમણુ કરશુ

## मादिर जवानीविधि तथा पूजनविधि

प्रथम धावके बेचार घडी रात धाकी रहे त्यारे उठे, प्रथम मनमा उठताज नयकार मंत्रनु स्मरण करे हु कोण ? मारी जाती कोण ? मारु कर्तव्य शुं ? मारो धम शुं ? इत्यादिक धर्म जागरणयी मनने सावचेत करे, पछे मलमूत्रनी धाधा दूर करी भग पवित्र करी, सामायक प्रतिक्रमण करीने विधि साहित घट्टेरातरनी पूजा करे, पछे यथा शक्ति, सारावत्त्र धाभूयण पहरी, पोताना पगियार तथा श्रधि साथे पूजा योग्य फल फूल नैवेद्य उत्तम द्रव्य हाथमा लाने भय जीरीने मात्रमार्ग यथावता, तथा जैन शासननी प्रभावना कर ता निनमदिरे जाय, निनमदिरेमा प्रवेदा करता दशश्रिक साचरे ते दशश्रिक पहिलु श्रिक व्रण निस्सहि करवानी, तेमा पेलीनि स्सिही जिनमदिरेमा पेसता करे पीछे ससार घर सयंधी काइपण कार्यविचारणा न कर ॥ १ ॥ धीनी निस्सिही प्रदधिणा व्रण आपे । जिनमदोरमा तुटेल फुटेल फुटाट्टा टांक करवानी सार समाल राबेली हती ते पण छोडे । अहिया द्रव्यपूजानी करणी छुटी रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सिही कहिने नि वेज भावपूजा करे, पण द्रव्यपूजा न करे । आ प्रथम निस्सिही निक कह्यु ॥

धीनी श्रिक शानत्रिकनी आराधना करवाने प्रभुता जमणी तर करी तीन तीन प्रदधिणा आपे । तीजु श्रिक मूलनायकजीना त्रिपुनी सन्मुखे पचाग भेगा करीन तणवार नमस्कार करे ॥ ६ ॥ चौतु श्रिक । प्रभुनी अंग १ अत्र २ भाग ३ त्रिविध प्रकारनी पूजा करे हने निस्सिही कया पछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधिमाक्षित लखे छे । निस्सिही कहा पाछे मनोगुति, वचनगुति, धायगुनि करिने युक्त रहे । पाचो इद्रियाने वशमा राखे । गमनागमनमें उपयोगी रहे । गानविगेर अन्यनु सामली चित्तमा व्याकुलता राखे । कोइपण देव कायने छोडीने अन्य कायनी विचारणा न करे । रात्रकयादि सपूर्ण विख्या छोडे । जम अने कर्मना अनुगत वचन न थोठे, अयात् कोइना मातापितादिकना करेला खोग फामने प्रगट न



करे । तथा क्षमानुगत घटा वाधलाने आधरले गोलो गोल  
 इत्यादि चवन न था । निस्मिणे क्या पीछ जिनमदिरमा धर्म  
 सयुक्त, आग्निदितकरी, प्रमाणापत घटन घोटु जोरए जयी मन,  
 यचन, कायार्थी श्वादा व्यापारना जन्ध आपणी आमाधी कयो  
 छे तेना भावधी निस्मिही दाय । थन जेणे दुखणनो त्याग न कयो  
 होय तेन केवल शब्द उच्चारण मात्र द्रव्य निस्सिही दाय, तयो  
 पूजा योग्य उत्तम घटन पहेरिने, नाठ घटना उच्चल घटनयी  
 मुखफोश घाधे । धुपादिकयी थन आपणु शुद्ध कर । भावयी रीती  
 निस्सिही करे मूत्र गभारामा प्रवश करे । जयणा संयुक्त पूजा  
 करे । पूजा करता शरीरमा राज न गृणे, खेल गगार न करे  
 नि कपल भगवाननी स्तयनामा चिन्त राग । प्रथम सुगंध युक्त जल  
 पचामृतयी स्र न करे । सुकुमार सार, कामल सुगंध युक्त चतुर्थी  
 भगवाननु अग रहे । कपूर, कन्धूरी मिश्रित शुद्ध केशर चदननु  
 त्रिलपन करे । शुभ घण, शुभ गंध युक्त जीवादि रहित निदोष  
 गुलार चपा, चपली, केचडा जाइ मागगादिन पुष्पयी पूजा करे ।  
 अष्टम धूप अगवती उपाय । मगलदीप कर । थपड उज्वल  
 अक्षतयी प्रभुना समुप अष्ट मगलिक लये । दर्पण १ भद्रामन २  
 घघमान शरावसपुट ३ धीवत्स ४ मस्ययुग ५ कलश ६ श्वतिक ७  
 नन्वर्त ८ आर्यी अष्ट मगलना रचना कर । पच घण फूलोथी अष्ट  
 मगलीकना पूजा करे । मुद्गर कुकुम मिश्रित चदनयी घापा दे ।  
 उत्तम नयेच चढाये । सार माघ कल चढावे । इत्यादि पूजानी  
 विधि आरती पर्यंत रायपसेणी, शानाधमकथा जीवाभिगमादि  
 सिद्धातोथी लक्षी छे ते भुजय करे जयी । पछ अतरग भक्तियी  
 प्रभुना समुख नाटक करे । जेयी रीते देवेंद्र दानवेंद्र, नारद घगेरे  
 तथा उदायी राजानी राणी प्रभावतीये उपदीये नाटक कयु । थने  
 रात्रण प्रमुप केटला जीवोप अष्टापदक उपर नाटक करिने तीर्थकर  
 गोत्र उपाजन कयु तेयी रीते प्रभुना समुप, शका रहित थने  
 उत्तम पुण्य नाटक कर ॥

॥ हवे जल चदन पुष्पादिकयी पूजा कर ते अंग पूजा ( १

प्रभुना समुख नैवेद्य प्रमुख चढावे ते अग्रपूजा (२) । प्रभुना  
 समुख शक्रस्तथादी गीत गान नाटकादिक करे ते भागपूजा (३) ।  
 आ द्रव्य पूजानी विचार गमित चोयु त्रिक कह्यु । हवे पाचमा  
 त्रिक । तीन अग्न्या विचारवी । पिंडस्थ १ पदस्थ २, रूपानीत ३ ।  
 आमा पिंडस्थ अग्न्याना प्रण भेद । जमावस्था ( १ ) राज्यावस्था  
 ( २ ) ध्रमणावस्था ( ३ ) । अने केशली अग्न्याने विचारवी ते  
 पत्न्य अवस्था । निरजनाकार न सिद्धाग्न्या । तेने रूपानीत अवस्था  
 कहे छे । हवे छठु त्रिक तीन दिशा छोटिने प्रभुनी सामने नजर  
 राखे । ऊर्ध्व १ अधो २, तिरछी ३, डावी जमणी तरफ नजर न  
 करवी । हवे सातमु त्रिक । तीन चार भूमि प्रमार्जिने ते पराग्रे  
 चैत्यगदन करे । हवे आठमु त्रिक । वर्णादिक तीन सपदाना अक्षर  
 शुद्ध उच्चारण करे वर्ण शुद्धि ( १ ) । अक्षरोना अथ उपर आळगन  
 राखे ते अर्थशुद्धि ( २ ) । आलवन एक जिनप्रतिमानु राखे ते मन  
 शुद्धि ( ३ ) । हवे नवमु त्रिक । प्रण मुद्रा करवी । जोगमुद्रा ( १ )  
 जिनमुद्रा ( २ ) मुक्तागुत्तिमुद्रा ( ३ ) । आमा जोगमुद्रा कोनेके छे ।  
 पद्मकाशाकारे उभे हाथनी परस्पर आगली मलायत्री ए जोगमुद्राए  
 चक्रस्तगन कहे ( १ ) । काउस्सगमुद्रा ते जिनमुद्रा ( २ ) ।  
 अने त धे सीपनु जोड ते आरारे हाथ राखवो ते मुक्तागुत्तिमुद्रा ( ३ )  
 आ मुद्राया प्रणिधान जय घायराय इत्यादि कर । हवे दशमु त्रिक ।  
 प्रणिधान तीन । जिनवदन प्रणिधान ( १ ) मुनिवदन प्रणिधान ( २ )  
 प्रार्थना प्रणिधान ( ३ ) । आमा जे “ जायती चेहमाइ इह सतो  
 तथ सनाइ ” सुधी जिनगन प्रणिधान ( १ ) “ जायत केपि  
 माह ” इत्यादि तिविहेण निदडविरथाण इहा सुधी मुनिवदन प्रणि  
 धान ( २ ) जय घीपरायथी लहने आभवमपडा सुधी प्रार्थना  
 रूप प्राणिधान ( ३ ) । आधी रीते दश त्रिकनु पहेंतु द्वार कह्यु हए  
 पाच अभिगम साचगार्तु घीजु द्वार कहे छे ॥ सचित्त द्रव्य  
 कुमुमादिक आपणी पासे होय तेने अलग मुक्चा ( १ ) अने राज  
 चिह मुगट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका अचित्त वस्तु छोडवी ।  
 आभूषण प्रमुख पहरेला राखवा ( २ ) मन एकाम्न करवु ( ३ ) एए

एह उचरसंग करयु ( ४ ) जितिय दगताज ' नमो भुवणत्रधुणो ' एयो नमस्कार करयो ( ५ ) ए बाजु द्वार कहयु ॥ इय तीजु द्वार यो दिशितु । पुरुष जमणी दिशा बैठा भगवतने घादे र्नीयो डायी दिशा बैठा भगवतने याद । इये चायु द्वार तीन अभिग्रह । अभी ग्रह देव घादणामा कहयु छे । जघय नय हाय दूर बैठा देव घाद ( १ ) । मध्यम नय हाथथी उपरात येर्नीने देव घादे ( २ ) । उत्पष्ट ६० हाय दूर बैसीने देव घादे ( ३ ) इये पाचमु द्वार चैत्यवदननु । ते जघय ? मध्यम २ उत्पष्ट ३ आश्रण भेद छे । तिहा णमो अरिहं ताण इत्यादिक कहे घा एक कहिने गाथानो नमस्कार य शन स्तव कहि ए जघन्य चैत्यवदन ( १ ) । जे देववदन मा स्थापना हचैत्यवदन नमुध्यणथी लइने अरिहतचेइयाण इयादिक सपुण कही एक स्तुति कहे ते मध्यम चैत्यवदन । तय फोइ आचार्य कहे पाच दडक सहित गी ४ गाथा, ते मध्यम चैत्यवदन कहे, तथा विधि पूवक शकस्तवादि कथी पाच दडक जयधीयराय सुधी आठ थोथे देव घादे तेने उत्पष्ट चैत्यवदन कहे छे, अने छठु द्वार पचागप्रणि पात ये पग ये हाय, मस्तक, आपचाग मलाविन, जमिनमा लगाइ तथा सातमुं द्वार जघय एक गाथा थी लइने एषसो आठ नमोकी थी प्रभुनी स्तुति-स्तव नाकरे ।

### सधारा पोरमी

निसिही निसिही निसिही । नमो न्यमासमणान गौयमाण महा मुणीण ( आ पाठ तथा नयकार करमिंते सामाइअ प्रणयवत कहेवा )

अणु जाणइ जिठज्जा डिज्जा । अणु जाणइ परमगुरु गुरुगुण रयणेहिं मण्डिय सरारा । बहुपाडेपुन्ना पोरसी, राइय सधाराए ठामि ॥ १ ॥

अणु जाणइ सघार बाहुवहाणेण धामपानेण  
कुक्कुडि पायपसारेण अतरत धमज्जए सुमि ॥ २ ॥  
सकाइ अ सडासा उचट्ट अ कायपडि लहा ।

द्रव्याद् उदय ओग ऊस्तासनिरु भणालोप ॥ ३ ॥  
 जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीप ॥ ३ ॥  
 आहारमुवहिदेई सय्य तिविहेण घोसिरिअं ॥ ४ ॥  
 चत्तारि भगल, अरिहता भगल सिद्धामगल,  
 साहु भगल, केवलपन्नतो धम्मो भगल ॥ ५ ॥  
 चात्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा,  
 सिद्धालोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा,  
 केवलपन्नतो धम्मो लोगुत्तमा ॥ ६ ॥  
 चत्तारि सरण पवज्जामि । अरिह ते मरण पवजामि ।  
 सिद्धे सरणं पवजामि साहु मरण पवज्जामि ।  
 केवलपन्नत धम्म सरण पवज्जामि ॥ ७ ॥  
 पाणाइ धायमलिअ चोविअ मेहुण दधिणमुच्छ ।  
 फोह माण माय लाम पिज्जं तद्दादास ॥ ८ ॥  
 कलह अम्मदखाण, पेसुअ रइ अरइ समाउत  
 परपरिवाय मायामास मिच्छत्त मल च ॥ ९ ॥  
 घोमिरिसु इमाइ मुअअमग्गससग्गाधिग्धभू आइ ।  
 दुग्गइ निअधणाइ, अट्टारस पाउठाणाइ ॥ १० ॥  
 एगोई नाथि मे फोइ नाहमअस्स कस्सइ ।  
 एव अदीणमणम्मो अप्पाण मणु सासइ ॥ ११ ॥  
 एगो मे सास आ अप्पा नाणदसणसजुत्तो ।  
 सेसा मे याहिआ भाया सवे सजोग लक्खणा ॥ १२ ॥  
 सजोग मूला जीवेण पत्ता दुअअ परपरा ।  
 तम्हा सजोग सअअ सय्य तिविहेण घोसिरि अं ॥ १३ ॥  
 अरिहतो मह देवो जावज्जीय सुत्ताणो गुरुणो ।  
 जिणपन्नत तत्त इ अ सम्भन, मए गहिअ ॥ १४ ॥  
 खमि अअमाधि अ मइ एमिअ सअइ जाय निकाय ।  
 सिद्ध साग्य आलोयणह मुज्जह घरर नभाय ॥ १५ ॥  
 सये जीवा कम्मघस चउदह राजममत ।  
 तेमे सअ खमावेआ मुज्जवि तेह खमत ॥ १६ ॥

जं ज मणेण पद ज नं घाण्ण भागिभं पाय

न जे वारण वयं मिच्छामिदुक्कट्टे तम्म ॥ १७ ॥

‘ जातिना महत्तेषा आगाया तणवार भर्त्तां सात मयहार  
कहवा पठ भागग गाथा कर्त्तव्या

( आयथिल्लनु पञ्चरत्नगण )

उगण सूर नमुक्कारसद्धिभं पारिसिं सा पारिसिं, मुट्टिसद्धिभं  
पञ्चकहाइ । उगण सूर अउत्थिद्वपि आहारं भरण, पाजे सारमं  
सारम अन्नयणा भोगेण, सहसागारेण पञ्चप्रकाशेण, दिसा  
मोद्रेण साहययेण, महत्तरागारेण, स्वयसमादिवसियागारेण, ।  
आयथिल पञ्चरत्नगण । अन्नयणा भोगेण सहसागारेण पञ्चप्रकाशेण,  
गिहत्थसमत्तण, उत्थित्त वियगेण, पारिटागणियागारेण, महत्तरा  
गारेण, स्वयसमादिवसियागारेण पणसण पञ्चरत्नगण । निरिद्वपि  
आहारं भरणं साइमं साइमं अन्नयणाभोगेण सहसागारेण, सागा  
रिया गारेण आउटणपमारेणं गुरु अमुट्टाणण पारिटागणिया गारेण  
महत्तरागारेण स्वयसमादिवसियागारेण पणसणयेणया, अलयेणया,  
अच्छणया, बहुयेणया, ससियेणया, भसियेणया चासिरइ ॥

( आयथिल्ल कपाणउ दिवच्चरिम निविहार नुपञ्चरत्नगण  
करु ते आप्रमाण )

दिवस चरिम पञ्चकहाइ । निविद्वपि आहारं भरणं साइमं,  
साइमं अन्नयणा भोगेण, सहसागारेण महत्तरागारेण, स्वयसमादि-  
वसिया गारेण चासिरइ ॥

( पाणि सुकाय्या पठे पाणदारनु पञ्चरत्नगण करु )

पाणदार दिवस चरिम पञ्चकहाइ । अन्नयणाभोगेण सहसा-  
गारेण महत्तरागारेण स्वयसमादि वसियागारेण चासिरइ ॥

पारणाना दिवसे पणसणु वेसणु करु तेनुपञ्चरत्नगण

उगण सूर नमुक्कारसद्धिभं, पारिसिं साहपोरिसिं, मुट्टिसद्धिभं,  
पञ्चकहाइ उगण सूर, अउत्थिद्वपि आहारं भरण, पाजे सारमं,  
सारमं, अन्नयणाभोगेण, सहसागारेण पञ्चप्रकाशेण, दिसामोद्रेण,  
साहययेण महत्तरा गारेण, स्वयसमादिवसिया गारेण । विगइमो

पञ्चकण्डाह । अक्षयणामोगेण, सहसागारेण, लेघालेण गिहृत्य  
 संसटेण उन्निवतधियेणेण, पदुच्चमन्निष्पण, पाग्निष्ठावणिया गारेण,  
 महनरा गारेण सत्रसमाद्विधत्तियागारेण । एगासण पञ्चकण्डाह ।  
 तिरिहापि आहार, असण, पाइम, साइम, अक्षयणामोगेण, सहसा  
 गारेण, सागारिआ गारेण, आऽटण यसारेण, गुग्गुम्मुट्टाणेण,  
 पारिष्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण सत्रसमाद्विधत्तिया गारण, पा-  
 णसत्तेणेणा, अत्तेणेणा, अट्टेणेणा, बहुलवेग्गणा, सन्धि येणेणा,  
 अम्भियेणवा योसिरइ ।

जो प्रियामणानु पञ्चकण्डाण करवु होय तो ' एकासण ' नाटे  
 काणे प्रियासणु कहेयु ।

### मिद्धचक्र चैत्यउदन

१

सिगिसिद्धचक्र नवपथ महत्तुपठ मिद्धय,  
 मयजिणइ असुरिद्धिचय पयपक्य नाह तुझ नमो ॥ १ ॥  
 सिरि रिसहेन्नर सामिय पण्डाण कप्पनरु,  
 कप्पकण्डपाजण मज्जमज्जण देव तुझ नमो ॥ २ ॥  
 सिरि नामिनाम कुलगर कुलकमल्लहास परमहस,  
 समसम तमतम तमा भर, ह्यणिक्क पच्य तुझ नमो ॥ ३ ॥  
 सिरिमरुदेव सामिणि उदरदरि दरिय केसरि,  
 किसोर घोर भूयदड्ढ अडिय पयड माइस्सतुझ नमो ॥ ४ ॥  
 इफ्फागुणउत्तमूसणगण गय दुसण दुरिय मयगल मइ,  
 चदसमवयणवियानिय निपुल नयण तुझ नमो ॥ ५ ॥  
 कट्टाण कारणु समतत्त कणयकण्ठ सरिस मटाण,  
 कठटिय कलकुंतल निटुपल कालेय तुझ नमो ॥ ६ ॥  
 आइसर जोइसर लयगय मणक्कल लम्बिय सरुणा,  
 भवकुप पडिय जतुनारण जिणनाह तुझ नमो ॥ ७ ॥  
 निगिसिद्धसेल मटण दुहल्लडण रयर राय नयपाय ।  
 सयलमह सिद्धिदाय जिणनायगहोउ तुव नमो ॥ ८ ॥

तुम नमो तुम नमो तुम नमो दय तुम देव नमो ।  
पणय सुर रयण सेहर रहरजिय पाय तुम नमो ॥ ९ ॥

२

नियंत रगादि गण मुयाणे, स्थापादि हेराइ सयपदाण ।  
सदेह संशोहरय हरता शाय, तिच्यपि जिज रहतो ॥ १ ॥  
दुह यन्मायणपमुजे, अणन नागाइ मिरिचउके ।  
समग ललग्ग पयपमिद्ध, शायद निच्यपि मम्मगासिद्ध ॥ २ ॥  
न ते सुह नदि पाया न माया, जदनि जीयाहि सरी नयाया ।  
तमाहु ते जय सया भजेह जं मुग्गन मुक्कणार लहुलदह ॥ ३ ॥  
सुनत्य मवेगमये सुपणं संतीर श्रीरामय विमुपण ।  
पीति ज ते उउ ज्ञायराइ शायद निच्य कयपमाय ॥ ४ ॥  
धेतय द्देतय सुगुतिगुता, सुत्तय सेतो गुण जोगगुता ।  
गयपमाय गयमाह माय, शायद निच्य सुणिरापयाये ॥ ५ ॥  
ज द्यवि कायेसु मद्धानं, स द्मण सयगुणपदानं ।  
कुग्गदी वाही उवपनि जेण, जहायिणेण रमायणेणं ॥ ६ ॥  
नाणपदान नयचमिद्धं, तत्तययोहीइ मयं पमिद्ध ।  
धरहे जित्तयमय पुरीनं, माणिजादिमाय तमो हरत ॥ ७ ॥  
सुमेयर मोहनिरौ धसाई, पयपशां विगमाइयारं ।  
मूलोतराणण गुण पाथित पालह निच्यपि हु सच्चरित ॥ ८ ॥  
वज्जं तां भितर भेयमेय कयाय दुग्गेव कुग्गममेयं ।  
दुक्खमयस्थे कयपावनांस, तजण दाहागमय विराम ॥ ९ ॥  
पयाइ जे केवि नयापयाइ, आराहयसिद्धफलपयाइ ।  
तद्वंति त सुक्खपरंपराणं सिंरिं मिरिपाल मरमत्तं ॥ १० ॥

स्तवन

१

केशर धरणहो के काढकुमुंया महाया लाल पदेदी  
गोयमनाणी हो, के कदे सुणी प्राणी महाराजाल । जिनयर धाणी  
हो, के दियडं वाणी । मा० । आसो मासे हो के गुरुने पास मा० ।

नवपद प्राप्त हो, के भग उद्दामे मा० ॥ १ ॥ आयिल कीजे हो, क  
 जिन पूत्रिजे मा० जापनपीजे हो, के देवयादिजे मा० । भाय नामाची  
 हो, क सिद्धचक्र ध्याया मा० जिनगुणगायो हो, क शिवसुखपायो  
 मा० ॥ २ ॥ श्री धीपाले हो, के मयणा घाले मा० । ध्यान रसाल हो,  
 क धन टाल, मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यायो हो, के रोग नमायो मा०  
 नवपद पायो हो, क नवपद पायो मा० ॥ ३ ॥ मामनी भोली हो,  
 क लगी पटाली, मा० सहाय रटोली हो, के कुंकूमघोली मा० ।  
 यन्त्रवाली हो, के जिनवरखोली मा० ॥ ४ ॥ पूजा प्रणमी हो, के  
 होत्र माली मा० श्रेष्ठे आत्मा हो के मनन उद्दामे, मा० नवपद  
 पायो, के शीतसुख पासे मा० । उत्तम सागर हो, के पंडितराया  
 मा० सयकवाते हो, के बहुसुखपाया मा० ॥ ५ ॥

०

अहो मधि प्राणारे सेयो, सिद्ध चक्रध्यान समो नही मयो अहो०  
 न कार सिद्ध चक्र ने आराधे, तेहनो जगमाहि जशवाधे । अहो०  
 ॥ पहिल पदे अशुद्ध, कीजे सिद्धपुष्ट ध्यानमहत । तीजे पदे रे  
 मुरीश, चौथे उद्योगाये ने पाचमे मुनीश । अहो० ॥ २ ॥ छठे  
 रक्षणर कीजे, सातमे धानर्या शिवसुखलीने । आठमे चारित्र  
 गालो, नवमे तपयी मुक्तिमागे । अहो ॥ ३ ॥ आवेल भोलि रे  
 कीजे, नांकारवाली यीशगिजी । त्रणे टकरारे देयो, पडिलेहण  
 डिक्कमण्ड सेयो ॥ अहो० ॥ ४ ॥ गुरुमुख मियारे कीजे, देवगुरु  
 मक्ति चिन्तमा धरी जे । पम कहे रामनारे शिशो घली उन्निय  
 मगीशो ॥ अहो ॥ ५ ॥

### सिद्धचक्र स्तुति

श्रीर जिनेश्वर अति अत्येसर, गौतमगुणना दरियाजी ।  
 एक दिन आणा घोरनी लेहने राजगृहीस धरियाजी ॥  
 मेधिक राजा घन्दन ध्याया, उलटमनमा आणिजी ।  
 अर्धश आगेल वार धिराजे, हये सुणो भाविप्राणिजी ॥ १ ॥  
 शानघ मय तुमे हये पाग्या, श्रीसिद्ध चक्र आराधोजी ।



अरिदंत सिद्ध मूर्ति उयज्जाया, साधुदधी गुणवाधेजी ॥  
 दरदाण नाण चारित्र तपकीने, नयपद् ध्यान परिजे ।  
 धुर आसोथी करवा आविल सुखमपदा पामीनेजी ॥ २ ॥  
 श्रेणिक राय गौनमन पुछ, स्वामी ए तप केणे कि धार्जी ।  
 नय आविठ तप विप्रिगु करता, वाछित सुख केणे लिधोजी ॥  
 मधुरि धनि याल्या श्री गातम, साभला श्रेणिक राय ययणाजी ।  
 रोम गयोने सपदा पाभ्या आ धीशाल ने मयणाजी ॥ ३ ॥  
 रमझुम करनी पाये नेडर दीस दधी कपालीजी ।  
 नाम चक्केसरी नेसिजाह, आविधितवर रमयागीची ॥  
 विघ्नकोड हर मष्टसघना, ज सवे पना पायजी ।  
 भाणाधिजय धवि सउर नय कहे, सानिधकरजा भायजी ॥ ४ ॥

अहंमू प्रकाण्डो तनुनिकरधर मूरिसानध शाल्या ।  
 गुल्म सद्वाचरेशो दलिततिपरिधि साधयो मञ्जरीचित् ॥  
 पुण्याघादशन चाभिमतपरिमलधार चारित्र रूप ।  
 शस्त शस्य तपध्यामरतरुमिभय सिद्धचम पुनातु ॥ १ ॥  
 आप्ता सिद्धा मुनीद्रा प्रवरमुनिवरा साधयो ज्ञानपारा ।  
 वेता रक्ताश्च पीता पुधमम हृदिना वज्रजलाभाजिनेशा ॥  
 चञ्जल्युष्णाप्रप। छत्रिकनकरजवण रेलवधारा ।  
 गीरार्णा गाश्चेष्ट मरुलमति तत पावन सदह तु ॥ २ ॥  
 सराना गूढनेत्रा द्विघ्नवपरिमिता कमनिमूलकाना  
 माचायाणा रमणिय नयमुनि यो वाचकाना मुनीनाम् ॥  
 त्रिंश श सतयुक्ता मुनिवृत्ति सन्तिता नेषसख्या चतुर्णा ।  
 पष्टि रधि खलतीगगन शरमिना सत्गुणीया जयन्ति ॥ ३ ॥  
 देवेद्रा अष्टवर्गो गहगणममहिता गोमुखाद्या परेऽपि ।  
 चम्रेश्वयादि देयोऽपि च कुशलकरा सिद्ध चम्रेय भक्ता ॥  
 श्री श्रीपालादिकानामिभ सुममभृता प्राणिना भक्तिभावा ।  
 श म्वरुक्ष ददतु प्रशमसुप्रकल मुक्तिमौभाषधीचम् ॥ ४ ॥

## आविल तपती सज्जाय

समर्थ श्रुतदेयी शारदा, सरसचचनधर आपे सदा ॥ आविल  
 तपनो माहिमा घणो भाविजन भावथकी ते सुणो ॥ १ ॥ विगय  
 सफलनो जिहा परिहार, अशनमाहि घणो भद्र विचार ॥ विदल  
 सत्र तिल तूररिना अलसी काद्रव कागनी मना ॥ २ ॥ खडधान  
 पाचे दुकट फर सव, घोजय आविलपर्यमा ॥ दोसामण परे जो  
 जलभल तो आविल अरिल रसटल ॥ ३ ॥ विलवण सुठ मरीच न  
 सुवा, मेयी संबल रामठ जुमा ॥ अजमादिर भेला रघाय, तो  
 आविलमा लेयाथाय ॥ ४ ॥ जिरु भले त जेवडा कही, ते सुज पण  
 जीर नही ॥ गोमूत्र थिना छ अगाहार त रवि लेवानो व्ययहार  
 ॥ ५ ॥ सात जाति ते तदुठ तर्णो ते सुजनी आविलमा मर्णा ॥  
 सेक्रेठ धान अपक्की दाल, माडा ग्याचरा लवा टाल ॥ ६ ॥ ह्यदर  
 लविंग पीपर पीपली, ह्यडे संघर घसनजली ॥ घादिम घादिमजे  
 कहेवाय, ते आविलमा नपि लेयाय ॥ ७ ॥ उत्कृष्ट त्रिधे उण जल-  
 नीर, जय यत्रिधे फा जीनु नीर ॥ इम निर दूयण आविल कर, मुष  
 घोरण दातण नपि करे ॥ ८ ॥ जे निरदूयण लिए आहार, ओदनना  
 तेहने यजहार ॥ आटा लिंगट पार्णावतु, तपण-आविलमा सुधनु  
 ॥ ९ ॥ अशठ गीतारथ वणमन्डरी, जे जे ज त्रिधे घाल ते मर्ग ॥  
 लामा लाभत्रिपारे जह, त्रिधे गीतारथ कहिए तेह ॥ १० ॥ आविल  
 तप उरुए कथा, विधन त्रिदारण कारण लक्ष्यो ॥ घाचककीति  
 विजय सुपसाय, भाग्ये त्रिनयत्रिनय उय-हाय ॥ ११ ॥

इति सज्जाय सम्पूर्ण

# जाहिर सूचना

जलदी करो । जलदी करो ।। जलदी करो ।।।

बहेलो ते पेळो पाठलथी पस्तावु पडशे ।

## श्री नवपद सिद्धचक्र यन्त्र.

नवपद ओलीनी आराधना करनाराओने आ यन्त्र अति उप-  
योगी होवार्था हमोए मोडु खर्च करी तैयार करेलछे सातरगोथी  
सुशोभित मनोहर तैयार करेलछे, आ यन्त्र नवपदनी ओली  
आसो चैत्रमा करनारने अति उपयोगी छे कारणके नवपद  
ओलीनी पिधि सम्पूर्ण आ यन्त्र पासेज करवानीछे आ यन्त्रनी  
सामे श्रीपाल महाराजा तथा मयणा सुदरीए आराधन करेछु  
तेथी तेमनो अति कठण कोठनो रोग चाल्यो गयो आ यन्त्र दरे-  
कने अति उपयोगी छे घरदेरासमा तथा श्रीमघना देरा सरमा  
पण राखना जेजुछे, मोटा परिश्रमे सशाधन करेलछे हवे थोडाज  
दीपसमा वार पडशे मूल्य रु. १ पोस्ट अलग

लखो—

मुनिश्रीमोहनलालजी जैन ग्रन्थमाला

जैन स्वयंसेवकमंडल पीपलीवजार

इंदौरसिटी ( माळ्या मध्यभारत )

